# वैश्विक संवाद GLOBAL DIALOGUE

4.4

**14 भाषाओं में एक वर्ष में 4 अंक**

## 65 वर्ष की आई.एस.ए.

मार्गेट एस आर्चर,
टी. के. ओमन,
इमानुअल वालरस्टीन,
अल्बर्टो मार्टिनेली,
पिओटर स्टोम्का,
मिचेल विवोरका

## इटली में श्रम

मिमो पिरोता,
डेवी सच्चेतो,
लुईजा एम. लिओनिनि,
एलेसान्ड्रो गांडिनी

## संकट में विश्वविद्यालय

जोन होमवुड

- लेबनान में सांप्रदायिकता की बदलती स्थिति
- मिस्र के अदृश्य जिप्सी
- फ्रांस में द्विराष्ट्रीय प्रेमी संदेह के घेरे में
- काली छाया से ग्रसित तुर्की
- कजाकिस्तान में जनमत मे जोड़–तोड़
- पृथ्वी ग्रह का भविष्य
- *वैश्विक संवाद* का रोमानियन दल

सूचना पत्र

International Sociological Association

GD
अंक 4 / क्रमांक 4 / दिसम्बर 2014
http://isa-global-dialogue.net

# > सम्पादकीय

## 65 वर्ष की आई.एस.ए.

आई.एस.ए. के जन्म से 65 वर्षों की यात्रा उत्सव मनाने हेतु योकोहामा विश्व कांग्रेस के दौरान अतीत का मुल्यांकन करने और भविष्य की तरफ देखने हेतु पूर्व अध्यक्षों का एक पैनल आयोजित किया गया। उनके मुल्यांकन वैश्विक संवाद के इस अंक में प्रकाशित किये जा रहे हैं। वे अंग्रजी का जनभाषा के रुप में अजेय मार्च का विलाप करते हैं और जिसके खिलाफ वे आशा करते हैं कि सभी द्विभाषी बन जायेगें। कांग्रेस का बढता आकार भी इसी प्रकार अमननीय – कुछ के द्वारा मनाया गया और अन्य के द्वारा प्रश्न किया गया, लगता है। इमानुअल वालरस्टीन 1959 में उनके क्षरा भाग ली गई पहल कांग्रेस, जिसमें उन दिनों के लगभग सभी, उत्तर से, अग्रणी समाजशासत्रियों के मध्य अंतरंग संवाद हुए थे, को याद करते हैं। मार्ग्रेट आर्चर अधिक समावेशी होने को एक अपूर्ण प्रोजेक्ट मानती है। वह शोध समितियों की बढती हुई शक्तियों जिसने आई.एस.ए. को बाल्कनाइज किया है और उसे समाजशास्त्र की व्यापक दृष्टि का विकास करने से रोका है, की आलोचना करती हैं। उनका उभार गहराते पेशेवरकरण का एक हिस्सा है – इम्पैक्ट फैक्ट और प्रदर्शन संकेतकों की दुनियां जिसने और अधिक सतही शोध को तीव्र किया है। और वास्तव में, इस अंक में जान होमवुड शैक्षणिक जगत को घेरने वाली अंकेक्षण संस्कृति में होने वाल नवीनतम कि निंदा करते हैं।

मिशेल विवोरका हाइपर विशेषज्ञता और डिजिटल दुनियां की चुनौतियों को संबोधित करते हैं तो वे इस थीम को उठाते हैं। वह यह भी तर्क देते हैं कि समाजशास्त्रीय शोध को आधुनिक दुनियां में बुराई की शक्ति से नजरअंदाज नहीं करना चाहिए। टी.के.ओमन अंर्तराष्ट्रीय समाजशास्त्र के समक्ष बाधाएँ – राष्ट्र – राज्य पर निरन्तर यद्यपि कालभ्रमिक फोकस की बात करते हैं। वे तर्क देते हैं कि हमें राज्य से राष्ट्र को अलग करना चाहिए और राज्य के उपर–नीचे कार्य कर रही शक्तियों की तरफ देखना चाहिए। पियोटर स्टोम्पक्व ''कई संसारों के लिए समाजशास्त्र'' और हमारे मध्य राजनैतिक विभाजन करने वालों की पीड़ा चाहे वे क्रांतिकारी पाखडी हो या स्वदेशी समाजशास्त्रों के हिमयती, की प्रतिरक्षा करते हुए अंर्तराष्ट्रीयकरण को विवाददस्पद चरम सीमा तक ले जाते हैं। अंत में, अंर्तराष्ट्रीय सामाजिक विज्ञान परिषद के अध्यक्ष की नई भूमिका के अनुरुप अलबर्टो मार्टिनेली, वैश्विक लोकतांत्रिक शासन को बढाने में समाजशास्त्र की महत्वपूर्ण भूमिका के बारे में बात करते हैं।

ये बुद्धिमान और प्रबुद्ध समाजशास्त्री हैं जिन्होने समाजशास्त्र की दुर्दशा के बारे में महत्वपूर्ण चेतावनी दी है। परन्तु जैसा वैश्विक संवाद ने समय समय पर दर्शाया है, आज के युवा समाजशास्त्री इन चुनौतियौं का बहादुरी और नवाचार से सामना कर रहे हैं। इस अंक में हमारे पास इटली के प्रवासी श्रमिकों की दुर्दशा और आर्थिक संकट से इटली के युवा किस प्रकार मुकाबला कर रहे हैं, पर लेख है। हमारे पास लेबनान से संप्रदायवाद की बदलती तस्वीर और किस प्रकार दक्षिण लेगनान युद्ध क्षेत्र में किसान जिंदा हैं पर लेख है। हमारे पास मिश्र के ''जिप्सी'' और फ्रांस के अप्रवासी, भेदभाव किये गये बाहरी पर लेख है। हमारे पास तुर्की के गेजी प्रतिरोध के राजनैतिक परिणामों, कजाकिस्तान में मीडिया की चालबाजी पर लेख और पृथ्वी ग्रह की दुर्दशा के बारे में प्राकृतिक वैज्ञानिक क्या कर रहे हैं पर एक रिपोर्ट है। हमारे पूर्व अध्यक्षों की चेतावनी के बावजूद, एक एसी दुनियां पर रिपोर्ट कर के जो अच्छा नहीं कर रही है, जमीन पर समाजशास्त्र अच्छा कर रहा है।

> वैश्विक संवाद को आईएसए वैबसाइट पर 14 भाषाओं में देखा जा सकता है।
> प्रस्तुतियां (Submissions) burawoy@berkeley.edu पर प्रेषित की जा सकती हैं।

## 65 वर्ष की आई.एस.ए.

*अन्तर्राष्ट्रीय समाजशास्त्रीय संघ के छः पूर्व अध्यक्ष आई.एस.ए. की ऐतिहासिक और भविष्य की चुनौतियों पर एक दूर की दृष्टि डालते हैं।*

GD

***Global Dialogue*** is made possible by a generous grant from **SAGE Publications.**

# > Editorial Board

**Editor:** Michael Burawoy.

**Associate Editor:** Gay Seidman.

**Managing Editors:** Lola Busuttil, August Bagà.

**Consulting Editors:**
Margaret Abraham, Markus Schulz, Sari Hanafi, Vineeta Sinha, Benjamin Tejerina, Rosemary Barbaret, Izabela Barlinska, Dilek Cindoğlu, Filomin Gutierrez, John Holmwood, Guillermina Jasso, Kalpana Kannabiran, Marina Kurkchiyan, Simon Mapadimeng, Abdul-mumin Sa'ad, Ayse Saktanber, Celi Scalon, Sawako Shirahase, Grazyna Skapska, Evangelia Tastsoglou, Chin-Chun Yi, Elena Zdravomyslova.

**Regional Editors**

**Arab World:**
Sari Hanafi, Mounir Saidani.

**Brazil:**
Gustavo Taniguti, Andreza Galli, Renata Barreto Preturlan, Ângelo Martins Júnior, Lucas Amaral, Rafael de Souza, Benno Alves.

**Colombia:**
María José Álvarez Rivadulla, Sebastián Villamizar Santamaría, Andrés Castro Araújo, Katherine Gaitán Santamaría.

**India:**
Ishwar Modi, Rajiv Gupta, Rashmi Jain, Jyoti Sidana, Nidhi Bansal, Uday Singh.

**Iran:**
Reyhaneh Javadi, Zohreh Sorooshfar, Abdolkarim Bastani, Niayesh Dolati, Mitra Daneshvar, Faezeh Khajehzadeh.

**Japan:**
Satomi Yamamoto, Yusuke Abe, Yuri Hitomi, Yutaka Ito, Seijiro Katayama, Koki Kawakami, Ayaka Komiya, Masahiro Matsuda, Masakazu Matsuzaki, Yuka Mitani, Nami Morodome, Hiroki Nakamura, Masaki Okada, Takazumi Okada, Yukari Sadaoka, Fuma Sekiguchi, Kohei Takejiri, Misato Tsuruda, Kazuki Uyeyama, Wataru Wada, Tomoko Wakiya, Kasumi Yamauchi, Sakiye Yoshioka.

**Poland:**
Mariusz Finkielsztajn, Weronika Gawarska, Krzysztof Gubański, Kinga Jakieła, Kamil Lipiński, Przemysław Marcowski, Kuba Barszczewski, Martyna Miernacka, Mikołaj Mierzejewski, Karolina Mikołajewska, Adam Müller, Zofia Penza, Konrad Siemaszko, Anna Wandzel, Hanna Wierzbicka, Marcin Zaród.

**Romania:**
Cosima Rughiniş, Ileana-Cinziana Surdu, Telegdy Balazs, Adriana Bondor, Ramona Cantaragiu, Miriam Cihodariu, Ruxandra Iordache, Andra Larionescu, Mihai Bogdan Marian, Monica Nădrag, Mădălin-Bogdan Rapan, Alina Stan, Oana Mara Stan, Elena Tudor, Cristian Constantin Vereş.

**Russia:**
Elena Zdravomyslova, Anna Kadnikova, Asja Voronkova.

**Taiwan:**
Jing-Mao Ho.

**Turkey:**
Yonca Odabas, Günnur Ertong Attar, İlker Urlu, Zeynep Tekin Babuç, Hüseyin Odabaş.

**Media Consultants:** Gustavo Taniguti, José Reguera.

**Editorial Consultant:** Ana Villarreal.

# > इस अंक में In This Issue

सम्पादकीय: 65 वर्ष की आई.एस.ए. **2**

## > भूतपूर्व अध्यक्ष अतीत एवं भविष्य को देखते हुए

एक दुनिया के लिए समाजशास्त्र
**मार्गेट एस आर्चर, यूके, आई.एस.ए. अध्यक्ष 1986–1990** **4**

समाजशास्त्र को अन्तर्राष्ट्रीयकृत करने हेतु पूर्व–आवश्यकताएं
**टी. के. ओमन, भारत, आई.एस.ए. अध्यक्ष 1990–1994** **6**

एक संगठन के रूप में आई. एस. ए. : उसकी प्रगति में कुछ खतरे
**इमानुअल वालरस्टीन, यू.एस.ए., आई.एस.ए. अध्यक्ष 1994–1998** **8**

वैश्विक लोकतांत्रिक शासन में आई. एस. ए. का योगदान
**अल्बर्टो मार्टिनेली, इटली, आई.एस.ए. अध्यक्ष 1998–2002** **10**

'प्रत्यक्षवादी' घोषणापत्र
**पिओटर स्टोम्का, पोलैण्ड, आई.एस.ए. अध्यक्ष 2002–2006** **12**

डिजिटलीकरण, अनुशासनात्मकता एवं विपत्ति (संकट) की चुनौतियाँ
**मिचेल विवोरका, फ्रांस, आई.एस.ए. अध्यक्ष 2006–2010** **14**

## > इटली में श्रम

दक्षिण इटली में प्रवासी श्रमिक
**मिमो पिरोता, इटली** **16**

सहकारिता के खिलाफ हड़ताल
**डेवी सच्चेतो, इटली** **18**

आर्थिक संकट का सामना करते हुए
**लुईजा एम. लिओनिनि, इटली** **20**

फ्रीलांस कार्य का उदय
**एलेसान्ड्रो गांडिनी, इटली** **22**

## > लेबनान से

लेबनान में सांप्रदायिकता की बदलती स्थिति
**रीमा माजेद, लेबनान** **24**

लेबनान युद्ध क्षेत्र में 'कड़वी फसल' की खेती
**मुनिरा खय्यात, मिश्र** **26**

## > संकट में विश्वविद्यालय

आडिट के पेच को मोड़ते हुए : उच्च शिक्षा में गिरावट
**जोन होमवुड, यू.के.** **28**

## > विभेदीकृत बाहरी व्यक्ति

मिस्र के अदृश्य जिप्सी
**एलेक्जेंड्रा पार्स, मिस्र** **30**

फ्रांस में द्विराष्ट्रीय प्रेमी संदेह के घेरे में
**मैनुएला सलजेडो तथा लौरा औडासो, फ्रांस** **32**

## > राजनीति एवं मीडिया

काली छाया से ग्रसित तुर्की
**आएलिन टोपाल, तुर्की** **34**

कजाकिस्तान में जनमत मे जोड़–तोड़
**एल्मास ताइझानोव, कजाकिस्तान** **36**

पृथ्वी ग्रह का भविष्य
**एमा पोरियो, फिलीपीन्स** **38**

*वैश्विक संवाद* का रोमानियन दल
**ईलेना सिन्जिआना सुर्दु, रोमानिया** **39**

# > एक दुनिया के लिए समाजशास्त्र

**मार्गेट एस आर्चर,** वारविक विश्वविद्यालय, यू.के. और पूर्व आई एस ए अध्यक्ष, 1986-1990

*मार्गेट आर्चर*

त्रुटिहीन अभिज्ञता जैसी कोई चीज नहीं होती है। प्रारम्भ से मैं यूनेस्का की दृष्टि से देख रही हूं : इन विषयों की प्रगति के लिए ''विश्व के सामाजिक विज्ञानों के विद्वानों को एक जुट रखने'' के लिए आई. एस. ए. को स्थापित किया गया था। यह देखते हुए कि इसके 65 वर्षों का काल 'उच्च' और 'पछेती' आधुनिकता के मध्य की खाई और महत्वपूर्ण रूप से, अब आगे क्या होगा, पर फैला है, आई. एस. ए. इसे अपने सारपत्र के रूप में ले सकता था। उसने ऐसा नहीं किया अपितु उन संरचनात्मक और सांस्कृतिक सीमाओं में अपने स्वयं के इतिहास को बनाने वाला यह एक और प्रतिभागी था। पीछे देखते हुए इन सालों की सामान्य कालावधि और आई. एस. ए. के इतिहास के चरणों में उल्लेखनीय अच्छी संगत दिखाई देती है, सद्भावना की कभी कमी नहीं थी परन्तु पूर्वज्ञान की थी।

दुनिया के पहले वैश्वीकृत होने, या दुनिया के पहले भौगोलिक रूप से समावेशी बनने से हमें उच्च बौद्धिक आधार लेने की कोशिश में हमें किसने रोका? मैं सिर्फ अपने स्वयं के अनुभवों से चित्रण करूंगी। इविऑन–लेस–बेंस में आयोजित 1966 की विश्व कॉंग्रेस–जो इस शेलेट जहां से मैं अभी यह लिख रही हूं , से 6 किलोमीटर की दूरी पर थी। उस शहर की भाँति कॉंग्रेस भी लघु, लगभग अंतरंग और बहुत अधिक यूरोकेन्द्रित थी। अमरीकी उपस्थिति मजबूत थी परन्तु सबसे अधिक जीवन्त पूर्वी यूरोपीय प्रवासी थे। हमें छोटे अधिकारिक प्रतिनिधिमण्डलों में से KGB अफसर ढूँढने में मजा आया परन्तु सुरक्षित और सुविचारित प्रस्तुतियों को जोखिम भरे संवाद में बदलने में कोई सफलता नहीं मिली।

इसकी कुछ जिम्मेदारी समान रूप से हमारे द्वारा भाषाई आधिपत्य के प्रयोग में निहित हैं। अधिकांश उत्तरी, अमरीकी और बेशक अधिकांश अंग्रेज निर्लज्ज रुप से एक भाषी बने रहे और अभी भी हैं। कुछ हद तक, संचार की बुनियादी सुविधाएँ भी एक बाधा थीं। हस्तचलित टाइपराइटर, न कोई फोटोकोपियर, शंबुक डाक और असुरक्षित फोन लाइनें भी अवरोध के कारक थे। 1960 के दशक के बाद जन्में लोगों को यह समझाने के लिए मैं यह बताना चाहूंगी कि जब मैं करण्ट सोशियोली की संपादक बनी (1973), ट्रेंड रिपोर्ट की संदर्भ सूची, अपने फाइलिंग कार्ड के समेत फाइलिंग कैबिनेट की पार्सल की हुई दराज के साथ मेरे पास पहुंची। मैं एक पुराने रेमिंग्टन पर उसे टाइप करने तथा हाथ से एक्सेंट डालने की खुशी से बचना चाहूंगी। 1952 में जब से जर्नल शुरू हुआ हमें क्यों लगता था कि ट्रेंड रिपोर्ट उपयोगी हैं? क्योंकि इण्टरनेट के पूर्व, इस बुनियादी जानकारी/सूचना के लिए अन्य उपाय सोशियोलोजिकल एब्सट्रेक्ट्स ही थे। वे भी लिया चाल और उसकी पत्नी के स्वैच्छिक प्रयासों के फलस्वरूप उपलब्ध थे और उसके लिए उन्हें धन्यवाद। यह उस काल की, जिसे मैं अपना शीत युद्ध कहती हूं, की पृष्ठभूमि है।

## > अनुभववाद द्वारा एकजुट शीत योद्धा

निस्संदेह रूप से, सामाजिक विज्ञानों के दर्शन ने अनुभववाद को आगे बढ़ाया है और जहां यह एक तरफ तो अब यह दिवालिए के रूप में देखा जा रहा है, अस्थायी रूप से इसने पश्चिम और पूर्व के मध्य एक बंधन का गठन किया। पश्चिमी देश विशाल आंकड़ों को प्रारंभिक बढ़ावा देने वाले, अपने पहले (कमरे के आकार के) कंप्यूटर के आगमन से उत्साहित थे। पूर्वी यूरोप में विस्तृत सांख्यिकीय अध्ययन, राजनैतिक यथातथ्यता के खिलाफ सुरक्षित आश्रय स्थल प्रदान कर रहे थे। इसके अतिरिक्त, सांख्यिकी ने एक प्रकार की समान भाषा (Esperanto) का प्रतिनिधित्व किया। 1970 के दशक की कॉंग्रेसों में किसी भी सत्र में प्रवेश का अर्थ एक ओवरहेड स्लाइड से प्रक्षेपित एक और अन्य रिग्रेशन तालिका को देखना था जो अर्ध–गणितीय चर्चा को आमंत्रित कर रही थी।

> >

ऐसा नहीं था कि सिद्धान्त मर गये थे। इसके विपरीत, उपासला (1978) में स्टार आकर्षण पारसन्स और आलथ्यूजर के मध्य नियत बहस थी। कम से कम ऐसा दूरस्थ Daula की तरफ वर्षा के बीच पैदल चलते सैंकड़ों प्रतिभागियों को देखते हुए लगता था। जब अध्ययक्ष ने अफसोस के साथ यह घोषणा की कि कोई भी वक्ता नहीं आ पाया तो सभी छतरियाँ खुल गई और हम सब निराशापूर्वक लौट गये।

आई. एस. ए. में सदभावना का अभाव नहीं था। हम जानबूझ कर कार्यकारी समिति की बैठकें पूर्वी यूरोप में रखते थे, बुल्गारिया से पांडुलिपियों की तस्करी करते, टैबिलिसि, जुबजाना, बुडापेस्ट और अन्य कई का अपने नेटवर्क का विस्तार करने के लिए दौरा करते। पोलेण्ड की बारम्बार यात्रा करने से कई आजन्म दोस्त बनें। वह भी उस समय में जब आई एस ए में राष्ट्रीय संघ अभी भी प्रभुत्व में थे, हमने पॉलिश सदस्यों एवं पार्टी के बीच के रिश्ते की सतह को कुरेदा। जबलोना के एक सुंदर महल में मेजबानी के दौरान, हमें बैचेनी से पता था कि हमें भोजन कराने की लागत हमारे सहयोगियों को शायद एक महीने के खाद्य कूपनों के द्वारा चुकानी होगी। खानसामा और बेहतर करना चाहता था और उसने हमें गुरूवार को Zrazy zawijane खिलाने का वादा किया। पूरी दोपहर हम उसकी तैयारियों की खुशबू सूंघते रहे परन्तु रात के खाने में बार–बार देरी हुई। अंततः, हमने वारसाँ से आने वाली कारों का कारवाँ देखा और बेचारी कुक को हमें यह बताना पड़ा कि यह शिक्षा मंत्री का भोज था और हमारे लिए खाना नहीं था। कई दोस्तियाँ लंबी चली : कुछ तो अनाधिकारिक रूप से डॉस्क डाइव कर के जाने और बंदरगाह पर उपस्थित होने की खुशी मिली जब Solidarity ने अपनी जंजीरे तोड़ दी।

## > मेक्सिकन लहर और चेतावनी

दुनिया के अन्य के लिए, आई. एस. ए. ने सताए हुए व्यक्तियों के प्रति अच्छी लेकिन अत्याचार समष्टि की तरह बहुत कम प्रतिक्रिया दी है। अभी भी यूरोकेन्द्रित होने और हमारे उत्तरी अमरीकी भाइयों के द्वारा अधिक मदद नहीं की जाने के कारण, यहां बहुत कम ही थे जो अन्य महाद्वीपों पर क्या हो रहा है से परिचित थे। हालाँकि इसमें भी उल्लेखनीय अपवाद थे : टॉम बोटोमोर और भारत, एलेन टूरेन और लेटिन अमरीका के बारे में उनका अपार ज्ञान। परन्तु हम लेटिन अमरीका में कितना कम काम कर रहे हैं, यह मेक्सिकों सिटी में आयोजित समाजशास्त्र की आई एस ए विश्व कांग्रेस (1982) के दौरान पता चला। हम UNAM (National Autonomous University of Mexico) के आकार और कांग्रेस में भाग लेने की इच्छुक छात्रों की लहर को देख कर हैरत में थे। उनको समायोजित करने के लिए की गयी तदर्थ व्यवस्थाओं ने कइयों को उग्र रूप में छोड़ा। आप हमारे देश में आकर हमारी भाषा और चिताओं को कैसे स्वीकार नहीं कर सकते हैं? सामूहिक रूप से हमें यह संदेश मिला। वहां कारडोसा अध्यक्ष के रूप में निर्वाचित हुए, यद्यपि स्पेनिश को आई. एस. ए. की तीसरी अधिकारिक भाषा बनने में अभी कई वर्ष लगेंगे।

जब तक अगली कॉंग्रेस (1986) दिल्ली में हुई, मार्टिन एलब्रो और मैंने एक स्पष्ट आउटरीच गतिविधि के रूप में अंतर्राष्ट्रीय समाजशास्त्र की शुरूआत कर दी थी। डेनियल बटोक्स ने भौगोलिक और भाषायी स्तर पर समावेशी ''युवा समाजशास्त्री प्रतिस्पर्धा'' की योजना बनाई। इस प्रतिस्पर्धा में चौदह अलग भाषा पैनलों और निर्णायकों को सम्मिलित किया गया। सेवा करने की उनकी तत्परता ने हाशियेकरण की पूर्व भावनाओं के बारे में बहुत कुछ कहा। अंततः स्पेनिशन आई एस ए की अधिकारिक भाषा बन गई। 1990 की कांग्रेस के लिए हमारी थीम ''एक विश्व के लिए समाजशास्त्र'' थी और मैंने अपना अध्यक्षीय भाषण उसे समर्पित किया। अधिकांश कार्यकारिणी के सदस्य महसूस कर रहे थे कि हम अपने अंतर्राष्ट्रीय एजेण्डा के पथ पर अग्रसर थे। परंतु मुझे लगता है कि मैं एक काले बादल, शोध समितियों का बढ़ता महत्व जिसने इस प्रक्षेप पथ पर रोक लगाई, को इंद्राज करने में विफल रही।

## > बालकेनाइजेशन के बीस वर्ष

प्रारंभ में, शोध समितियों की विशेषज्ञता दुनिया भर में पेशेवर समाजशास्त्रियों की बढ़ती संख्या और रूचियों में भिन्नता के प्रति उचित प्रतिक्रिया लग रही थी। आर सी का प्रभाव, विखण्डन को रोकने वाली एजेन्सियों के प्रभाव को बराबर करने के बिना, जैसे ही बढ़ा, दो अनपेक्षित पणिाम दिखाई दिये। एक तरफ, कुछ शोध समितियाँ एक विशेष दृष्टिकोण का प्रतिनिधित्व करने वाले ''मौजूदा किरायेदार'' द्वारा अधिग्रहित थी जिसने प्रभावी ढंग से कुछ का अपवर्जन कर दिया। दूसरी तरफ, आर सी संख्या में बढ़ गई परन्तु पछेती आधुनिकता और उसके असंतोष को विश्लेषित करने वाले प्रमुख समाजशास्त्रियों के अभाव स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा था। संक्षेप में, ''हम कहां जा रहे हैं?'' पर चर्चा के लिए आई. एस. ए. एक सिकुड़ता मंच प्रदान कर रहा था।

उत्तरोत्तर में यदि ''आपकी'' शोध समिति एक जागीर बन जाए, मुख्य विकल्प दूसरे में जा कर उसे देखने का है क्योंकि पूर्ण सत्र एक बराबर का आकर्षण नहीं बन पा रहे थे। अतः मैं माइकल बुरावे के केन्द्रीय बहस पर ध्यान केन्द्रित करने व साथ ही ग्लोबल संवाद को प्रोत्साहित करने की कोशिशों का पूरा समर्थन दे रही थी।

## > भविष्य के लिए अनिवार्यता

जैसे ही शैक्षणिक जगत के नौकरशाही नियम तीव्र होते हैं जैसे नये कार्य संपादन संकेतक, प्रकाशन दुकानों की रैंकिंग और इम्पेक्ट फैक्टर पर जोर तीव्र होते हैं इन सभी का अर्थ है कि कैरियर के प्रारम्भ में सहकर्मी एक असामयिक रक्षात्मक विशेषज्ञता को अपनाते है–यदि वे अस्पष्ट नृवंशीय वृतान्त के आयोजन की आड़ नहीं लेते हैं। तीव्र गति से प्रकाशन और सी. वी. को भरने के दबाब का अर्थ है कि उनके पास एक पूरी पुस्तक पढ़ने का समय भी नहीं है। उनके पास उन लोगों के सम्पूर्ण कृत्य जिनकी वे आलोचना करते है या फिर उन दिग्गजों के कृत्य जिनके कंधों पर वे सवार होते हैं, पढ़ने का समय ही नहीं है। इस बीच, दुनिया के मुद्दों : यूरोप का पतन, जलवायु परिवर्तन, तीव्र होती असमानताएँ, वित्तीय पूंजीवाद के पुनर्गठन बनाम सांस्कृतिक सामान का डिजीटल वायदा, पर विचार विमर्श हेतु समाजशास्त्रीय मंच कहा हैं? वर्तमान दुनिया, उसके नवउदारवाद और ''कोई विकल्प नहीं है''? मंत्र के संकल्पना के बारे में समाजशास्त्रीय विवादों के लिए अखाड़ा कहां है?

नई कार्यकारिणी की संरचना बहुत अंतर्राष्ट्रीय है; या तो वह बालकनाइजेशन के अंतर्गत वैश्विक प्रतिनिधिकता को बढ़ावा दे सकती है या यह वैश्विक मुद्दों को सम्बोधित करने वाला एक नया अंतर्राष्ट्रीय एजेंडा तैयार कर सकता है जो यह व्याख्या करने की चेष्ट करें कि यह एक दुनिया किस तरफ जा रही है। मैंने एक बार सोचा था कि एक पूर्व अध्यक्ष की सबसे अच्छी भूमिका चुप रहने की हैं, क्योंकि हम अपनी बात कह चुके हैं। यद्यपि मैं यह महसूस करती हूं कि हमें बोलना चाहिए। आखिरकार, हम कुछ भी नहीं खोने का दुर्लभ विशेषाधिकार साझा करते हैं। ■

मार्गेट आर्चर से पत्र व्यवहार हेतु पता : <Margaret.Archer@warwick.ac.uk>

# > समाजशास्त्र को अन्तर्राष्ट्रीयकृत करने हेतु पूर्व–आवश्यकताएं

**टी. के. ओमन,** जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, नयी दिल्ली, भारत एवं आई.एस.ए. के पूर्व अध्यक्ष 1990-1994

*टी.के. ओमन*

इन्टरनेशनल सोश्योलोजकल एसोसियेशन की स्थापना अन्तर्राष्ट्रीय समाजशास्त्र को विकसित व व्यापक करने हेतु हुई थी पर हम अब तक इस विषय पर एकमत नहीं है कि इस अवधारणा का अर्थ क्या है। हालांकि इसे एक अर्थ में 'राष्ट्रीय समाजशास्त्रों' का संकलन कहा जा सकता है परन्तु जनांकिकीय दृष्टि से 'राष्ट्रों' की अवधारणा में भिन्नता है क्योंकि एक तरफ वे राष्ट्र हैं, जहां एक अरब से अधिक लोग निवास करते हैं (चीन एवं भारत) जबकि दूसरी ओर वे राष्ट्र हैं जहां पचास लाख या उससे कम लोग निवास करते हैं। साथ ही 'राष्ट्रों' की सामाजिक संरचना एवं संस्कृति प्रतिमानों में गुणात्मक भिन्नता पायी जाती है। एक ओर कुछ राष्ट्र बहु–राष्ट्रीय हैं जबकि कुछ बहु–नृवंशीय अथवा बहु–जनजातीय हैं। कुछ राष्ट्र राष्ट्र–राज्यों के रूप में विद्यमान हैं। ये राष्ट्र–राज्य या तो यथार्थ हैं अथवा उनकी आकांक्षाएं इस प्रकार की हैं। इस प्रकार की व्यग्र इकाइयों को अन्तर्राष्ट्रीय समाजशास्त्र की निर्मायक इकाइयों के रूप में स्वीकारना एक कठिन प्रस्ताव हैं। पर इसके बावजूद आई. एस. ए. इस प्रयास में पूर्ण ईमानदारी से क्रियाशील है।

जैसा कि बाउमन का मत है कि ''सम्भवतया कोई अपवाद हो तो पता नहीं पर सभी अवधारणायें एवं विश्लेषणात्मक श्रेणियाँ/उपकरण जिन्हें समाज वैज्ञानिक वर्तमान में प्रयुक्त कर रहे हैं का उद्देश्य उस मानव विश्व पर दृष्टिपात करना है जिसमें सर्वाधिक आकार वाली समग्रता एक 'समाज' है। 'समाज' एक ऐसी अवधारणा है जिसे सभी व्यावहारिक उद्देश्यों से 'राष्ट्र राज्य' की अवधारणा के समकक्ष रखा जा सकता है। समाज शास्त्र को अन्तर्राष्ट्रीयकृत करने की पहली पूर्व–आवश्यकता यह है कि ''राष्ट्र–राज्य'' की अवधारणा को एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण की इकाई के रूप में रद्द किया जावे ताकि 'पद्धतिशास्त्रीय राष्ट्रवाद' की उपेक्षा की जावे और 'राष्ट्र–राज्य' के प्रत्यय की उपेक्षा हो जो कि अपने उद्गम स्थल पश्चिमी यूरोप में ही वास्तविकता नहीं बन सका है। हालांकि समाजशास्त्री ''गतिशीलता'', ''वैश्विक नैटवर्क'' अथवा ''बहु आयामी सामाजिक स्पेसेज'' जैसी अवधारणाओं को ''समाज'' के संदर्भ में प्रतिस्थापित नहीं कर सकते क्योंकि इन अवधारणाओं के विकल्प नहीं है (उनके विषयों के आधार)। कुछ समाज वैज्ञानिक प्रतिस्थापित करने के प्रयासों के

> >

इस आधार पर विरोधी हैं कि समाजों के बिना इनमें से कोई भी अवधारणा अस्तित्व में नहीं रह सकती।

समाजशास्त्र के अन्तर्राष्ट्रीयकरण की दूसरी पूर्व–आवश्यकता समाजशास्त्र एवं सामाजिक/सांस्कृतिक मानवशास्त्र के मध्य के अतार्किक विभाजन को समाप्त करना है। यदि मानव शास्त्र 'निम्न–अन्यों'–जंगली, अश्वेत एवं नृवंशीयों का विश्लेषण करता है तो समाजशास्त्र का उद्देश्य आधुनिक, औद्योगिक अथवा 'व्यवस्थित' (प्रोग्राम्ड) समाजों का अध्ययन करना है। फाल्डिंग का दावा है कि (.....) सांस्कृतिक एवं सामाजिक मानवशास्त्र सरल लोगों के समाजशास्त्र से न तो अधिक है और न ही कम है।'' यह बल देना कि समाज शास्त्र आधुनिकता की उत्पत्ति है तो इसमें गैर–आधुनिक समाजों के संज्ञानात्मक पक्ष हाशिये पर आ जाते हैं अथवा बाहर हो जाते हैं परिणामस्वरूप बहुस्तरीय आधुनिकताओं की उपेक्षा हो जाती है।

औपनिवेशिक युग की बौद्धिक द्वि विभाजन की स्थिति शीत युद्ध के काल में त्रि–विभाजन में रूपान्तरित हो जाती है। यह त्रि–विभाजन राजनीतिक–आर्थिक कारकों पर आधारित है जिनका सामाजिक व सांस्कृतिक संरचनाओं से कोई लेना–देना नहीं है। तृतीय विश्व को अल्प विकास, जनसंख्या आधिक्य एवं राजनीतिक अव्यवस्था की विशेषताओं के साथ प्रस्तुत किया गया। द्वितीय विश्व युद्ध प्रौद्योगिक दृष्टि से आधुनिक लेकिन राजनीतिक दृष्टि से निरंकुश था जबकि प्रथम विश्व युद्ध आधुनिक, प्रौद्योगिक दृष्टि से सक्षम व कुशल, लोकतान्त्रिक तथा आर्थिक दृष्टि से विकसित था।

परन्तु सामाजिक संरचनाओं एवं सांस्कृतिक स्वरूपों की दृष्टि से देखें तो तृतीय विश्व तीन भिन्न स्थितियों से निर्मित होता है जो भिन्न औपनिवेशिक अनुभवों से उभार लेती हैं। यदि अफ्रीका एवं दक्षिण एशिया से 'प्रत्यावर्तनीय उपनिवेशवाद' सम्बद्ध रहा है तो लतीनी अमेरिका ने ''प्रतिकृतिमूलक उपनिवेशवाद' का अनुभव किया है जो कि भिन्न भिन्न किस्म के नृवंशीय समूहों से जुड़े प्रवासियों से निर्मित हुआ। ये सभी 'नृवंशीय समूह' एक राज्य की भौगोलिक सीमा में साथ रहते है अतः ये पश्चिमी यूरोपीय दृष्टि से राष्ट्र–राज्य के रूप में नहीं उभरते। शीत युद्ध से पनपी तीन–विश्वों की धारणा को समाजशास्त्री चुनौती देने में असफल रहे है परिणाम स्वरूप बस्तियाँ केन्द्रित समाजों (सैटिलमैण्ट सोसायटीज) के विषय में हमारी समझ जटिल बनी रहती है। ये बस्तियाँ केन्द्रित समाज प्रथम विश्व व तृतीय विश्व दोनों में ही विद्यमान हैं।

राष्ट्र–राज्य का सम्मिश्रण एक सामान्य अवधारणात्मक घालमेल है और समाजशास्त्र के अन्तर्राष्ट्रीयकरण में अनवरत रूप से उभरने वाला ऐसा अवरोध है जिसमें लड़खड़ाहट है। समाजशास्त्र में 'राष्ट्रीय परम्पराएं; अनिवार्यतः उन अध्ययनों से निर्मित होती है जो राज्य की भौगोलिक सीमा के अन्दर हुए हैं। बर्लिन दीवार के निर्माण के पहले एवं इसके टूटने के बाद जर्मन समाजशास्त्र की एक राष्ट्रीय परम्परा है परन्तु अनेक दशकों तक यहां पूर्व एवं पश्चिम जर्मनी के रूप में दो राष्ट्रीय परम्पराएं रही हैं। द्वितीय विश्व के विघटन के पहले सोवियत समाजशास्त्र में अनेक राष्ट्रीय समाजशास्त्रों का सम्मिलन रहा है पर सोवितय संघ के विघटन के उपरान्त अनेक राष्ट्रीय समाजशास्त्रों को मान्यता मिलने लगी।

समाजशास्त्र को राष्ट्र–राज्य के साथ सम्बद्ध करना इस विषय के अवयव के विरूद्ध है। समाजशास्त्र सभी प्रकार के समाजों में विद्यमान सामाजिक संरचनाओं एवं सांस्कृतिक स्वरूपों का विश्लेषण करता है। इसमें आधुनिक, पूर्व आधुनिक, सरल, जटिल, कृषक एवं औद्योगिक सभी समाज सम्मिलित हैं। यदि समाजशास्त्र की विषय–केन्द्रित रूचि विविधता में है तो राष्ट्र–राज्य कठोर रूप में समरूपीयकरण के उद्देश्य को आगे बढ़ाता है। यह एक विरोधाभास है कि समाजशास्त्र एवं राष्ट्र–राज्य की आत्मायें (अर्थात् चेतनात्मक तत्व) विपरीत दिशाओं में जाती हैं परन्तु वे एक ही शरीर में साथ साथ बंधी हैं। यही राजनीतिक निकाय हैं जो समाजशास्त्र के अन्तर्राष्ट्रीयकरण में बाधक है।

इसके अलावा समाजशास्त्र को उस राज्य से जोड़ना विशेषतः समस्यामूलक है जहां ''राष्ट्रों'' की स्थितियां अभी स्वयं को सम्प्रभु राज्यों में बदल नहीं पायी हैं। फ्रांस का समाजशास्त्र तो है पर ब्रिटानी का समाजशास्त्र नहीं है। ब्रितानी समाजशास्त्र तो है पर वेल्स का समाजशास्त्र नहीं है। स्पेनिश समाजशास्त्र तो है पर केटेलान का समाजशास्त्र नहीं है। कुर्दिश राष्ट्र चारों ओर अनेक सम्प्रभु राज्यों में विच्छेदित है पर वे स्वयं के समाजशास्त्र को अस्तित्व में नहीं ला पाये हैं। 'राष्ट्रीय समाजशास्त्रों' का भविष्य अत्यन्त जटिलता व गहनता के साथ राष्ट्रों के राजनीतिक भविष्य से जुड़ा है। ''यदि सम्प्रभु राज्य नहीं है तो समाजशास्त्र भी नहीं हैं।'' इस स्थिति में क्या कोई विश्वसनीय अन्तर्राष्ट्रीय समाजशास्त्र की अर्थपूर्ण तरीके से चर्चा कर सकता है?

कुछ लोग यह तर्क दे सकते हैं कि हम राष्ट्र–राज्यों के अन्त के गवाह बन रहे हैं। द्वितीय विश्व के विखण्डन ने एक विश्व की अवधारणा को जन्म दिया है और इसकी तार्किक परिणति वैश्विक समाजशास्त्र होगा। परन्तु यह रूपान्तरण राजनीति व अर्थतन्त्र में ज्यादा है, समाज एवं संस्कृति में यह बहुत आंशिक है। यह अनुमान लगाना कि 'एकल समाजशास्त्र' उत्पन्न होगा, अपरिपक्वता होगी। हालांकि एक संचारात्मक व्यवस्था अस्तित्व में है अतः कुछ लोग 'विश्व समाज' की रचना की चर्चा करते हैं–यह एक ऐसा सुझाव है जिसे मैं एक गैर इरादतन रूप में उस मौलिक त्रुटि की वापसी की तरफ जाते देखता हूं जो समाजशास्त्र को विशुद्ध विज्ञानों के संदर्भ में स्थापित करता है। समाजशास्त्र की 12वीं विश्व कांग्रेस के अध्यक्षीय भाषण में (बिलीफील्ड 1994) दो दशक पहले मैंने यह तर्क दिया कि ''विश्व समाज को एक संस्कृति, एक सभ्यता, एक संचारात्मक व्यवस्था एवं अन्य समान संदर्भों में विवेचित करना न केवल असम्भव है अपितु अवांछनीय भी है। बाहुल्यीकरण विश्व समाज की आधारभूत अवधारणा को निर्मित करता है?'' मैं अपने आलेख को दो अवलोकनों के साथ समाप्त करता हूं। मानव समाजों में रूपान्तरण के बावजूद तीन आयाम प्रत्येक के द्वारा स्वीकारे जायेंगे। एकता (जैसा दार्शनिक यथार्थवाद मानता है), बहुस्तरीयता (जैसा समाजशास्त्रीय नाममात्रवादी सुझाव देते है) एवं सामाजिक प्रक्रिया (जैसा सांस्कृतिक बाहुल्यतावादी स्वीकृति देते है) वे तीन आयाम हैं। ये आयाम विभिन्न समाजों में भिन्न भिन्न रूप से विद्यमान हैं पर उनके आधारभूत पक्ष समान है और ये ही पक्ष समाजशास्त्र के अन्तर्राष्ट्रीयकरण की आशा को बलवती करते हैं। पर इन आधारों पर बल देने की बजाय समाजशास्त्र ने आर्थिक व्यवस्था, राजनीति व्यवस्था, प्रौद्योगिकी, संचार माध्यम, पारिस्थितिकी इत्यादि को शक्तिशाली बना दिया है और सामाजिक संरचनाओं व सांस्कृतिक स्वरूपों को महज आश्रित चर की स्थिति में पहुंचा दिया है। दूसरे, सामाजिक जटिलता में विविधता स्तरीकरण के परिणाम से व्यापक होती है। इसके अतिरिक्त विषमरूपता एवं संस्तरण इसें ज्यादा भिन्नता प्रदान करते हैं बजाय आर्थिक विकास या राजनीतिक पक्षों के। मानव समाज तो वर्ग, लिंग, आयु इत्यादि कारकों से स्तरीकृत है। पर साथ ही ये समाज सांस्कृतिक रूप से विषमरूपयी है विशेषतः धर्म, भाषा एवं प्रजाति इसे विषमरूपीय बनाते हैं। इन सबके बीच अन्तः विभाजनता के कारण जटिलता और गहन हो जाती है। संस्तरण मूलक समाजों में जहां सामाजिक मूल्य असमानता को वैधता देते हैं, जटिलता अत्यन्त तीव्र गति से बढ़ती है। एक विश्वसनीय प्रकृति का समाजशास्त्र का अन्तर्राष्ट्रीयकरण समाजों में व्याप्त समान अवयवों एवं विशिष्टताओं को आगे बढ़ायेगा। अन्तर्राष्ट्रीय समाजशास्त्र न तो सार्वभौमिकीकरण और न ही देशजकरण को महत्व देता है। यह तो सन्दर्भीकरण को महत्व देता हैं अतः यह सार्वभौमिक के एकाधिकारवादी करण तथा देशजकरण के संकुचितीकरण की उपेक्षा करता है। वास्तव में तुलनात्मक समाजशास्त्र ही समाजशास्त्र के अन्तर्राष्ट्रीयकरण का मुख्य द्वार है। ■

टी. के. ओमन से पत्र व्यवहार हेतु पता : <tkoommen5@gmail.com>

# > एक संगठन के रूप में आई.एस.ए. उसकी प्रगति में कुछ खतरे

**इमानुअल वालरस्टीन,** येल विश्वविद्यालय, यू. एस. ए. और आई. एस. ए. पूर्व अध्यक्ष 1994-1998

*इमानुअल वालरस्टीन*

मेरे द्वारा भाग ली गई पहली कॉंग्रेस आई एस ए की तीसरी थी जो 1959 में उत्तरी इटली के एक छोटे शहर स्ट्रेसा में आयोजित हुई थी। तब से आयोजित पन्द्रह कांग्रेस में से तेरह में मैंने भाग लिया है। 1959 की आई एस ए, मेरे 1994–1998 के अध्यक्षीय काल के दौरान और आज के मध्य अन्तर पर चिन्तन करते हुए मैं इसके संगठनात्मक जीवन के चार पक्षों : कांग्रेस प्रतिभागियों का संयोजन, भाषा, आई एस ए संरचना एवं कार्यक्रम और आकार के प्रभाव की चर्चा करना चाहूंगा।

## > प्रतिभागियों का संयोजन

जहां 1959 में पंजीकृतों की अधिकारिक गिनती 867 थी, पूर्ण सत्र में लगभग 300 लोग थे, जो लगभग सभी यूरोप और उत्तर अमरीका से थे। मेरी याददाश्त के अनुसार, जिसे हम तब तीसरी दुनिया कहते थे, सिर्फ एक ही सक्रिय प्रतिभागी, अनोर अब्दुल मालेक, था (यद्यपि वह पेरिस में काम करता था) सोवियत संघ और अन्य पूर्व–यूरोपीय देशों द्वारा भेजे गये प्रतिनिधियों वाली यह पहली कांग्रेस थी। इनमें से अधिकांश हाल ही में पुनर्बपतिस्मा दार्शनिक थे लेकिन मेजबान देश इटली से भी कई थे। ''समाजशास्त्र'' एक उभरती श्रेणी थी और आई एस ए ने इसके सृजन/निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

मेरे अध्यक्षीय काल तक भागीदारी अधिक अंतर्राष्ट्रीय हो गई था। यद्यमि अभी भी यह अपने वितरण में असंतुलित थी। कांग्रेस में आने की वित्तीय लागत और साथ में यह तथ्य कि समाजशास्त्र अभी कई देशों में अपने आप को स्थापित ही कर रहा था, भागीदारी को सीमित करता था।

आई एस ए के काफी प्रयत्नों के बाद 2014 तक, भागीदारी काफी अधिक संतुलित है, हालांकि अभी भी अपूर्ण है। सबसे बड़ा सुधार महिलाओं की अधिकारियों और वक्ताओं के रूप में भागीदारी में हुआ है। भविष्य में कांग्रेसों में वितरणात्मक भागीदारी में शायद लगातार सुधार जारी रहेगा।

## > भाषा

आई एस ए की प्रारंभिक अधिकारिक भाषा अंग्रेजी और फ्रेंच थी। 1959 में फ्रेंच का व्यापक प्रयोग हुआ, 2014 की कहीं अधिक बड़ी कांग्रेस की तुलना में 1959 में अधिक फ्रेंच बोली गई। अनुवाद किसी तदर्थ आधार को छोड़कर, यदा कदा ही होता था।

तीसरी दुनिया में आयोजित होने वाली पहली कांग्रेस 1982 में मेक्सिको सिटी में हुई। इसमें कई मैक्सिकन प्रतिभागियों के साथ अन्य लेटिन अमरीकी भी थे। अंग्रेजी व फ्रेंच भाषा के एकांतिक उपयोग ने युवा मैक्सिकन प्रतिभागियों के मध्य स्पेनिश में बोलने का अधिकार और दोनों दिशाओं में अनुवाद की मांग रखते हुए विद्रोह को भड़काया। एलेन टूरेन ने व्यक्तिगत रूप से मंचासीन हो कर अंग्रेजी और फ्रेंच से स्पेनिश और इसके विपरीत अनुवाद करके स्थिति को बचा लिया। स्पेनिश बाद में आई एस ए की तीसरी अधिकारिक भाषा बन गई।

तथापि, फ्रेंच और स्पेनिश वक्ताओं के कुछ सत्रों को छोड़कर, अंग्रेजी वास्तव में प्रयोग में आने वाली एकमात्र भाषा बन गई। यदि कोई फ्रेंच या स्पेनिश वक्ता किसी मुख्य सत्र में अपना कृत्य प्रस्तुत

> >

करता है, कई अंग्रेजी वक्ता एकदम बाहर निकल जायेंगे। जब मैं अध्यक्ष था, तो हमने उसी एलेन टुरेन के नेतृत्व में इस समस्या का अध्ययन करने के लिए एक विशेष समिति को नियुक्त किया। समिति ने इस खराब स्थिति में सुधार के लिए कुछ समाधानों का प्रस्ताव दिया लेकिन इन सुझावों को विनम्रता से नजरअंदाज कर किया गया।

अंशतः ऐसा करना व्यापक अंतर्राष्ट्रीय भागीदारी से प्रभावित था। अधिक से अधिक प्रतिभागियों के लिए, तीनों अधिकारिक भाषाओं में से कोई भी उनकी मातृभाषा नहीं थी; अधिकांश के लिए अंग्रेजी पहली ''द्वितीय भाषा'' थी। यह विश्व व्यवस्था में अमरीकी प्राधान्य का भी प्रभाव था : जहां पहले की पीढियाँ ''द्वितीय भाषा'' के रूप में फ्रेंच, जर्मन या रूसी सीखती थीं, युवा पीढ़ियाँ अब अंग्रेजी सीखने लगी हैं।

कई अंतर्राष्ट्रीय संगठनों की तरह, आई एस ए सार्वजनिक भाषा के ऋणात्मक पक्ष का सामना कर रही है। सार्वजनिक भाषा का एक दरिद्र संस्करण प्रयोग में है; बोले जाने वाला और लिखित संस्करण अलग हो रहे हैं। जैसे जैसे अमरीकी प्राधान्य का लगातार पतन होगा, निस्संदेह और भाषाओं की मांग बढ़ेगी : जब मैडारिन चाइनीज और अरबी भाषाएँ वैज्ञानिक संचार के लिए व्यापक रूप में प्रयोग में होगी तो भविष्य का आई एस ए इन्हे कैसे समायोजित करेगा?

## >आई. एस. ए. की संरचना और कार्यक्रम

1959 में सदस्य राष्ट्रीय संघों के प्रतिनिधियों से बनी परिषद अपने सदस्यों में से एक अध्यक्ष और अन्य पदाधिकारियों के साथ एक कार्यकारिणी समिति को चुनती है। जब USSR ने आई. एस. ए. में प्रवेश किया, ये पद एक निजी पूर्व–पश्चिम वार्ता के माध्यम से वितरित किये गए।

1959 में केवल दो शोध समितियाँ थीं। वे सही मायने में शोध समितियाँ थी–अर्थात् वे बहस के स्थल नहीं थी अपितु पारदेशीय अनुसंधान के लिए धन एकत्रित करने वाले समूह थी। कोई भी सिर्फ उनमें सम्मिलित नहीं हो सकता था। सदस्य आमंत्रित किये जाते थे। इस के बाद, समितियों की संख्या बढ़ने के साथ, एक परिषद बनायी गई और उसके चार सदस्य को आई एस ए परिषद के साथ जोड़ा गया।

आई. एस. ए. संरचना का मुख्य कार्य अगली कांग्रेस के स्थान का चयन करना और कार्यक्रम बनाना था। उपाध्यक्ष (एकल) को कार्यक्रम समिति, जिसके किसी भी सदस्य ने आई. एस. ए. परिषद में कार्य नहीं किया था, के साथ मिलकर कार्यक्रम को बनाने का कार्य सौंपा जाता था। इसके बिल्कुल विपरीत परिषद में सेवारत apparatichiks को टालते हुए, परिषद में कार्य करने के लिए काबिल भिन्न व्यक्तियों को खोजने का विचार था। आई एस ए अध्यक्ष भी कार्यक्रम समिति की बैठकों में भाग नहीं लेता है। आने वाले वर्षों के दौरान, आई एस ए ने और उपाध्यक्ष के पदों का सृजन किया, परन्तु मेरे अध्यक्षीय काल तक उपाध्यक्ष, कार्यक्रम रैंक में अगुआ था। मेरे उपाध्यक्ष, कार्यक्रम (और अध्यक्ष के रूप में मेरा उत्तराधिकारी), अलबर्टो मार्टिनेली ने एक समिति को नियुक्त किया, यद्यपि अन्य उपाध्यक्षों को भी इसमें सम्मिलित होने के लिए आमंत्रित किया गया था। किसी समय पर, पदानुक्रम के शीर्ष स्थान पर उपाध्यक्ष, कार्यक्रम उपाध्यक्ष, शोध से बदल दिया गया और अंत में यह पद पूरी तरह से खत्म हो गया। कार्यक्रम निर्माण अब से कार्यकारिणी समिति का कार्य है।

मेरा मानना है कि यह ऐसी त्रुटि है जिसका आई. एस. ए. को आगे अफसोस होगा। अपनी दक्षता और रूचियों के कारण चुने गये आई एस ए सदस्यों के बजाय, हमने कार्यक्रम को सेक्टोरियल हितों वाले लोगों को, समय आवंटन पर वार्ता करने के लिए दे दिया है। यदि कार्यकारिणी समिति में एक गुट का वर्चस्व/बोलबाला है, तो वह एक सही एकीकृत कार्यक्रम को तैयार नहीं कर पायेगी। यदि कार्यकारिणी समिति बुरी तरह से विभाजित है तो यह अप्रकार्यात्मक गतिरोध को पैदा कर सकता है। मैं आशा करता हूं कि आई एस ए अपने निर्णय को बदल देगी और उपाध्यक्ष कार्यक्रम को गौरव का स्थान एवं स्वतन्त्रता देगी।

## >आकार का प्रभाव

उपस्थिति में वृद्धि और भौगोलिक वितरण के सकारात्मक पक्ष स्पष्ट हैं। आई एस ए और अधिक समावेशी बन गई है। परन्तु समावेशी होने का मतलब अपवर्जन भी हो सकता है। 1959 में प्रतिभागियों में महत्वपूर्ण माने जाने वाला तकरीबन प्रत्येक विद्वान सम्मिलित थे। छोटे समूहों वाली बैठकों में विचारां के वास्तविक आदान–प्रदान किया जाता था।

6000 लोगों, भारी संख्या में शोध समितियाँ और अन्य विशिष्ट बैठकों के साथ, असली बहस के लिए यहां कोई समय नहीं है। सत्रों में चार या पांच पत्र वाचन होते थे जो कि अंत में एक या दो प्रश्नों के लिए खुले होते हैं। अधिकांश प्रतिभागी निष्क्रिय प्रतिभागी बन जाते हैं।

असली बहस और/या सहयोगी कार्य को चाहने वाले लोग कांग्रेस के बाहर छोटी बैठकें आयोजित कर बेहतर करते हैं। हम सभी के पास सीमित उर्जा, समय और धन हैं। बड़ा आकार अधिक समावेश की अनुमति देता है परन्तु यह पलटाव को भी प्रोत्साहित करता है। यहां कोई भी आसान समाधान नहीं है। शायद हम स्व–संगठित छोटे समूहों की एक कांग्रेस बना सकते हैं जहां कोई पत्र वाचन नहीं होगा और किसी ठोस समस्या के इर्द गिर्द बहस होगी। इसे संयोजित करना बहुत कठिन होगा, और शायद, यह सुझाव आदर्शवादी है। परन्तु यह भी प्रोग्राम समिति जो उन लोगों के द्वारा नहीं बनाई गई हो जिसकी रूचि विशिष्ट संगठनात्मक रूचियों को बढ़ावा देने और बनाये रखने में हो, की आवश्यकता की ओर इंगित करती है। ■

इमानुअल वालरस्टीन से पत्र व्यवहार हेतु पता :
<immanuel.wallerstein@yale.edu>

# > वैश्विक लोकतांत्रिक शासन में आई.एस.ए. का योगदान

**अल्बर्टो मार्टिनेली,** मिलान विश्वविद्यालय, इटली, अंतराष्ट्रीय सामाजिक विज्ञान परिषद के वर्तमान अध्यक्ष और आई. एस. ए. के पूर्व अध्यक्ष 1998-2002

*अलबर्टो मार्टिनेली*

पीछे देखते हुए, हम यह स्वीकारते हैं कि समाजशास्त्र और इसके अंतराष्ट्रीय परिषद आई. एस. ए. दोनों ने प्रभावशाली प्रगति की है; आगे देखते हुए, हमें यह एहसास होता है कि इन्हें वास्तव में वैश्विक बनाने के लिए बहुत कुछ करना है। प्रारम्भ से ही अंतर्राष्ट्रीय समाजशास्त्र को बढ़ावा देना आई. एस. ए. के प्रमुख लक्ष्यों में से एक था। समाजशास्त्र के अंतर्राष्ट्रीयकरण के लिए आई. एस. ए. अध्यक्षों ने अलग अलग तरीकों से योगदान दिया है। उदाहरण के लिए, अध्यक्ष के रूप में मेरे कार्यकाल 1998–2002 में, हमने पीएचडी छात्रों के लिए प्रयोगशाला खोली, एक प्रोग्राम जो निरन्तर बढ़ा है, जैसा कि वरिष्ठ और कनिष्ठ समाजशास्त्रियों के मध्य योकोहाम संवाद ने दर्शाया।

हालाँकि सही अर्थों में वैश्विक समाजशास्त्र के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए बहुत कुछ किया जाना है। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए आई एस ए दो कारणों से कोशिश जारी रखेगी : पहला, वैश्विक समाजशास्त्र के विकास को बढ़ावा देना समाजशास्त्रीय लेखन की गुणवत्ता में सुधार लाता है और इसे सबके लिए अधिक प्रासंगिक बनाता है; द्वितीय, एक मजबूत आई एस ए (अन्य अंतर्राष्ट्रीय एपिस्टेमिक समुदायों के साथ) बेहतर दुनिया के लिए लोकतांत्रिक वैश्विक शासन के विकास में योगदान देती है।

विज्ञान के रूप में समाजशास्त्र का मुख्य उद्देश्य और प्रयोजन कोई भी नहीं बदला है, परन्तु आई. एस. ए. की तरह, वे भी वैश्वीकृत हो गये हैं। समाजशास्त्रीय अन्वेषण के मूल में जार्ज सिमेल द्वारा पूछा गया प्रश्न हों : समाज कैसे संभव है, अर्थात् किस तरह सहयोग को बढ़ावा दिया जा सकता हैं कि बुनियादी आवश्यकताएँ पूरी हों, सामाजिक पुनरूत्पत्ति की गारण्टी हो और संघर्ष विनियमित हो। यह सभी शास्त्रीय चिन्तकों आई एस ए के संस्थापकों, मेरी और अगली पीढ़ी के समाजशास्त्रियों की मुख्य चिंता का विषय है। यह प्रश्न अभी भी केन्द्र में है परन्तु अब इसे विश्व के स्तर पर पूछा जाना चाहिए, और यह और कठिन प्रश्न हो जाता है, क्योंकि 21वीं सदी की सामाजिक दुनिया एक एकल व्यवस्था और खण्डित दुनिया दोनों ही है।

शास्त्रीय समाजशास्त्र का, चाहे मार्क्स या परेटो जैसे विश्व अर्थव्यवस्था और समाज के सिद्धान्तकारों, या वेबर या दुर्खीम जैसे महान तुलनाकारों के रूप में, वैश्विक परिप्रेक्ष्य था। परन्तु बाद में, जब मैं 1960 के उत्तरार्ध और 1970 के दशक के प्रारम्भ

> >

में बर्कले में अध्ययन कर रहा था–पेशेवर समाजशास्त्र राष्ट्रीय सीमाओं के अन्दर अधिक से अधिक सीमित हो गया था। यह नजरिया/प्रवृत्ति अब संभव नहीं है : समकालीन वैश्वीकरण का सिर्फ यह तात्पर्य नहीं है कि दुनिया अध्ययन की नई वस्तु है अपितु यह कि कोई भी विशिष्ट अध्ययन (उदाहरण के लिए, यूरोप या अफ्रीका में परिवार प्रतिमान या चीनी या ब्राजील फर्म में औद्योगिक सम्बन्ध) न सिर्फ तुलनात्मकहै, अपितु वे वैश्विक संदर्भ में गढ़े गये हैं। चूंकि प्रत्येक क्षेत्र कई अन्य से अधिक से अधिक अन्योन्याश्रित हैं और इस तरह विश्व अपने सभी हिस्सों में अधिकाधिक मौजूद है। हमारे शब्दकोश में 'ग्लोकल' शब्द अब नवनिर्मित नहीं है।

आज का और कल का समाजशास्त्र वैश्विक के अलावा कुछ नहीं हो सकता। इसे वैज्ञानिक और विवेचनात्मक होना होगा, और इसे स्पष्ट पहचान की आवश्यकता है परन्तु उसी समय इसे सामाजिक विज्ञानों के मध्य और उनमें व सहयोग भौतिक जौर जैविक विज्ञानों के बीच अंतवैषयिक सहयोग के विकास के लिए खुला होना चाहिए। यह अंतिम अपेक्षा अंतर्राष्ट्रीय सामाजिक विज्ञान परिषद (ISSC), सामाजिक विज्ञानों की अंतर्राष्ट्रीय संगठनों और राष्ट्रीय शोध परिषदों का छात्र संगठन, का मुख्य सांस्थानिक उद्देश्य है। हाल ही के ISSC के प्रमुख कार्यक्रम–जिनके विकास में मैंने अध्यक्ष होने के नाते योगदान दिया–सभी सच्चे वैश्विक वैज्ञानिक सहयोग को विकसित करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। हाल ही में प्रकाशित विश्व सामाजिक विज्ञान प्रतिवेदन विश्व के सभी क्षेत्रों में पर्यावरण पर समाजशास्त्रीय अनुसंधान की स्थिति का एक समृद्ध चित्र प्रस्तुत करती है। यह आनलाइन उपलब्ध है और पढ़ने याग्य है। तीसरे विश्व सामाजिक विज्ञान मंच (जो डरबन में सितम्बर, 2015 में आयोजित किया जा रहा है) की थीम वैश्विक न्याय है; मैं सभी समाजशास्त्रियों को इस महत्वपूर्ण अंतर्राष्ट्रीय मंच जो मिलिनियम डेवलपमेंट गोल के पुनर्मूल्यांकन के साथ एक ही समय में होगा, में भाग लेने के लिए गर्मजोशी से आमंत्रित करता हूं। पंचवर्षीय पर्यावरण अनुसंधान कार्यक्रम फ्यूचर अर्थ का समन्वय ISSC और ICSU (भौतिक और जैविक विज्ञानों की समानांतर छत्र संगठन) द्वारा संयुक्त रूप से किया जायेगा; ISSC विशेष रूप से उप प्रोजेक्ट सबहनीयता के लिए रूपान्तरण का प्रबंधन करेगी।

आई. एस. ए. स्वयं के द्वारा और ISSC एवं ICSU के भीतर, वैश्वीकरण के विभिन्न आयामों पर बौद्धिक रूप से ईमानदार और कुशल विश्लेषण को उत्तेजित कर और वैश्विक एजेण्डा पर समस्याओं, जैसे वैश्विक असमानता और वैश्विक न्याय, के प्रभावी समाधान के सुझाव प्रदार कर एक वैश्विक भूमिका निभाता है। अन्य अंतर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक संघों के साथ, आई एस ए वैश्विक लोकतांत्रिक शासन के लिए काफी तरीकों से उल्लेखनीय रूप से योगदान दे सकती है। पहला, जहां अधिकांश प्रभावशाली वैश्विक कर्त्ता–जैसे शक्तिशाली सरकारें, बहु–राष्ट्रीय निगम और कट्टरपंथी धार्मिक या राष्ट्रवादी आंदोलन, आत्महित/स्वार्थ, शक्ति में वृद्धि या भौतिक लाभ से प्रेरित है और एक अनुपम Weltan schauung (विश्वदृष्टि) सार्वभौतिक मूल्यों के अनुसार काम कर रही अंतराष्ट्रीय वैज्ञानिक संघ, को अधिरोपित करने का प्रयास करते हैं। हर किसी का वैज्ञानिक उपलब्धि, शिक्षण की क्षमता और पेशेवर नैतिकता, न कि लिंग, नस्ल, आयु या राष्ट्रीयता के आधार पर मूल्यांकन होता है। द्वितीय, अंतर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक संघ मतांधता और कट्टरपन के खिलाफ प्रभावी प्रतिकार कर सकते हैं। हमारे वैज्ञानिक कार्य में हम भिन्न और यहां तक कि परस्पर विरोधी विचारों का सामना और विरोधी मतों को तार्किक संगति और आनुभाविक परीक्षण के संदर्भ में निष्पक्ष मूल्यांकन के विपरीत राय प्रस्तुत करने के आदी होते हैं। विज्ञान का विमर्श अनिवार्य रूप से मतांधता के खिलाफ और सार्वभौमिक है। तृतीय, जहां व्यापार की सुविधा या कूटनीति की जरूरतें अक्सर सरकारों और निगमों को एक आँख बंद करने या दोनों आँखें मूँद लेने केलिए दबाव डालती हैं, अंतर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक संघ, यद्यपि वे भी पूर्ण रूप से स्वतन्त्र नहीं है, इन अधिकारों की रक्षा में अधिक मुखर और स्पष्ट हो सकते हैं। आई. एस. ए. ने विचारों, भाषण, शिक्षण और वैज्ञानिक जाँच की स्वतन्त्रता की रक्षा करने में एक प्रासंगिक भूमिका निभाई है और निभाती रहेगी। चौथा, यद्यपि सामाजिक विज्ञानों में अंतर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक संघ भाषाओं और सँस्कृतियों के आधिपत्य की व्यापक समस्याओं का सामना करते हैं, फिर भी वे एथनोसेन्ट्रिज्म ethnocentrism की जोखिमों के बारे में अधिक जागरूक प्रतीत होते हैं।

ये कुछ ऐसे प्रासंगिक तरीकें हैं जिसके माध्यम से आई. एस. ए. और अन्य और अंतर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक संघ वैश्विक शासन में योगदान और आर्थिक एवं सांस्कृतिक प्रभुत्व में सन्तुलन बनाये रखने में लाभकारी सिद्ध हो सकते हैं। लेकिन प्रभावी होने के लिए, इन संघों की सदस्यता बढ़नी चाहिए और इन्हें अपने प्रोजेक्ट और गतिविधियों के दायरे को आगे और विकसित करना होगा।

चूंकि एक वैज्ञानिक विषय के रूप में समाजशास्त्र का जनादेश समकालीन सामाजिक सम्बन्धों की जटिलता का अन्वेषण करना है, जटिल विश्व में शांतिपूर्ण ढंग से रहने, विविधता में एकता को पहचानने, शांति, विस्तार सम्बन्धी न्याय, व्यक्तिगत स्वतन्त्रता और सांस्कृतिक बहुलवाद को बनाये रखने में आई. एस. ए. एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। समाजशास्त्री तब प्रासंगिक होते हैं जब वे सिर्फ सामाजिक प्रघटनाओं के शुद्ध वर्णन और व्याख्या में न लगे हों। समाजशास्त्री विश्वास योग्य तब होते हैं जब वे व्यापक लक्ष्यों को प्राप्त करने में दृढ़ और समर्पित वैज्ञानिकों के रूप में योगदान देते हैं। आज की संघर्षग्रस्त दुनिया/विश्व, समस्याग्रस्त लोगों, अदूरदर्शी नेताओं को अच्छे समाजशास्त्रियों की आवश्यकता है। हमें विश्व के समाजशास्त्रीय समुदाय की प्रतिभा और संसाधनों को संघटित कर, अपनी जिम्मेदारी पर खरा उतरना चाहिए। ■

अलबर्टो मार्टिनेली से पत्र व्यवहार हेतु पता :
<alberto.martinelli@unimi.it>

# > 'प्रत्यक्षवादी' घोषणापत्र

**पिओटर स्टोम्का,** जेगीलोनियन विश्वविद्यालय, क्राको, पोलैण्ड एवं ISA के भूतपूर्व अध्यक्ष, 2002-2006

*पिओटर स्टोम्का*

आप विश्वास करे अथवा न करे, योकोहामा में हुई समाजशास्त्र की विश्व काँग्रेस मेरे लिए ग्यारवीं कांग्रेस है। मैंने 1970 में ISA के साथ सम्बन्ध स्थापित किया। उस समय पूर्वी यूरोप में पहली बार वरना, बल्गारिया में विश्व कांग्रेस हुई थी। अब चालीस वर्ष के उपरांत मुझे अतीत में झौंकने एवं भविष्य की संभावनाओं को तलाशने का अवसर मिला है। एक सिद्धांतकार के रूप में मैं हमेशा सामान्य प्रवृत्तियों को तलाशता हूं और इस संदर्भ में मैंने दो प्रवृत्तियों को रेखांकित किया है। पहली प्रवृत्ति लाभकारी है जो हमें खुश होने के लिए तर्क प्रदान करती है जबकि दूसरी प्रवृत्ति चिन्ताजनक है और यहां तक कि खतरनाक है।

ISA की महान उपलब्धि पश्चिमी यूरोप एवं अमेरिकन केन्द्रीयता से परे जाना है। यह स्थिति पूर्वी यूरोपियन समाजशास्त्र की महत्वपूर्ण सहभागिता से प्रारम्भ हुई है। नई दिल्ली में एशिया ने शक्तिशाली रूप से प्रवेश किया एवं मैक्सिको में एक सजग एवं समृद्ध लैटिन अमरीकी समाजशास्त्र अस्तित्व में आया। ब्रिसबेन में और उसके बाद अब योकोहामा में हमने प्रशांत (पेसीफिक) क्षेत्र की प्रभावी सजगता को पाया है जबकि डरबन में अफ्रीकन समाजशास्त्र ने अपनी नवाचारी भूमिका को उपस्थित किया था। अब हम वास्तव में अंतराष्ट्रीय संघ बन गये हैं। केवल जनवादी चीनी गणतंत्र अपनी शक्तिशाली समाजशास्त्रीय उपलब्धियों एवं गतिशीलता के साथ इस संघ से दूरी बनाये हुए है। लेकिन योकोहामा में चीनी समाजशास्त्रियों की उपस्थिति एक आशावादी संकेत है।

मुझे आशा है कि हम न केवल अंतराष्ट्रीय होंगे अपितु राष्ट्रीय सीमाओं से परे होंगे (ट्रांसनेशनल)। विज्ञान की अपनी कोई पितृ भूमि नहीं है और समाजशास्त्र को किसी राष्ट्रीय सीमा में बँधा हुआ नहीं होना चाहिए; मेरे लिए पॉलिश समाजशास्त्र, फ्रांसीसी समाजशास्त्र, ब्राजीलियन समाजशास्त्र जैसी शब्दावली के केवल प्रशासनिक संदर्भ हैं। इनका कोई और गहरा अर्थ नहीं है। मैं 'अनेक सामाजिक विश्वों के लिए एक समाजशास्त्र'[1] के लिए तर्क देता हूँ।

समाजशास्त्री समुदाय का कमोबेश वैश्विक विस्तार दो प्रभावों को व्यक्त करता है; प्रथम, हमारे अनुसंधान का एजेण्डा बहुत समृद्ध हुआ है और यह जीवन, आकांक्षाओं एवं वचन के विभिन्न तरीकों के लिए अनेक अन्तरदृष्टि प्रदान करता है तथा दूसरे, निर्धनता, दमन, भेदभाव एवं वचन के क्षेत्रों के लिए समाजशास्त्रियों में एक सशक्त एवं व्यापक किस्म की भावनात्मक अथवा नैतिक संवेदनशीलता में उभर आया है। हालांकि औपचारिक तर्क के अन्तर्गत मूल्य केन्द्रित निर्णय तथ्यों को स्वीकृत नहीं करते अथवा तथ्यों से निर्मित नहीं होते परंतु समाजशास्त्रीय दृष्टि से ऐसा होता है। मानव अस्तिव के काले पक्षों अर्थात् निराशाजनक पक्षों से जुड़े हुए शक्तिशाली अभिलेखीय तथ्य हमारी नैतिक चेतना को गत्यात्मक करते हैं, हमें आक्रोशित करते हैं, और हमारे मूल्यों को रूपांतरित करते हैं। मैं इसे तर्कयुक्त न कहकर समाजशास्त्रीय न्यायोचित कथ्य की संज्ञा दूंगा2। ISA का विस्तार इन दोनों ही प्रभावों के संदर्भ में अत्यंत सकारात्मक एवं प्रशंसनीय है।

अभी तक सब कुछ अच्छा है परंतु दुर्भाग्यजनक रूप से एक अन्य प्रवृत्ति भी उभरी है। नवीन सीमाएं और यहां तक कि मजबूत दीवारों का अर्थ है कि समाजशास्त्रीय समुदाय विभाजित रहता है हालांकि विभाजन के आधार बदल गये हैं। मेरी उपस्थिति वाली पहली कांग्रेस में यह विभाजन भू–राजनीतिक था। पोलैण्ड,

> >

बल्गारिया, चेकोस्लोवाकिया, रूस से आये समाजशास्त्रियों को निर्धन सहयोगियों के रूप में स्वीकारा जाता था। हममें से बहुत से लोग जो इस लोहे के पर्दे के पीछे थे, इसके लिए आंशिक रूप से उत्तरदायी रहे हैं। हम एक संगठित प्रतिनिधि–मण्डल के रूप में अपने मान्य नेताओं के साथ आए, और हमने खुले विमर्श में भाग लेने के प्रति उपेक्षा अपनायी और स्थापित विषयों से सम्बन्धित शोध पत्र प्रस्तुत किये बजाय इसके कि हम राजनीतिक दृष्टि से संवेदनशील मुद्दों पर अपने पक्ष रखते। वरना में मेरा स्वयं का प्रथम शोध पत्र ''समाजशास्त्र में उद्देश्यपरक भाषा'' (टीलियोलॉजिकल लेग्वेंज इन सोशियोलॉजी) पर केन्द्रित था।

लेकिन 1980 के दशक के अंत में जब भू–राजनीतिक दीवारें टूटी एवं नई सीमाएं तेजी से विकसित हुई । पहली बार यह विभाजन वैश्विक वर्ग–विभाजन पर आधारित था; निर्धन दक्षिण से सम्बन्धित समाजशास्त्रियों ने समृद्ध उत्तर के समाजशास्त्रियों के विरूद्ध स्वयं को प्रस्तुत किया। इसमें अमेरिकावाद का विरोध एवं यूरोप की समाजशास्त्रीय विरासत के प्रति अविश्वास मुख्य से निहित था। इसके उपरांत अस्मिता केन्द्रित विभाजन उभरे तथा भू–राजनैतिक एवं वर्ग–निर्देशित विभाजन के स्थान पर सांस्कृतिक विभाजन महत्वपूर्ण हो गये। कुछ विभाजनों ने लैंगिक आधार का अनुकरण किया जबकि एक नवीन प्रकार का राष्ट्रवाद, जो कि सांस्कृतिक विशेषताओं पर केन्द्रित था, ने भाषायी संघर्षों को जन्म दिया जिसके कारण अंग्रेजी के स्थापित 'भाषायी साम्राज्यवाद' को चुनौती मिली।

हालांकि यह स्थितियाँ चिन्ताजनक हैं परंतु ये सभी सीमा रेखाएं वास्तविक विभाजनों को व्यक्त करती हैं। समाजशास्त्रीय समुदाय वृहद् समाज का एक लघु रूप है और यह समुदाय अपने आपको विज्ञान से परे तनावों एवं संघर्षों से ऊपर उठने के लिए संघर्षरत है। हम इसे समझ सकते हैं पर इसे भुलाया नहीं जा सकता।

हाल ही में एक अन्य विभाजन भी सामने आया है, जो कि ज्ञानमीमांसीय असहमति से जुड़ा है। हममें से कुछ, जो छुपे हुए मौन बहुसंख्यक हैं, यह विश्वास करते हैं कि समाजशास्त्र का मुख्य जुड़ाव उस बौद्धिक प्रयास से है जो सामाजिक जीवन के नियमन एवं उसके विभिन्न तरीकों की विकसित समझ प्रदान करता है। यह समझ एक व्यवस्थित एवं पद्धतिशास्त्र से नियंत्रित अनुसंधान से विकसित होती है। समाजशास्त्र इस दृष्टि से विज्ञान के अत्यंत निकट है, हालांकि इसकी अनेक स्पष्ट विशेषताएं मानविकी एवं कला के निकट हैं। यदि इन सारे दृष्टिकोणों पर हमने व्यापक सहभागिता नहीं की होती, तो फिर समाजशास्त्र की इस कांग्रेस में अच्छे समाजशास्त्रीय अनुसंधान पर आधारित सशक्त शोध–पत्र नहीं आते, जो हमें विश्व के हर कोने से प्राप्त हुए।

ज्ञान–मीमांसीय विभाजन के दूसरे छोर पर एक मुखर एवं दृश्य अल्पसंख्यक खड़ा है जिसके लिए समाजशास्त्र एक क्रांतिकारी योजना (प्रोजेक्ट) है जिसका लक्ष्य जन साधारण को लामबंद करना है। कुछ भ्रामक 'स्वदेशी समाजशास्त्रों' का समर्थन करते हुए इनमें समग्र पश्चिमी समाजशास्त्रीय परंपराओं के विरूद्ध असंतोष/आक्रोश दिखाई देता है।

'विज्ञान के रूप में समाजशास्त्र' बनाम 'क्रिया के रूप में समाजशास्त्र' एवं 'सार्वभौमिक ज्ञान के रूप में समाजशास्त्र' बनाम 'संदर्भ–सापेक्ष अनुभव के रूप में समाजशास्त्र' ऐसी विभाजन रेखाएं हैं जो विवाद उत्पन्न करती हैं। मैं भूतपूर्व अध्यक्ष, माइकल बुरावे का मजबूती से समर्थन करता हूं जो मुझे 'अंतिम प्रत्यक्षवादी' कहकर पुकारते हैं। मैं वास्तव में खुश हूं, मैं 'अंतिम लेनिनवादी' के बजाय 'अंतिम प्रत्यक्षवादी' कहलवाना अधिक पसंद करता हूं। समाजशास्त्री क्रांतियाँ उत्पन्न करने में अच्छी भूमिका नहीं निभा रहे हैं और जो करते हैं वे ढोंग या बहानेबाजी करते हैं, जैसे स्नातक छात्रों को लाल–टीशर्ट पहनाना, या अकादमिक सत्रों को राजनीतिक प्रदर्शनों में परिवर्तित करना।

समाजशास्त्री विश्व के निर्धन, शोषित, हाशिए पर स्थित तथा निष्कासित लोगों के भविष्य के लिए उत्तरदायी/जिम्मेदार सामाजिक तंत्र एवं व्यवस्था को समझने के लिए ठोस अनुसंधान करके सबसे बड़ी सेवा प्रदान कर सकते हैं। यदि कोई वास्तव में एक असमान और अन्यायपूर्ण समाज में बदलाव लाना चाहता है तो सबसे पहले उसे इसे समझना होगा। कार्ल मार्क्स को विचारों के इतिहास में 'कम्यूनिस्ट मैनीफेस्टो' के कारण अपितु 'दास कैपिटल' के कारण याद किया जायेगा, जिसमें उन्होंने बुर्जुआ समाज के वर्गव्यवस्था का परीक्षण अथवा मूल्यांकन किया है। उन्होंने अधिकांश जीवन पुस्तकालयों में व्यतीत किया न कि मोर्चाबंदी में।

विद्वतापूर्ण मूल्यों, जैसे तर्क, अनुसंधान और तार्किक तर्कों की शक्ति के माध्यम से पर्याप्त विवेचन, अच्छी तरह से स्थापित स्पष्टीकरण बेहतर व्याख्याताओं की खोज तथा समाज की गहरी समझ का लक्ष्य इत्यादि पर ध्यान केन्द्रित करके अतिरिक्त लाभ प्राप्त किया जा सकता है, जो समाजशास्त्रीय समुदाय के भीतर एकमत्यतता/सहमति निर्मित करने हेतु स्थान उपलब्ध कराता है। वैज्ञानिक मूल्य एकजुट करते हैं जबकि राजनीति, वर्ग या संस्कृति में निहित स्वार्थ विभाजनकारी हैं।

राजनीति को राजनीतिज्ञों के लिए तथा विचारधारा को क्रांतिकारियों के लिए छोड, हमें पुनः अपने काम पर लौटना चाहिये। समाजशास्त्रीय संघ को विचारधारायी संघर्ष का अखाड़ा नहीं बनाना चाहिए अपितु अकादमिक बहस का कार्यक्षेत्र बनना चाहिए। ISA के बारे में मेरा सपना है कि यह सामाजिक आंदोलन, श्रमिक संघ या राजनीतिक दल के बजाय एक अत्यधिक विद्वतापूर्ण समाज बने। ISA के सत्रों में अकादमिक सेमीनारों की झलक हो बजाय उसमें राजनीतिक प्रदर्शनों या रैलियों के, जहां नारों का स्थान तर्क ले और इसका अनुसरण करने की बजाय क्रिया से पूर्व चिन्तन किया जाये। मैं ISA को तर्क के सार्वभौमिक मूल्यों तथा ज्ञान की खोज के लिए, विविध विशिष्ट हितों द्वारा उत्पन्न किये गये विभाजन के अतिरिक्त एकजुट देखने का इच्छुक हूं।

जैसा कि एंटोनियो ग्राम्शी कहते थे 'सामाजिक मामलों में भविष्यवाणी करना, भविष्यवाणी को सच बनाने के लिए कार्य करने के समान है। यह हम सभी पर निर्भर करता है कि हम ISA को 'राजनीतिक रूप से सही' और फैशनएबल प्रवृत्तियों के विपरीत धकेले/अग्रसर करें। हमारे पिछले अध्यक्ष के दिल के सबसे करीब एक प्रसिद्ध कथन को यहां प्रस्तुत करता हूं, 'सभी देशों के समाजशास्त्री, एक हो जाओ।' हां, निश्चित रूप से, परन्तु अगली पंक्ति को मत भूलिए : 'अपनी विचारधारायी जकड़न/बेड़ियों के अलावा तुम्हारे पास खोने के लिए कुछ नहीं है, परंतु जीतने के लिए ज्ञान का पूरा विश्व है।' ■

पिओटर स्टोम्का से पत्र व्यवहार हेतु पता : <ussztomp@cyf-kr.edu.pl>

[1] **Sztompka, P. (2009) "One Sociology or Many?" Pp.21-29 in Sujata Patel (ed.)** *The ISA Handbook of Diverse Sociological Traditions*. **Los Angeles: SAGE.**

[2] **Sztompka, P. (2007) "Return to Values in Recent Sociological Theory."** *The Polish Sociological Review*, **3/159: 247-261.**

[3] **See our heated debate in** *Contemporary Sociology* **40(4): 388-410.**

# > डिजिटलीकरण, अनुशासनात्मकता एवं विपत्ति की चुनौतियाँ

**मिचेल विवोरका,** फाउंडेशन हाउस ऑफ हयूमन साइसेंस, पेरिस, फ्रांस एवं ISA के भूतपूर्व अध्यक्ष 2006-2010

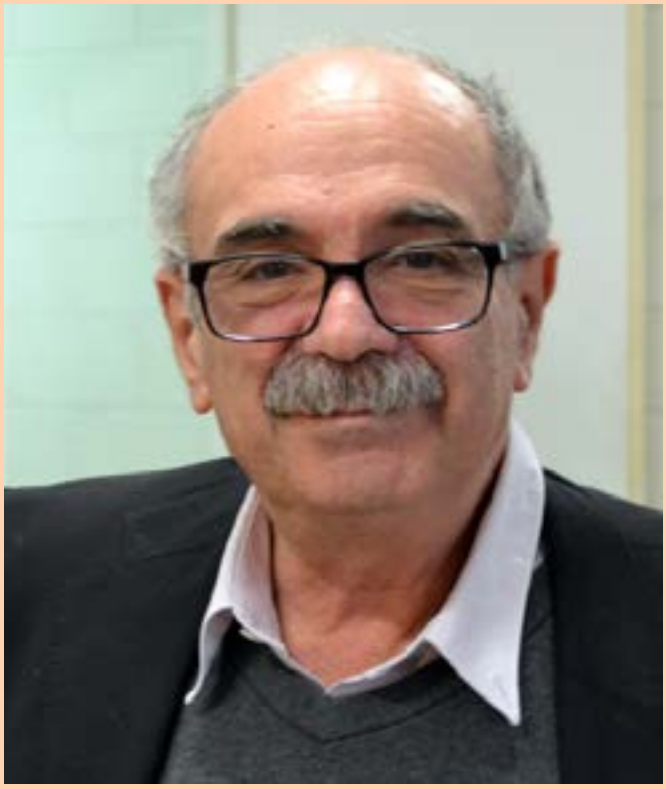

*मिचेल विवोरका*

आई.एस.ए. का अध्यक्ष होना मेरे लिए गर्व व खुशी की बात थी और इससे मैं बहुत लाभान्वित भी हुआ। अब चार वर्षों के बाद मैं अपने एसोसिएशन के विषय में सबसे पहले तीन सूक्ष्म बिंदु बताना चाहता हूं।

पहला, हम हमेशा से ही जानते हैं कि ISA उन समाजशास्त्रियों के लिए खुला है जो राजनीतिक कारणों से हमारे साथ आसानी से सम्मिलित नहीं हो सकते हैं, जैसा कि शीत युद्ध के दौरान समाजवादी देशों का मामला था और अभी हाल ही में ताइवान के एसोसिएशन के समावेशन के द्वारा उत्पन्न कूटनीतिक मुद्दों के कारण चीन के एसोसिएशन में भी हुआ। मैं आज वास्तविक प्रगति देखकर खुश हूं, साथ ही चीन में सुधार व सामाजिक रूपांतरण विषय पर हमारी कांग्रेस के दौरान एक रूचिपूर्ण कार्यक्रम को देखकर खुश हूं जिसे जिसे चीन व जापान की समाजशास्त्रीय समितियों ने एक साथ मिलकर आयोजित किया।

दूसरा, हम समाजशास्त्री सांस्कृतिक विविधता के महत्व को समझते हैं, इसे हमें हमेशा अपने बीच जीवित रखना होगा। यही कारण है कि अपने सत्र काल के दौरान मैंने हमेशा बहुभाषावाद के लिए संघर्ष किया। हमें केवल अपनी तीन मान्य/अधिकारिक भाषाओं का प्रयोग करना ही नहीं आना चाहिए अपितु, जापानी सहित, जब हम जापान में मिलते हैं, अन्य भाषाओं में संपर्क करना भी आना चाहिए। 1982 में मैक्सिकों में,हमारे पास अंग्रेजी व फ्रेंच केवल दो मान्य/अधिकारिक भाषाएं थी, परंतु हमारे सहयोगियों/सहकर्मियों और लातिन अमेरिका के विद्यार्थियों द्वारा हम पर अत्यधिक दबाव डाला गया तथा स्पेनिश भाषा को एसोसिएशन की तीसरी मान्य भाषा के रूप में प्रस्तुत किया गया और यहां, योकोहामा में, मैं प्रतिगमन से बचने का एक और अधिक सक्रिय प्रयास देखना चाहता था : इस कांग्रेस में हमारे पोस्टर केवल अंग्रेजी में है। परंतु कोई प्रयास या किसी कल्पना का प्रयोग नहीं किया गया : उदाहरण के लिए, उद्घाटन सत्र के दौरान स्क्रीन पर सभी उपशीर्षक केवल अंग्रेजी भाषा में थे, कम से कम जापानी भाषा में क्यों नहीं थे? और ना ही अध्यक्षीय सत्र के दौरान समानान्तर रूप से कोई अनुवाद प्रस्तुत किया गया। निश्चित रूप से यह महँगा होता है, परंतु आर्थिक कारण इसका स्पष्टीकरण नहीं है जिसे समाजशास्त्रियों द्वारा बिना किसी चर्चा/बहस के स्वीकार कर लेना चाहिए। यदि हम रहना, सोचना व पढ़ना केवल अंग्रेजी में करते हैं, यदि हम अपना अध्यक्ष केवल पश्चिमी विश्वविद्यालयों से चुनते हैं, तो हम कहां जा रहे हैं? समाजशास्त्र के पश्चिमीकरण के परिणामस्वरूप पश्चिमी या अमेरिकी प्रभुत्व के तहत नृजातिकेंद्रवाद के उत्पन्न होने का खतरा है। हां, जब यह एक प्रकार के प्रभुत्व के रूप में हमारे सामने आता है, जिसका अक्सर उल्लेख भी होता है, तो हमें सार्वभौमिकतावाद के तरीके की आलोचना करनी चाहिए। हमें सार्वभौमिक मूल्यों पर चर्चा करनी चाहिए, उन्हें पुनः स्थापित करने के लिए, न कि समाजवैज्ञानिकों के सम्पूर्ण समुदाय पर नृजाति केन्द्रित पश्चिमी व्यवस्था को थोपने के लिए।

> >

तीसरा, ISA एक संस्था है जो ज्ञान के उत्पादन व प्रसार के लिए सहायता प्रदान करती है। हां, हम एक वैज्ञानिक और बौद्धिक स्पेस के रूप में ISA को पसंद करते हैं, उदाहरण के लिए इसकी अनुसंधान समितियों के साथ, परंतु हमें अपनी व्यक्तिगत व सामूहिक गतिविधियों के विकसित करने के लिए भी संस्थाओं की आवश्यकता होती है। समाजशास्त्रीय अनुसंधान को किसी भी प्रकार के हितों के अधीनस्थ नहीं बनने देना चाहिए, भले ही वे आर्थिक, वैचारिक या राजनीतिक हों। अनुसंधान क्रिया अनुसंधानकर्त्ताओं की जिज्ञासा से निर्देशित होनी चाहिए, जोखिम लेने को भी तैयार रहना चाहिए, हमें अत्याधुनिक अनुसंधान को प्रोत्साहित करना चाहिए। मैं आर्थिक दिखावा करने के विरूद्ध नहीं हूं अगर उपयोगी अनुसंधान किया जा सकता है, जिसे माइकल बुराबे 'लोक समाजशास्त्र' (पब्लिक सोशियोलाजी) की संज्ञा देते हैं। मुझे उसका एक लंबा अनुभव है, मेरा मतलब है कि मैं एकांत में काम करने वाला अलगवित/पृथकतावादी शिक्षक नहीं हूं। परंतु जब हम ज्ञान का उत्पादन और प्रसार जिम्मेदारी से करते हैं, हमें पूर्ववर्ती व आलोचनात्मक होने के लिए स्वतंत्रता की जरूरत होती है–एक ऐसी स्वतंत्रता जिसे संस्था की आवश्यकता होती है जो इसके अस्तित्व की स्थितियों को सुनिश्चित करती है। अब मैं उन तीन चुनौतियों की बात करता हूं जिनका सामना हम समाजशास्त्रियों के रूप में करते हैं।

## > डिजीटल युग की चुनौती

हम इंटरनेट, नयी प्रौद्योगिकी और वृहद् डेटा (प्रदत्त) के माध्यम से तेजी से बदलते एक विश्व में प्रवेश कर रहे हैं। समाजशास्त्र एक नये युग में प्रवेश कर रहा है। हमारे सोचने का तरीका, हमारी वस्तुएं, हमारी पद्धतियां, हमारे पैराडिम, हमारे विश्लेषण करने के उपकरण बदल रहे हैं। इसका अर्थ है कि नवीन संभावनाएं उत्पन्न हुई हैं। हमें अन्य कर्त्ताओं, जो कला, मानविकी, जीव विज्ञानों से सम्बद्ध हैं, को शामिल करते हुए, नये प्रकार के सहयोग के साथ, भिन्न तरीके से काम करना होगा। प्रकाशन के आर्थिक मॉडल पर व्यापक बहस के साथ लेखन व प्रकाशन बदल रहे हैं, लोग खुले वातावरण को अपना रहे हैं। पुस्तकालय एक बहुत महत्वपूर्ण परंतु अपरिचित भूमिका का निर्वाह करेंगे। हम अन्य कर्त्ताओं द्वारा ज्ञान के उत्पादन के क्षेत्र में चुनौती प्राप्त करेंगे, जो व्यापक बौद्धिक, वित्तीय और व्यवहारिक संसाधनों को लामबंद करने/जुटाने में समर्थ है। नई प्रकार की असमानताएं उत्पन्न होंगी, उदाहरण के लिए उन लोगों के बीच जो वृहद डाटा (प्रदत्त), नवीन कठिन नियमानवलियों का उपयोग करने के लिए धन का प्रयोग करते हैं और वे जो ऐसा नहीं कर पाते। पिछले 20 सालों के दौरान 'वैश्विक' (ग्लोबल) शब्द का प्रयोग हममें तेजी से बढ़ा है, अब हम एक बिल्कुल भिन्न युग में, जो कि वैश्विक है परंतु डिजीटल भी है, में प्रवेश कर रहे हैं।

## > अति–विशेषज्ञता और अनुशासनात्मकता के खतरे

दुनिया भर में हमारे विषय का प्रसार हो रहा है। युवा अनुसंधानकर्ता मेरी पीढ़ी की तुलना में सुप्रशिक्षित हैं, औसतन, ज्यादा बेहतर हैं। उनमें विश्व के प्रति खुलापन भी अधिक है। वे नेटवर्क में, एक पूर्णतः अंतराष्ट्रीय जीवन में सहभागिता करते हैं जो 30 या 40 साल पहले आम था। परंतु वे अधिक विशेषज्ञता प्राप्त भी है। एक सीमित/प्रतिबंधित समस्या के विश्लेषण में अक्सर गहनता से जुड़ते हैं, उदाहरण के लिए, राजनीतिक या ऐतिहासिक मुद्दों पर समाजशास्त्रियों के रूप में सामान्य चर्चाओं पर सहभागिता किये बिना एक विशिष्ट उपागम का विकास करते हैं। यह एक चुनौती उत्पन्न करता है : कि हम कैसे विखण्डन या अति–विशेषज्ञता का विरोध कर सकते हैं? हम कैसे अपने विशिष्ट क्षेत्र से सामान्य चिन्तन की ओर जा सकते हैं? हमें विशिष्ट हितों को वैश्विक, क्षेत्रीय, राष्ट्रीय और स्थानीय स्तरों पर सामान्य बहस के द्वारा संयुक्त या स्पष्ट करना चाहिए। एक भिन्न तरीके से कहें तो, हमें समाजवैज्ञानिक और बुद्धिजीवी दोनों होनो चाहिए। हमें अति–विशेषज्ञता की प्रवृत्तियों को नहीं स्वीकारना चाहिए, एक एसोसिएशन जैसा कि हमारा है और एक मीटिंग जैसे कि हमारी कांग्रेस होती है, क्यों इतने अधिक महत्वपूर्ण हैं? हम राष्ट्रीय और संस्थागत मान्यताओं या वैज्ञानिक दृष्टिकोणों के बजाय एक वैश्विक समुदाय का निर्माण करते हैं। यह सच है, अतीत में, कुछ सामान्य चर्चाएं वैज्ञानिक की बजाय विचारधारायी अधिक थी। परंतु हमें विशिष्ट हितों को सामान्य विनिमय में सहभागिता करते हुए नष्ट नहीं करना चाहिए।

इसके साथ ही, जब हम बहु–अनुशासनात्मकता का समर्थन करते हैं, हम यह भी जानते हैं कि विश्वविद्यालय एवं हमारी शिक्षण प्रणलियां इसे बढ़ावा देने में मदद नहीं करती। विषयों के अलगाव/पृथक्करण को तोड़ने में, अनुशासनात्मक मान्यताओं को चुनौती देने तथा उन पर निर्भर अनुसंधानकर्त्ताओं के करियर में समाजशास्त्रियों को सबसे आगे रहना चाहिए।

## > विपत्ति/संकट का सामना

मैं एक आशावादी की तरह नए सामाजिक सम्बंधों को उत्पन्न करने या संस्थाओं को रूपांतरित करने के लिए सामाजिक आंदोलनों और संघर्षों पर विश्वास करता हूं। परंतु विश्व के जिस हिस्से में मैं रहता हूं और अन्य कहीं भी, मैंने देखा है कि 'संकट' संघर्षों या सामाजिक और सांस्कृतिक आंदोलनों की तुलना में अधिक मजबूत होते हैं। हिंसा, लोकप्रियतावाद, राष्ट्रवाद, नस्लवाद, अज्ञात जनथीति (जीनोफोबिया/अज्ञात के प्रतिभय), कट्टरवाद या क्षेत्रवाद जिन्हें हम विरोधी–आंदोलन कह सकते हैं, बढ़ रहे हैं, इसलिए सामाजिक आंदोलनों के सिद्धांत में हमें विरोधी आंदोलनों की उत्पत्ति व भूमिका को भी शामिल करना चाहिए। एलेन टॉरेन के एक शिष्य के रूप में मैंने हमेश विश्लेषण की इस बात का अनुसरण किया। हमें विपत्ति/संकट पर अपने पूर्व व्यवसाय के अंश के रूप में विचार करना चाहिए। हां, सामाजिक आंदोलनों और विरोधी आंदोलनों का अध्ययन समाजशास्त्र के लिए एक प्राथमिकता है। हमें व्यक्तियों की विषयपरकता के साथ–साथ सामूहिक क्रिया के तर्कों को भी शामिल करना चाहिए और विषयपरकताकरण (सब्जेक्टिवेशन) की प्रक्रियाओं और वि–विषयपरकतावरण (डी–सब्जेक्टिवेशन) की प्रक्रियाओं पर गंभीरता से सोचना चाहिए। ■

मिचेल विवोरका से पत्र व्यवहार हेतु पता : <wiev@msh-paris.fr>

# > सस्ते टमाटरों के पीछे :

## दक्षिण इटली में प्रवासी श्रमिक

**मिमो पिरोता,** बर्गामो विश्वविद्यालय, इटली

*इटली की टमाटर फसल के दौरान प्रवासी श्रमिक कार्य करते हुए।*

फ्रांस के राष्ट्रीय दूरदर्शन France 2 ने सितम्बर 2013 में दक्षिण इटली के पुगलिया के प्रवासी कृषि श्रमिकों की रिहायशी और कार्य की स्थितियों के बारे में एक नाटकीय रिपोर्ट प्रस्तुत की। Les re'cottes de la honte (The Harvest of Shame) नामक रिपोर्ट ने पुगलिया में उगाये जाने वाले टमाटर और ब्रोकली, जो ऑचन, कारफोर और लेर्स्लक जैसे फ्रैंच सुपर बाजारों में विक्रय किये जाते हैं, के उगाये जाने व प्रक्रमण करने का विवरण दिया और फ्रांस के उपभोक्ताओं को स्मरण कराया कि उनका भोजन इन कृषि श्रमिकों की कम मजदूरी के कारण सस्ता है।

अन्य यूरोपीय मीडिया ने भी इसी तरह दक्षिण इटली के प्रवासी श्रमिकों पर ध्यान केन्द्रित किया है। नार्वे में पुगलिया के टमाटर उत्पादकों के शोषण के विरोध में एक अभियान चलाया गया जिसने नार्वे के यूनियन एवं सुपरबाजार की श्रंखलाओं पर इटली की श्रम यूनियन और उत्पादक यूनियन पर कृषि उत्पादन में ''नैतिक माप दण्डों'' को प्रोत्साहित करने के लिए दबाब डाला। ब्रिटिश पत्रिका द इकोलोजिस्ट ने दो रोचक अन्वेषण प्रकाशित किये। अगस्त 2011 में प्रकाशित प्रथम ने ''पेलाती'' (पूरे छिले डिब्बाबंद टमाटर) की आपूर्ति श्रंखला का वर्णन किया : बसिलिकाटा में टमाटर अफ्रीकी हाथ से बीनने वालों द्वारा उगाये जाते हैं, कंर्जव इतालिया और ला डोरिया जैसी कम्पनियों द्वारा प्रसंस्कृत किये जाते हैं और अंत में ब्रिटिश सुपर बाजार (सेन्सबरी, वेटरोज, टेस्को मौरिसन इत्यादि) द्वारा बेचे जाते हैं। फरवरी 2012 में प्रकाशित दूसरे ने रोसार्नो (केलेब्रिया) में संतरा चुनने वालों की स्थिति का विश्लेषण किया। उन्होंने कोको–कोला कंपनी व उसके द्वारा नियंत्रित ब्रांड फाँटा आरेंज को

> >

उनके द्वारा केलेब्रियन व्यापारियों को संतरे के लिए दिये जाने वाले दामों को सार्वजनिक रूप से घोषित करने का आह्वान किया।

इन अखबारी रिपोर्टों के अनुसार, दक्षिण इटली में कृषि निम्न मजदूरी, ग्रामीण इलाकों या फिर बड़ी बस्तियों और कच्ची बस्तियों में परित्यक्त घरों में रहने को मजबूर कृषि श्रमिकों पर निरंकुश श्रम नियंत्रण, अर्द्ध–कानूनी कार्य, कृषि श्रम ठेकेदारों (कैपरोली) की गहन उपस्थिति और कृषि उत्पादों की कीमतों पर गिरावट का दबाब एवं व्यापारियों और विशाल सुपर बाजार श्रंखलाओं द्वारा स्थानीय उत्पादकों पर प्रतिबंध से चरितार्थ होती है। हकीकत में, प्रवासी कृषि श्रमिकों की कार्यशील एवं रिहायशी स्थितियाँ अन्य यूरोपीय देशों में भी ज्यादा बेहतर नहीं हैं : पूरे महाद्वीप पर कृषि श्रमिक कठिन परिस्थितियों का सामना करते हैं चूंकि यूरोपीय कृषि गहन कृषि के 'कैलिफोर्निया माडल' का अनुकरण करती हैं जिसमें अप्रवासियों का गहन शोषण होता है।

1970 के दशक के बाद से, दक्षिण इटली विदेशी अप्रवासियों के लिए एक गंतव्य क्षेत्र बन गया है। अधिकारिक आंकड़ों के अनुसार, दक्षिण इटली में तकरीबन 110,000 विदेशी कामगार हैं और कम से कम इतने ही अनियमित कामगार हैं : ट्यूनिशियाई और मोरोक्को निवासी (मुख्य रूप से सिसिली और कम्पानिया के ग्रीन हाउसों में), भारतीय (मुख्य रूप से पशुओं की खेती में), सब–सहारा अफ्रीकी और पूर्वी यूरोपीय।

पुगलिया और बसिलिकाटा क्षेत्र, जहां मैंने क्षेत्र कार्य किया, दोनों ने ही जून और अक्टूबर के मध्य, विशेष रूप से फसल के समय टमाटर की खेती के लिए श्रम की उंची मांग का अनुभव किया है। टमाटर कम्पानियों के डिब्बाबंदी कारखाने में जाते हैं जहां उन्हें इटली का सबसे प्रसिद्ध एवं सर्वाधिक निर्यातित एक खाद्य उत्पादं पेलाती में बदल दिया जायेगा। हर गर्मियों में, ज्यादातर उप–सहारा अफ्रीका और मध्य एवं पूर्वी यूरोपीय देशों से 13,000 से 20,000 प्रवासियों के बीच काम की तलाश में आते हैं। कुछ उप–सहारा अफ्रीकी कृषि श्रमिक सहारा रेगिस्तान और भूमध्यसागर के पार खौफनाक सफर तय कर; सर्दियों में कैलाब्रिया के साइट्रस फलों और बसन्त में केम्पानिया की स्ट्राबेरी तोड़ कर (कई इटली के दक्षिण ाी क्षेत्र के फसल चक्र का) अनुकरण करते हैं। कई वर्षों तक उत्तरी इटली के कारखानों में कार्य करने के कारण, अन्य अफ्रीकी कृषि श्रमिकों के पास आवासीय परमिट हैं। आर्थिक संकट के बाद निकाल दिये जाने के कारण अब वे दक्षिण इटली के खेतों पर काम ढूँढने के लिए संघर्षरत हैं।

पूर्व–यूरोपीय अक्सर स्थायी निवासी हैं; रोमानियन इटली में विदेशी नागरिकों का सबसे बड़ा समूह है। श्रम की अधिकतम मांग के समय के दौरान, इनमें से कई यूरोप के अन्य भागों से या फिर अपने देश से अस्थाई रूप से दक्षिण प्रवास कर जाते हैं और फिर टमाटर फसल की कटाई के मौसम की समाप्ति के पश्चात घर लौट जाते हैं। फसल की अवधि के दौरान मौसमी श्रमिक ग्रामीण इलाकों में कच्ची बस्तियों में रहते हैं। यदा कदा 'मानवतावादी हस्तक्षेप' के अलावा, वे शायद ही कभी ट्रेड यूनियनों या स्थानीय संस्थाओं के साथ अन्तर्क्रिया करते हैं। फसल के मौसम की समाप्ति के पश्चात वे अन्य क्षेत्रों में अन्य कच्ची बस्तियों में चले जाते हैं।

प्रवासियों का आवास और रोजगार अक्सर कैपोरेली, अनौपचारिक कृषि श्रम ठेकेदारों, जो कृषि श्रमिकों के समान नागरिकता वाले होते हैं, के द्वारा आयोजित किये जाते हैं। वे यह सुनिश्चित करते हैं कि कर्मीदल को कुशलता से उन्हीं व्यवसायों में लगाया जाएं जहां उनकी मांग है। कैपोरेली कृषि श्रमिकों एवं उनके नियोक्ताओं दोनों को सेवाएँ प्रदान करते हैं : वे फसल कटाई के दौरान आवास, खेतों, रेलवे स्टेशनों और सुपर बाजारों तक परिवहन के साथ साथ भोजन, पानी और उधार भी प्रदान करते हैं।

सबसे महत्वपूर्ण बात, कैपोरली काम की निगरानी करते हैं और नियोक्ता व्यक्तिगत कृषि श्रमिक को भुगतान करने की बजाय कैपोरेल को भुगतान करते हैं। तोड़े गये प्रत्येक 300 किलो टमाटर के कंटेनर पर, कैपोरेल को 3, 5 और 6 यूरों के बीच मिलता है; वह फिर श्रमिकों को, दलाल की फीस, खेतों तक परिवहन की लागत और जो कुछ श्री श्रमिक के आवास, भोजन, पानी और उधार की जो राशि बनती है, काट कर भुगतान करता है। इस मात्रानुपाती दर व्यवस्था के अन्तर्गत शक्तिशाली एवं सबसे अनुभवी बीनने वाला प्रति दिन 80–100 यूरो कम लेता है लेकिन सुस्त को केवल 20 यूरो तक मिलते हैं।

कैपोरली अपनी शक्ति (और लाभ) श्रमबल के पृथक्करण और प्रतिस्पर्धियों की अनुपस्थिति से प्राप्त करते हैं। यूरोप और इटली के अन्य भागों के विपरीत, यहां मौसमी श्रम कोटा, सार्वजनिक नौकरी केन्द्र या औपचारिक निजी बिचौलियों (सहकारी समितियाँ, अस्थायी रोजगार एजेन्सियाँ) जैसे सरकारी हस्तक्षेपों का बहुत कम प्रभाव है। आर्थिक संकट ने विभिन्न देशों और विभिन्न कानूनी स्थितियों वाले श्रमिकों के मध्य प्रतिस्पर्धा को तीव्र कर दिया है। यह एक ऐसा तथ्य है जो कार्यवाही के सामूहिक रूपों को व्यवस्थित करना मुश्किल बनाता है।

कार्य की खराब परिस्थितियों, निरंकुश श्रम नियन्त्रण और कम मजदूरी से निपटने के लिए श्रमिकों के पास भिन्न रणनीति है। 'रोमानियन' और 'बुल्गारिया निवासियों' का सबसे लाभदायक संसाध ान उनकी गतिशीलता है : उनके पास यूरोप में आने जाने की स्वतन्त्रता है, वे पूर्वी यूरोप, जहां जीवनयापन की लागत और मजदूरी अभी भी पश्चिमी यूरोप से कम है, से आ जा सकते हैं और काम की तलाश में कहीं भी जा सकते हैं। इसके विपरीत, अफ्रीकी प्रवासियों की अधिक अस्थिर कानूनी प्रस्थिति कई चुनौतियाँ प्रस्तुत करती हैं जिसमें कार्यस्थल संघर्ष, ''नृजातीय'' संघर्ष (जैसे जनवरी 2010 में केलेब्रिया में हुआ रोसार्नो विद्रोह) और यूनियन संघर्ष (जैसे 2011 में नार्डो, पुगलिया में विदेशी कृषि श्रमिकों द्वारा आयोजित हड़ताल) सम्मिलित हैं।

2014 में, यूरोप के जनसंचार द्वारा चलाये गये अभियानों, गैर सरकारी संगठनों, उग्रवादी नेटवर्क और प्रवासी वकालत संघों के साथ साथ इन संघर्षों ने पुगलिया और बसीलीकाटा के क्षेत्रीय प्रशासन द्वारा कृषि श्रमिकों का स्वागत केन्द्रों में मेजबानी, कम्पनियों द्वारा सार्वजनिक नौकरी केन्द्रों द्वारा श्रमिकों को को काम पर रखना और प्रसंस्कृत टमाटर एवं अन्य कृषि उत्पादों के लिए नये 'नैतिक' ब्रांड बनाने के लिए प्रेरित किया। 2014 के टमाटर फसल के दौरान ये हस्तक्षेप असफल हो गये : एक बार फिर किसानों ने फसल कटाई के दौरान कैपोरोली की मध्यस्थता के माध्यम से श्रमिकों को काम पर लेना पसन्द किया और बहुत ही कम मौसमी श्रमिकों ने बस्तियों में कैपोरली द्वारा गारण्टी दिया गया रोजगार छूटने के डर से, स्वागत केन्द्रों की मेजबानी को स्वीकार किया। ■

डोमेनिको पेरोता से पत्र व्यवहार हेतु पता : <domenico.perrotta@unibg.it>

# > सहकारिता के खिलाफ हड़ताल :

## मार्ग दिखाते हुए प्रवासी

**डेवी सच्चेतो**, पडोवा विश्वविद्यालय, इटली

*बिना दस्तावेज के कामगारों को अपराधी करार देने वाले बोसी फिनि कानून और सहकारी संस्थाओं के खिलाफ हडताल करते हुए।*

इटली का राष्ट्रीय हड़ताल आयोग हड़ताल के अधिकार की निगरानी व नियंत्रण करता है और तथाकथित सार्वजनिक सेवाओं–आवश्यक परिवहन, अत्यावश्यक स्वास्थ्य सेवाएँ, स्थानीय और राष्ट्रीय आपात स्थिति में हड़ताल से उपभोक्ताओं की रक्षा करता है। 2013 में, रसद क्षेत्र में हड़ताल के बाद, आयोग ने फैसला किया कि दूध एक बुनियादी आवश्यकता है; इसके फलस्वरूप दूध के किसी भी ब्रॉंड की ढुलाई को बाधित करना–चाहे कितने भी ब्रांड अभी भी उपलब्ध हों–आवश्यक सार्वजनिक सेवा में व्यवधान माना जाता है। जब बोलोग्ना में मुख्यालय बाली इतालवी भोजन कम्पनी, ग्रेनार्लो लाजिस्टिक्स की उप–अनुबंधित सहकारी समिति के कुछ सौ प्रवासी मजदूर हड़ताल पर गये, तो आयोग ने उनकी गतिविधियों को प्रतिबंधित कर दिया। लेकिन दूध के कई ब्रांड किसी भी इतालवी सुपर बाजार में उपलब्ध हैं, दूध एक बुनियादी जरूरत हो सकती है, परन्तु ग्रेनार्लो ब्रांड को अपरिहार्य के रूप में वर्णित करना मुश्किल है।

इटली की सहकारी समितियाँ, उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में शोषण के सबसे खराब स्वरूप और इटली से उत्प्रवास से बचने के लिए, आत्मरक्षा के एक रूप में गठित हुई थी। 1920 के दशक के शुरूआती समय तक, सहकारी प्रणाली, विशेष रूप से उत्तरी और मध्य इटली में इतनी मजबूती से स्थापित हुई कि फासीवादी शासन ने भी इसे नष्ट करने की हिम्मत नहीं उठाई। हालाँकि, हाल के दशकों में सहकारी समितियाँ तीव्र गति से बढ़ी हैं और उनके बड़ी कम्पनियों के उप–ठेकेदारों के रूप में सेवा प्रदान करने से नई गतिविधियों में उनकी भागीदारी विस्तृत हुई है। अपने कार्य के एक बड़े भाग को बाहर देने वाली कम्पनियों के अनुरोध के प्रति सहकारी समितियों ने तेजी से जवाब दिया है।

इस बदलाव के साथ, सहकारी समितियों के अन्दर–साथी कार्यकर्त्ता और गैर–साथी कार्यकर्त्ता दोनों के लिए कार्य की परिस्थितियाँ खराब हुई हैं। सहकारिता लोकतंत्र और साझेदारों और सहकारी समितियों की संचालन समितियों के मध्य भागीदारी का पतन हुआ है। नृजातीय आधार पर श्रमबल का पृथक्करण किसी भी सहकारी समिति की एकजुटता के विघटन के लिए अक्सर पहला कदम होता है। 2011 में इटली की 43000 सहकारी समितियों में कर्मचारियों की संख्या तकरीबन 1.3 मिलियन थी जो देश के लाभप्रद रोजगार प्राप्त व्यक्ति का 7.2 प्रतिशत थी। उनका वार्षिक कारोबार 140 बिलियन यूरो या इटली की GDP का 7 प्रतिशत था। सहकारी समितियाँ रसद, बड़े खुदरा, निर्माण और सहायक निजी एवं कम्पनी की सेवाओं के लिए महत्वपूर्ण हैं। रसद क्षेत्र में, कुल श्रमसंख्या का एक चौथाई सहकारी

>>

समितियों में नियोजित है और वे राष्ट्रीय एवं बहुराष्ट्रीय उद्यमों के उप–ठेकेदारों के रूप में कार्य करती हैं। रसद क्षेत्र में कुछ सहकारी समितियाँ कानूनी रूप से अधिकृत अस्थाई श्रमशक्ति एजेंट के रूप में भूमिका निभाती हैं।

कई कम्पनियाँ लागत को कम करने और प्रतिस्पर्धा को बढ़ाने के लिए अपनी उत्पादन प्रक्रिया के बड़े से बड़े हिस्से को बाह्य स्त्रोतों को ठेके पर देती हैं–और सहकारी समितियों के पास गैर भागीदारों को छोड़ यहां तक कि अपने भागीदारों के बीच समान अधिकारों की रक्षा हेतु कम से कम जगह होती है। उत्तरी इटली के बड़े क्षेत्रों में, स्थानीय सार्वजनिक संस्थाएँ, सहकारी समितियाँ और श्रम संगठन घनिष्ठ रूप से जुड़े हैं। ये ''सामाजिक समरसता'' की रक्षा करने और स्थानीय औद्योगिक हितों का समर्थन करने के लिए चाहे अतिच्छादी राजनैतिक स्थिति नहीं तो समान स्थिति को अपनाते हैं। कैथोलिक और पूर्व साम्यवादी सहकारी समितियाँ खुद को एक ही संघ L'alleanza delle cooperative italiane (The Alliance of Italian Coopearatives) जिसमें इटली की 90 फीसदी से भी अधिक सहकारी समितियां शामिल हैं, से जुड़ा पाती हैं। इन सभी को दक्षता की अनिवार्यता का पालन करना पड़ता है। पूर्व कम्यूनिस्ट और "Alliance" का सबसे महत्वपूर्ण परिसंघ Legacoop इटली की सबसे बड़ी अस्थाई कार्य ऐजेन्सियों में से एक Obiettivo Lavaro का मालिक है।

ग्रेनार्लो लाजिस्टिक्स के लिए कार्य कर रही सहकारी समितियों में कुलियों का अभियान 2011–14 में उत्तरी इटली में आपूर्ति और संचार को प्रभावित करने वाले प्रतिरोध और हड़तालों की श्रंखला में से एक है। इनमें से कई उत्तरी अफ्रीका के प्रवासी हैं और पिछले दस वर्षों में ये बड़ी संख्या में उप ठेका सहकारी समितियों द्वारा नियोजित किये गये हैं। कुछ मामलों में हड़ताली प्रवासियों को निकाल दिया गया; उन्हें अपने इतालवी निवास के अधिकार को खोने के जोखिम का खतरा है जिससे वे बिना दस्तावेज के विदेशी बन जायेंगे।

पहला महत्वपूर्ण विरोध मिलान से थोड़ा ही दूर पियासेन्जा में 2011 की गर्मी से शुरू हुआ जब बड़ी परिवहन कम्पनी के उप ठेके वाली सहकार समिति में कार्य कर रहे कामगारों, अधिकतर प्रवासी, ने गतिवर्धन की शिकायत और अधिकारों के अभाव के साथ उच्चतर मजदूरी की माँग करते हुए अपने औजार रख दिये। अधिकारिक इतालवी ट्रेड यूनियनों ने हड़तालियों को रोक कर रखा। हालांकि, इस उप–ठेके वाली सहकारी समिति में हड़ताल सफल रही; श्रमिकों ने राष्ट्रीय अनुबंध, वेतन में वृद्धि, अवकाश और बीमारी भुगतान को हासिल करने में कामयाबी प्राप्त की, कामयाबी जिसने बाद में औद्योगिक कार्यवाही को प्रेरित किया।

सबसे महत्वपूर्ण अभियान 2012 में पियासेन्जा के Ikea गोदाम में हुआ। सहकारी कामगारों, जो ज्यादातर उत्तर अफ्रीका से थे, ने बेहतर मजदूरी, कार्य की थोड़ी धीमी गति और नियमित श्रम अनुबंध की मांग रखी। कामगार Ikea गोदाम के सामने हड़ताल पर बैठ गये। पुलिस को बुलाया गया, जिसने कामगारों को पीटा और धरने को तोड़ दिया गया। कुछ महीनों के कभी कभी के औद्योगिक कार्यवाही और इटली में शॉपिंग मॉल में Ikea शापिंग सेंटर के सामने धरनों के द्वारा कामगार बेहतर कार्य की स्थितियों को प्राप्त में सफल हुए। उनके उदाहरण जल्दी ही अन्य Ikea शापिंग सेंटर पर फैल गये। यह आंदोलन पियासेन्जा, बोलोग्ना, पडुआ, वेराना सहित इटली के औद्योगिक गढ़ में कई परिवहन केन्द्रों में स्पष्ट काम ठहराव, धरने और प्रदर्शनों द्वारा चिन्हित थे। इन हड़तालों और प्रदर्शनों के दौरान विश्वविद्यालय छात्रों, आकस्मिक युवा कामगार और वामपंथी सामाजिक केन्द्रों से सम्बन्धित लड़ाकों ने सस्ते अस्थाई श्रम के एक स्त्रोत के रूप में सहकारी समितियों के इस्तेमाल का प्रतिरोध कर कामगारों की मदद की । तथापि, इस अभियान की सफलता उत्तर अफ्रीकी पड़ोस के मध्य संचार के चैनलों पर निर्भरता और विशाल अरब स्प्रिंग प्रदर्शनों से प्राप्त प्रेरणा से प्रभावित थी।

कई प्रवासी कामगार उप ठेके वाली सहकारी समितियों में उत्पादन चक्र से काफी परिचित थे और इसलिए वे कम्पनी को अधिकतम आर्थिक क्षति पहुँचाते हुए मजदूरी में घाटे को कम करने में सक्षम थे। इसके अलावा, इन्होंने ट्रेड यूनियन और कार्यकर्त्ताओं के साथ भी घनिष्ठ रूप से काम किया। परन्तु बहुत से प्रवासी मजदूर संगठित होने के नये तरीके ढूँढ रहे हैं; वे पारंपरिक ट्रेड यूनियनों को संचालन गतिविधियों को बाहर देने हेतु प्रबंधकों को अनुमति देते हुए, यथा स्थिति बनाये रखने में संलग्न देखते हैं।

इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि मजदूर उप ठेके वाली सहकारी समितियाँ की व्यवस्था से छुटकारा पाना चाहते हैं क्योंकि वे मानते हैं कि ''कम्पनियों से सीधे सामना करना बेहतर है।''

हालाँकि, इन घटनाओं ने कार्यकर्त्ताओं के मध्य इस व्यापक विश्वास के बावजूद कि उप ठेके का पारंपरिक सहकारिता से बहुत कम लेना देना है इतालवी सहकारिता आंदोलन के समग्र रूप के अन्तर्गत पुनर्विचार को प्रोत्साहित नहीं किया है। संक्षेप में निर्दिष्ट, इटली में सहकारी आंदोलन अपने प्रारंभिक लक्ष्य और आदर्शों से काफी छितर गया है। प्रवासी श्रमिक सभी को इस विचलन का स्मरण करा रहे हैं–और 16 अक्टूबर 2014 को रसद क्षेत्र के श्रमिकों की एक अन्य आम हड़ताल व्यापक रूप से सफल रही। ■

डेवी सच्चेतो से पत्र व्यवहार हेतु पता :
<devi.sacchetto@unipd.it>

## > युवा इतालवी पुरूष

# आर्थिक संकट का कैसे सामना करते हैं?

**लुईजा एम. लिओनिनि,** मिलान विश्वविद्यालय, इटली

22 वर्षीय माइकल लगभग एक वर्ष से मिलान के अब फैशनेबल इलाके में एक प्रसिद्ध शराब घर में काम करता है। तय अवधि अनुबंध के साथ वेटर का कार्य उसे सामाजिक नेटवर्क के माध्यम से मिला। उसके पिता भी शहर के उसी इलाके में एक दुकान में क्लर्क के रूप में काम करते हैं। यद्यपि उसका मुख्य काम ''एपेटाइजर बनाना'' है, माइकल को लगता है कि उसकी ''तरक्की'' हो रही है और वह अपने कार्यक्षेत्र में अधिक विशेषज्ञ और जानकार हो रहा है। विशिष्ट रूप से, माइकल ने अपने नियोक्ता के लिए प्रशंसा व्यक्त की जो उसे वाइन–परिचारक (Sommelier) – वाइन प्रबंधक बनने की मूल बातें सिखा रहा है। माइकल की दृष्टि में यह कार्य वाइन–परिचारक के रूप में औपचारिक योग्यता प्राप्त करने के लिए पेशेवर कोर्स में प्रवेश लेने की तरफ पहला कदम है। कुल मिलाकर, माइकल अपने वर्तमान कार्य से संतुष्ट है। यह कार्य, उसे प्रति माह कुछ बचत करने और यह सोचने की अनुमति देता है कि किसी दिन वह अपना स्वतन्त्र व्यापार कर सकता है।

साक्षात्कार के दौरान माइकल से पूछा गया कि वह व्यस्कता को कैसे समझता है, जिसका उसने निम्न गद्यांश में वर्णन किया:

**माइकल :** सर्वप्रथम, व्यस्क बनने का अर्थ जिम्मेदारी है। जिम्मेदार बनना। चूंकि हर कोई कह सकता है, ''मैं व्यस्क हूं, मैं 21 वर्ष का हूं, मेरे पास कार है।'' परन्तु इसका कोई मतलब नहीं है। आप तब तक व्यस्क नहीं है जब तक आपको अपनी जिन्दगी से क्या करना है, यह अच्छी तरह से मालूम नहीं है। तुम तब तक व्यस्क नहीं हो जब तक तुम्हें मालूम नहीं ..... मुझे नहीं पता यह कैसे कहना चाहिए, ..... मेरे लिए व्यस्कता कार्य के बारे में है, आप जानते हैं परिवार के अन्तर्गत काम और जिम्मेदारी। उदाहरण के लिए मेरे अन्य दोस्तों की तुलना में मुझे लगता है, मैं अधिक परिपक्व हूं।

**शोधार्थी : परिपक्व से आपका क्या मतलब है?**

**माइकल :** परिपक्व होना भी मेरे लिये व्यस्क होना है..... क्योंकि मैं अपने परिवार का ध्यान रखता हूं, मैं बिलों का भुगतान करता हूं, मैं अपनी बहिन के छोटे बच्चों का ध्यान रखता हूं, मैं खाना पकाता हूं, मैं घर साफ करता हूं और मैं काम करता हूं। आप जानते हैं मेरी उम्र के कुछ ही लोग ऐसा करते हैं। परन्तु सबसे महत्वपूर्ण बात है कि मैं महत्वाकांक्षी हूं क्योंकि मैं अपना स्वयं का व्यवसाय शुरू करना चाहता हूं और मैं उस परिणाम को प्राप्त करने के लिए आवश्यक सभी चीजें करने की कोशिश कर रहा हूं।

अन्य उत्तरदाताओं की तरह, माइकल, व्यस्कता को सापेक्षिक संदर्भ में परिभाषित करता है–दूसरों का ध्यान रखने की क्षमता, स्वयं और स्वयं के परिवार के लिए जिम्मेदारी स्वीकार करने की क्षमता। व्यस्कता का यह वृतान्त उपभोग और सामाजिक गतिविधियों के क्षेत्र में युवाओं के छिछोरपन के बिल्कुल विपरीत है। माइकल के विचारों पर एक प्रतिष्ठित व्यस्क व्यक्ति की कार्य, परिवार और पितृत्व को परिभाषित करने वाली पारंपरिक ''पैकेज डील'' की उल्लेखनीय पकड़ है। यह विशिष्ट वृत्तान्त हालाँकि उसके परिवार में उसकी विशिष्ट स्थिति से पुष्ट होता है : उसके माता–पिता के अलग होने और उसकी बहन की गर्भावस्था के कारण माइकल अपने आप को परिवार की खुशहाली में योगदान देने वाले सबसे उपयुक्त सदस्य के रूप में देखता है। इस संदर्भीय ढाँचे में उसके लिए, उसके दोस्तों के जीवन का चरित्र चित्रण करने वाले युवा छिछोरेपन का अनुभव करना अपेक्षाकृत रूप से कठिन है और चूंकि वह एक अपेक्षाकृत स्थायी और अच्छे भुगतान वाली नौकरी को बनाये रखने में कामयाब हुआ है – माइकल उसकी परिवार भूमिका निर्वाह द्वारा आने वाली दिक्कतों व प्रयासों को व्यस्कता और पुरूषत्व के मूल्यवान चिन्ह के रूप में देखता है।

अपने अधिकांश दोस्तों की तुलना में, माइकल को आर्थिक संकट के संदर्भ में श्रम बाजार में अपेक्षाकृत विशेषाधिकृत पद प्राप्त है जो उसे बचत करने और एक ऐसे भविष्य, जहां बचत आर्थिक और सांकेतिक पूंजी में परिवर्तित होगी, की कल्पना करने की अनुमति देता है।

साक्षात्कारदाताओं का दूसरा समूह व्यस्कता को बहुत अलग ढंग से देखता है। माइकल के विपरीत, वे व्यस्कता को

>>

> *"उपभोग एक ऐसी मुख्य स्पेस है जहां आत्म–मूल्य और पहचान को प्राप्त कर सकते हैं"*

अवकाश और भोग के क्षेत्र में स्वायत्तता प्राप्त करने के संदर्भ में परिभाषित करते हैं। वे बचत के विचार को खारिज करते हैं और इस बात पर जोर देते हैं कि व्यस्क बनने का मतलब रोजाना 'बच कर' निकलना और जीने और कार्य करने की अनिश्चित और अस्थिर स्थितियों से निपटना है। यद्यपि उनकी विवादी स्थिति कुछ कुछ बदलती है, चूंकि वे भी पारंपरिक व्यस्कता को मानते हैं, यह समूह इस बात पर जोर देते हैं कि व्यस्क होने का अर्थ एक ऐसी जागरूकता प्राप्त करना है जो यह मानती है कि ''हर दिन आपका अंतिम दिन हो सकता है।'' पूर्व के समूह की भाँति, ये युवा लोग निम्न शैक्षणिक योग्यता (बहुधा इनका शैक्षणिक प्रक्षेप पथ व्यवधानों से चिन्हित होता है); सामान्यतः ये उन क्षेत्रों में कार्य करते हैं जो आर्थिक मंदी के ऋणात्मक प्रभावों से अधिक प्रभावित हुए हो या फिर निम्न दक्षता वाले पेशे जैसे निर्माण कर्मी, चौकीदार, बैरे, सामान स्थानान्तरित करने वाला इत्यादि जो उच्च स्तरीय अनिश्चितता से प्रभावित होते हैं।

हमारी प्राकल्पना, यद्यपि इसमें अभी ओर अन्वेषण की आवश्यकता है, है कि इस समूह के लिए व्यस्क जीवन में प्रवेश उनके समक्ष खुली सम्भावनाओं के रूप में परिभाषित किया गया है।

**फेडेरिको :** मैं सप्ताह में पांच दिन, दस घंटे प्रति दिन काम करता हूं। यह मेरे अनुबन्धित कार्य से 10 घंटे अधिक है और तुम जानते हो मैं कितना कमाता हूं? 600 यूरो प्रति महीना। मैं केशप्रसाधन कार्य क्षेत्र में कोई संभावना नहीं देखता जब तक कि आप अपना व्यवसाय नहीं शुरू करते। अच्छा, मुझे अभी वहां काम करते सिर्फ एक वर्ष हुआ है परन्तु मेरी सहकर्मी वहां 18 वर्षों से काम कर रही है और 1300 यूरो कमा रही है और आप 1300 यूरो में जीविका निर्वाह नहीं कर सकते।

**शोधार्थी : कमाये गये पैसों से आप क्या करते हैं?**

**फेडेरिको :** पहले मैंने कार खरीदी। फिर मैंने कपड़ों पर पैसे खर्च किये। आप को कुछ पसंद आता है और आप खरीद लेते हो; मैं इसके बारे में ज्यादा नहीं सोचता..... मैं यह तुच्छ वेतन को कमाने के लिए पसीना बहाता हूँ। यह मेरा पैसा है इसलिए मैं जाता हूँ और कुछ खरीद लेता हूं।

**शोधार्थी : क्या तुम कुछ बचत कर पाते हो?**

**फेडेरिको :** यदि मैं कुछ बचत कर पाता हूं तो मैं उसे टैटू गूदवाने के लिए काम में लेता हूं जो मेरा जुनून है। मुझे अपनी पूरी बाँह पर टैटू गुदवाना है परन्तु आप जानते हो टैटू गुदवाने में पैसे लगते हैं। (हँसते हुए)

युवा कर्मियों के इस बाद के समूह के लिए, उपभोग और अवकाश निवेश के लिए महत्वपूर्ण क्षेत्र हैं जो उन्हें व्यक्तिगत रूप में व्यस्क पहचान को और अधिक स्वायत्तता के माध्यम से विकसित करने की अनुमति देती है। यहां यह विरोधाभास प्रतीत होता है कि निम्न वेतन और भविष्य में कार्य के निम्न दृष्टिकोण इन युवा लोगों को उपभोग की प्रशंसा और बचत करने में असमर्थता की तरफ अग्रसर करते हैं। उनके समक्ष संभावनाओं और बाधाओं के विस्तार को देखते हुए शायद उपभोग एक ऐसी मुख्य स्पेस है जहां ये युवा व्यस्क आत्म–मूल्य और पहचान को प्राप्त कर सकते हैं जहां वे वयस्कों की तरह सक्षम स्वतन्त्रता और स्वायत्तता की भावना को अनुभव कर सकते हैं। ■

लुईजा एम. लिओनिनि से पत्र व्यवहार हेतु पता :
<luisa.leonini@unimi.it>

# > इटली में फ्रीलांस कार्य का उदय

**एलेसान्ड्रो गांडिनी,** मिलान विश्वविद्यालय एवं आई एस ए की पेशेवर समूहों का समाजशास्त्र शोध समिति की सदस्य (RC 52)

*सामुदायिक स्थान की मांग करते हुए टूरिन में फ्रीलाँसर द्वारा सह–कार्य।*

पिछले कुछ दशकों में, रचनात्मक और सांस्कृतिक उद्योगों के उदय ने बड़ी संख्या में, अधिकांशतः मीडिया आधारित व्यवसाय जो लोकप्रिय रूप में ''रचनात्मक वर्ग'' कहलाते हैं का सृजन किया है। आज इस विशाल कार्य बल ने प्रोजेक्ट आधारित और फ्रीलांस (स्वतंत्र) पेशों को मिला दिया है। कभी ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि इनके पास विकल्पों का अभाव है परन्तु ज्यादातर व्यक्तिगत पसंदों के परिणामस्वरूप क्योंकि ये कामगार अस्थिर वातावरण में पेशेवर और निजी क्षेत्रों में सन्तुलन को तलाशते हैं।

मिलान में, ज्ञान और रचनात्मक उद्योगों में फ्रीलांस पेरो नवाचार और आकर्षण पर केन्द्रित कार्यबल के उदय का पाठ्यपुस्तकीय उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। महत्वपूर्ण रूप से, पेशेवर सफलता के लिए प्रतिष्ठा का अधिग्रहण आवश्यक प्रतीत होता है। पत्रकारों, सलाहकार, संचार विशेषज्ञ, विडियो निर्माता–सभी फ्रीलांस पेशेवर जो अपने आप को अस्थिरता और उद्यमशीलता के आधे रास्ते में स्थित पाते हैं, को अपने आप को उस वातावरण में सफलता से स्थापित करने और नौकरियों को प्राप्त करने के लिए ''प्रतिष्ठा अर्थव्यवस्था'' के लूप को ट्रिगर करने के लिए आत्म ब्रांड प्रथाओं के प्रदर्शन करने की आवश्यकता है। यह ज्यादातर आमने–सामने होने वाली अंतक्रियाओं और सामाजिक मीडिया पर डिजीटल गतिविधि के माध्यम से अधिनियमित होता है। चूंकि अंतक्रिया अधिकांशतः दूरी पर होती है अतः यह अधिक केन्द्र में आ जाता है। प्रतिष्ठा को स्थापित करने के ये प्रयास अक्सर लंबे घंटों और प्रदर्शन करने पर दबाव डालने वाले ''अत्यधिक कार्य'' में फलित होते हैं जो इस क्षेत्र में काम की गुणवत्ता और नौकरी से सन्तुष्टि के बारे में आम धारणाओं को चुनौती देते हैं।

फ्रीलासिंग का तीव्र विस्तार यूरोप के रोजगार के समग्र आंकड़ों में स्पष्ट दिखाई देता है। फ्रीलांस कार्य एक तरफ तो स्वतन्त्र और आत्म संगठित कार्य जीवन की बढती आकाक्षांओं को संतुष्ट करता है, वहीं उसकी लोकप्रियता की व्याख्या करने के लिए ''पारंपरिक'' बजट की समझ रखने वाले कारणों की पेशकश भी करता है।

''रचनात्मक वर्ग'' के विचार के उत्सवी प्रसार के दस वर्षों से भी अधिक के बाद, ज्ञान उद्योग में रचनात्मक कामगारों की व्यक्तिगत उद्यमिता गतिविधि को प्रोत्साहित करने का दावा करने वाली दशकों की नीतियों ने प्रोजेक्ट आधारित और फ्रीलांस पेशों में कार्य करने वाले पेशेवरों का एक श्रम बाजार को पैदा किया है। ये पेशेवर ज्यादातर शहरों में रहने वाले और अस्थिरता एवं आत्म उद्यमशीलता के मध्य अस्थिर सन्तुलन के बीच पाये जाते हैं। निस्संदेह इस प्रकार के विकास का एक सटीक उदाहरण मिलान है।

> >

## >मिलान में फ्रीलांस कार्य

इस अध्ययन के लिए साक्षात्कारदाता फ्रीलांसर 19 से 60 आयुवर्ग के शहरी ज्ञान और रचनात्मक कामगार हैं जो संचार, जन–सम्पर्क मीडिया और डिजाइन के अन्तर्गत स्वतन्त्र पेशेवर के रूप में कार्य कर रहे हैं। ये ''फ्रीलांसर'' अर्थात लोग जो विभिन्न स्तरों पर कमीशन और अनुबंध नौकरियों पर कार्य करते हैं, करीबन 32000 यूरो की औसत सकल वार्षिक आय को रिपोर्ट करते हैं। यद्यपि, यह औसत उल्लेखनीय रूप से वेतन के ध्रुवीकरण को धुंधला कर देती है क्योंकि आधे से अधिक साक्षात्कारदाता 30,000 यूरो प्रति वर्ष से कम कमाते हैं।

मिलान में फ्रीलांसिंग को अक्सर दूसरे अच्छे विकल्प के रूप में देखा जाता है चूंकि स्टैण्डर्ड स्थायी नौकरियों को अभी भी काफी पसंद किया जाता है। 40 वर्ष की एक जन संपर्क सलाहकार, एक उत्तरदाता, ने ''फ्रीलांसिंग'' को कर्मचारियों को कम वेतन देने की रणनीति के रूप में बताया। उसने सुझाव दिया कि नौकरियों की ''.....'' आम तौर पर कार्य की अनुचित परिस्थितियों को छिपाती है। उसी प्रकार मिलान में बीस वर्षीय फ्रीलांस पत्रकार ने मिलान में फ्रीलांसिंग को ''एक स्थिति जिससे बचना चाहिए'' के रूप में वर्णित किया।

तथापि, कुछ उत्तरदाताओं ने फ्रीलांसिंग को नौकरी में अधिक स्वतन्त्रता और आत्म संगठन, दोनों ही जो फ्रीलांस पेशे के लिए अत्यन्त पुरुस्कृत पहलू माने जाते हैं, की पेशकश के रूप में वर्णन किया। एक मध्यम आयु वर्ग की महिला संचार पेशेवर ने कहा कि फ्रीलांस काम करने का मतलब है अपने समय को पुनः प्राप्त करना है। निजी एवं पेशेवर सम्बन्धों के मध्य सशक्त संपर्क की अनुभूति उसे निजी एवं कार्यशील जीवन के मध्य संतुलन लाने की अनुमति देती है।

## >एक प्रतिष्ठित अर्थव्यवस्था

फ्रीलांस कार्य, काम के महत्वपूर्ण हिस्से सामाजिक सम्बन्धों के मुँह जबानी, अनुशंसा, सिफारिशों और अंत में पेशेवर नेटवर्क में स्वयं की व्यक्तिगत प्रतिष्ठा के माध्यम से आयोजित किया जाता है। यह सामाजीकरण के आयाम को दर्शाता है। निस्संदेह, पेशेवर नेटवर्क में स्वयं की व्यक्तिगत प्रतिष्ठा एक स्वतन्त्र फ्रीलांसर की पेशेवर सफलता और कैरियर में प्रगति को निर्धारित करने वाला तत्व प्रतीत होता है। ''आत्म–उद्यम'' की छवि को सफलता से विकसित करने हेतु निजी ब्रांडिंग के तरीकों पर जोर नेटवर्किंग साधनों के महत्व को इंगित करता है।

उदाहरण के लिए, एक 48 वर्षीय महिला सलाहकार ने रिपोर्ट किया कि संकट के मध्य पिछली नौकरी से इस्तीफा देने के बाद, जब वह खुद को पुनः स्थापित कर रही थी तब कार्य क्षेत्र में उसकी प्रतिष्ठा चिंताजनक थी। त्यागपत्र देने के बाद उसने पेशेवर संदर्भ में सबसे अधिक प्रासंगिक और प्रतिष्ठित लोगों के साथ संपर्क और सामाजिक संबंध स्थापित किये। इस ''संबंध परक कार्य'' ने उसे पहला काम दिलवाया, जिसके तत्पश्चात् उसे विस्तारित नेटवर्क के माध्यम से नियमित रूप से कार्य मिला। कुछ काम उसे सीधा सामाजिक मीडिया के माध्यम से मिला क्योंकि नियोक्ताओं को उसकी लिंक्डइन की प्रोफाइल के साथ ट्विटर का पेशेवर प्रबंधन पसन्द आया। ज्ञान अर्थव्यवस्था में फ्रीलांस कामगारों की दैनिक दिनचर्या और कार्य इस तरह ''स्थिर रोजगार'' से जुड़े पारंपरिक कर्तव्यों से बहुत अलग है।

जैसे ये ''पोर्टफोलियो'' और ''सीमा–हीन'' कैरियर ज्ञान उद्योग में बढ़ रहे हैं, फ्रीलांस कामगार की सामाजिक नेटवर्कों, जहां सूचना मुंह जबानी प्रसारित होती है और व्यक्ति के काम प्राप्त करने के अवसरों के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण होती है, में सन्निहितता बढ़ जाती है। सामाजिक मीडिया पर पेशेवर छवि सफल पेशेवर जीवन के लिए आवश्यक हो गई है चूंकि डिजीटल पक्ष नेटवर्किंग निर्माण प्रथाओं में योगदान देती है और विस्तृत दूरी से प्रतिष्ठा को विकसित करने में मदद करता है।

## >क्या सह–कार्य इसका जवाब है?

जैसे बड़ी कम्पनियाँ रचनात्मक कामगारों को काम पर रखने के लिए प्रत्यक्ष रूप से कम सम्मिलित होती है, फ्रीलांसरों और स्वरोजगारों को सम्बन्धों के सामूहिक निर्माण वे सम्बन्ध जो भर्ती और रोजगार के व्यक्तिगत अवसरों को साकार कर सकें और सामाजिक पूंजी के प्रबंधन के लिए नये तरीकों की खोज करने के लिए बुलाया जाता है।

हालाँकि यह घर से कार्य करने की प्रवृत्ति में वृद्धि करता है। यद्यपि इस स्थिति से काफी साक्षात्कारदाता संतुष्ट थे, कई कामगारों के लिए यह स्थिति गृह कार्य दिनचर्या से अलगाव की भावना से राहत की एक विसरित इच्छा को पैदा करती है। इधर, नई संगठनात्मक व्यवस्थाएँ पैदा होती हैं, जैसा एक कनिष्ठ पेशेवर द्वारा अभिनीत जो अपने सहयोगी के साथ एक फ्लैट में रहने के निर्णय के बारे में बताता है। यह वह फ्लैट है जो एक बार में ही इनका घर भी है और उनके उद्घाटन (स्टार्ट–अप) का मुख्यालय भी।

फ्रीलांस स्थिति के कुछ समस्याग्रस्त पहलुओं पर प्रतिक्रिया देते हुए शहरों के अन्तर्गत नवीन नगरीय पुंज विकसित होते प्रतीत होते हैं। इस अर्थ में सबसे प्रमुख सह–कार्य के स्थानों का उदय है जो कामगारों को एक साझा वातावरण प्रदान करता है जहां वे अन्य फ्रीलांसरों के साथ सामाजिक नेटवर्किंग पर संलग्न होते हुए मेज व ऑफिस जैसी सुविधाएँ किराये पर ले सकते हैं। अन्य प्रमुख महानगरीय क्षेत्रों के समान, मिलान भी सहकार्य स्थानों के बड़े फैलाव का साक्षी है। सह कार्य स्थानों के विभिन्न प्रकार हैं : कुछ विज्ञापन और जन संपर्क में काम कर रहे लोगों द्वारा आबाद स्थानीय और लघु स्तरीय स्थान है; अन्य में सामाजिक उद्यम और सामाजिक नवाचार को बढ़ावा देने वाला वृहद स्तरीय एक्टर जो फ्रेंचाइजी मॉडल से आपरेट कर रहे हैं सम्मिलित हैं। इन सह–कार्य स्थानों में कामगार न सिर्फ जगह साझा करते हैं अपितु वे सामुदायिक सम्बन्ध स्थापित करने वाले ''कार्य के प्रति मुक्त–स्त्रोत दृष्टिकोण'' को विकसित करने का दावा करते हैं। ■

एलेसान्ड्रो गांडिनी से पत्र व्यवहार हेतु पता : <alessandro.gandini@unimi.it>

# > लेबनान में सांप्रदायिकता की बदलती स्थिति

**रीमा माजेद,** अमेरिकी विश्वविद्यालय, बेरूत, लेबनान

*"Laïque Pride" बैनर के तहत संप्रदायवाद के विरोध में लेबनान में मार्च करते प्रदर्शनकारी जिसने धर्मनिरपेक्षता और ''समलैंगिक गर्व'' का आह्वान किया।*

''लेबनान में चीजें जबरदस्त तरीके से बदली हैं..... कल के शत्रु आज के मित्र बन गये हैं और वर्तमान में जो मित्र थे वे आज शत्रु..... बदलाव की स्थिति में शिया–सुन्नी विभाजन एक ऐसा बदलाव है जिसे वास्तव में अनुभव किया जा सकता है, विशेष रूप से रफीक हरीरी के हत्या के बाद..... यह चर्चा वास्तव में पहले मौजूद नहीं थी..... हम सभी को यह पता था कि, हम मुसलमान थे और हम देश में ईसाईयों की राजनीतिक योजना के विरूद्ध लड़ रहे थे..... आज कुछ ईसाई हमारे सहयोगी हैं और अब हम सुन्नी की राजनीतिक योजना के विरूद्ध लड़ रहे हैं।''

अमल पार्टी के शिया सेनानी, हसन का कथन। [1]

यद्यपि सांप्रदायिकता, आमतौर पर, लेबनान में कठोर सांप्रदायिक तर्ज पर संगठित नियत सामाजिक व राजनीतिक संबधों से जुड़ी हैं, बहुत थोड़े समय में ही इन संम्बधों के भीतर बदलाव उत्पन्न हुआ हैं; सांप्रदायिक द्विभाजन के इस तेजी से बदलते स्वरूप ने महत्वपूर्ण प्रश्नों को उत्पन्न किया है। सांप्रदायिकता क्या है और लेबनान के संदर्भ में इसका क्या अभिप्राय है? कैसे सांप्रदायिक द्विभाजन एक ऐसे देश में इतनी जल्दी बदलाव ला सकते है जहां राजनीतिक प्रणाली विभिन्न समूहों के बीच शक्ति के कठोर संतुलन पर टिकी हुई हैं?

14 फरवरी 2005 को पूर्व प्रधानमंत्री रफीक हरीरी की हत्या एक ऐसा राजनीतिक भूकंप/झटका था जिसने लेबनान की राजनीतिक और सांप्रदायिकता की दोषपूर्ण स्थितियों को पुनः आकार प्रदान किया। इसने देश के इतिहास में एक बड़े प्रदर्शन को सक्रिय कर दिया परिणामस्वरूप देश दो शिविरों में बँट गया; 'मार्च 8 गठबंधन,

> >

जिसने सीरिया के साथ अपने गठबन्धन को पुनः साबित किया और हरीरी की हत्या के लिए अमेरिका व इजराइल पर आरोप लगाया तथा 'मार्च 14 गठबन्धन', जिसमें हत्या के सीधे समर्थन हेतु सीरिया के शासन पर आरोप लगाया गया। प्रारम्भ में, हरीरी की हत्या के पीछे की घटनाएं पेचीदा लग रही थी : दोनों नये गठबंधनों ने उन दलों को सम्मिलित कर लिया जो कुछ वर्षों पहले कट्टर दुश्मन थे। सीरिया–विरोधी गठबंधन में अनेक सदस्य थे, मुख्य रूप से ईसाई, ड्रूज और सुन्नी समुदाय, जबकि सीरियाई–समर्थक समूह द्वारा प्रर्दशनों में मुख्यतः शिया सम्मिलित थे जो हिजबुल्लाह व अमल पार्टी के साथ लामबंद है और उनके साथ स्वतंत्र देशभक्ति आंदोलन के वृहद् ईसाई दल में एक वर्ष पश्चात शामिल हो गए। 1975–1990 के गृहयुद्ध के बाद यह पहला समय था जब लेबनान में ईसाई केन्द्रित व मुस्लिम केन्द्रित राजनीतिक दल किसी एक राजनीतिक उद्देश्य के लिए एकजुट हुए थे।

यद्यपि, पहली बार में, दोनों अपराध स्वीकरण समूहों के बीच सुलह करने पर ज्यादा ध्यान दिया गया , देश में बढ़ती हुई, खाई को तेजी से 'सुन्नियों' और 'शियाओं' के बीच में पुनः फ्रेम किया गया। मई 2008 में, देश का राजनीतिक संकट तेजी से नियंत्रण से बाहर हो रहा था। 7 मई को हिजबुल्लाह सेनानी और उनके सहयोगी राजधानी बेरूत पर कब्जा करने के लिए जुट गए। हिंसा तेजी से देश के अन्य भागों में भी फैल गयी। त्रिपोली और शॉफ सबसे हिंसक व क्रूर टकराव के साक्ष्य बने। यद्यपि अनेक गुट (कुछ ड्रूज, ईसाई व अलवी आधारित दल, साथ ही कुछ गैर सांप्रदायिक राजनीतिक दल जैसे सीरीयाई समाजवादी राष्ट्रीय दल) इन झड़पों में शामिल हुए परंतु आम तौर पर इस हिंसा को 'सुन्नी–शिया' संघर्ष का नाम दिया गया।

सांप्रदायिकता और राजनीति लेबनान में एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। स्पष्ट सांप्रदायिक पक्षों के साथ समाज के राजनीतिक संगठनों और सहयोगात्मक लोकतंत्र को अपनाकर राजनीतिक प्रणाली ने राजनीति और सांप्रदायिक अस्मिताओं को परस्पर गूँथ दिया है या उन्हें एक साथ मिला दिया है। इसके अतिरिक्त, अधिकांश राजनीतिक दल स्पष्ट रूप से परिभाषित सांप्रदायिक समुदायों पर आधारित हैं जो राजनीतिक संघर्षों को आसानी से सांप्रदायिक संघर्षों में बदल देता है। हालांकि सांप्रदायिक विभाजन मुख्य रूप से आकार, राजनीतिक शक्ति, आर्थिक क्षमता या सैन्य बल के संदर्भ में विरोधी गुटों की क्षमता से प्रतिस्पर्धा करने पर निर्भर करता है।

यद्यपि, लेबनान समाज का अधिकांश विश्लेषण सांप्रदायिकता पर बल देता है, यह अक्सर राजनीतिक व आर्थिक कारको को सम्बोधित करने में असफल रहता है जिसके कारण लेबनान में सांप्रदायिकता उत्पन्न हुयी। जबकि सभी सांप्रदायिक अस्मिताएं/पहचान सामाजिक दृष्टि से प्रासंगिक हो सकती है, केवल कुछ राजनीतिक रूप से प्रमुखता ग्रहण करती हैं। अन्य शब्दों में, लेबनान के समाज की गतिशीलता को समझने के लिए स्वतः सांप्रदायिकता मायने नहीं रखती अपितु सांप्रदायिकता का राजनीतिकरण मायने रखता है।

व्यक्तिगत स्तर पर भी, सांप्रदायिक पहचान धार्मिक सम्बद्धता से परे स्पष्ट राजनीतिक व सामाजिक अर्थ से सम्बद्ध हो जाती है। लेबनान के संदर्भ में किसी को 'सुन्नी' या 'शिया' कहना वंश से ही उनके धर्म को नहीं बताता, अपितु राजनीतिक सम्बद्धता, सामामजिक अपनापन और सामुदायिक वफादारी को महत्वपूर्ण रूप से इंगित करता है। सांप्रदायिकता और राजनीतिक पहचानों को अक्सर एक दूसरे के स्थान पर प्रयोग किया जाता है। यह बताता हैं कि आज व्यापक सांप्रदायिक चर्चा में क्यों ईसाई पहचान राजनीतिक रूप से प्रांसगिक नहीं रह गई हैं, यद्यपि यह सामाजिक रूप से अभी भी प्रांसगिक है। तथ्य यह है कि ईसाई समुदाय 8 मार्च व 14 मार्च के गठबन्धनों के आधार पर राजनीतिक संदर्भों में विभाजित हो गया है, जिसने इसे देश के राजनीतिक ध्रुवीकरण में कम महत्वपूर्ण बना दिया है। यह उदाहरण दर्शाता है कि लेबनान की सामाजिक दरारों (विभाजन) की अंतर्वस्तु और सीमाएं स्थायी रूप में परिवर्तन की स्थिति में हैं तथा राजनीतिक सीमाओं के परिवर्तन के साथ पहचान/अस्मिताएं भी निरन्तर परिभाषा और पुर्नपरिभाषा की स्थिति से गुजर रही हैं–एक अभिस्वीकृति जो इसके प्रमुख मौलिक दृष्टिकोण को बदल देती है जो सांप्रदायिकता को स्वाभाविक और अपरिवर्तनीय मानता है।

यद्यपि हरीरी की हत्या एक क्रांतिकारी बदलाव था जिसने पूर्व स्थापित सांप्रदायिक सम्बन्धों को पुनः आकार दिया, इस बदलाव की जड़ें मुख्यतः आन्तरिक सामाजिक–आर्थिक और राजनीतिक कारकों की स्थिति में हुए बदलाव, साथ ही मध्य–पूर्व की भू–राजनीति में बदलाव तथा बाहय शक्तियों जैसे ईरान, साउदी अरब, सीरिया, इस्राइल तथा अमेरिका की भूमिका इत्यादि में निहित हैं। लेबनान में ऐतिहासिक 'ईसाई–मुस्लिम' फूट की घटती प्रांसगिकता तथा 'सुन्नी–शिया' विभाजन में वृद्धि को 'ईसाईयों' की राजनीतिक कमजोरी तथा 'शिया' शक्ति में वृद्धि के साथ जोड़कर देखा जा सकता है।

टैफ समझौते ने गृहयुद्ध को समाप्त कर 1990 में संविधान में संशोधन करके 'सुन्नियों' को अधिक राजनीतिक शक्ति, 'शियाओं' को अधिक सैन्य शक्ति प्रदान की तथा गणतंत्र के राष्ट्रपति की भूमिका को कम करके 'ईसाईयों' को हाशिए पर खड़ा कर दिया। सामाजिक–आर्थिक कारकों ने भी सांप्रदायिक वार्ता को पुनः स्वरूप देने में योगदान किया। शिया समुदाय में नगरीयकरण व प्रवसन के माध्यम से उत्पन्न ऊर्ध्गामी गतिशीलता ने अनेक शिया समूहों/व्यक्तियों को लेबनानी अर्थव्यवस्था मे प्रमुख निवेशक और प्रधान कर्त्ता बना दिया है। इसी तरह हरीरी की नवउदारवादी पुनर्निमाण नीतियों ने गृहयुद्ध के बाद बेरूत में वर्ग संम्बधों को पुनः निर्मित किया है, प्राचीन बेरूती (मुख्यतः ईसाई एवं सुन्नी) भूस्वामियों और व्यापारियों के स्थान पर आर्थिक अभिजनों का एक नया वर्ग निर्मित हुआ है। लेबनान में सुन्नी व शिया समुदायों को ग्रह युद्ध के बाद टैफ समझौते द्वारा राजनीतिक शक्ति के साथ संयुक्त रूप से ऐसी सत्ता प्राप्त हुयी है जिसके कारण वे दो अधिक शक्तिशाली समूहों के रूप में एक दूसरे से प्रतिस्पर्धा करने में सक्षम समूहों के रूप में उभरे है।

कहीं और की तरह, लेबनान का संघर्ष भी अनिवार्य रूप से आर्थिक व राजनीतिक था; जब संधर्ष पहचानों के साथ प्रतिच्छेद करता है, तब यह विभिन्न स्वरूप व आकार ग्रहण करता है, परंतु यह स्थिति अनिवार्य रुप से इसे पहचानों के लिए युद्ध के रुप में नही देखती। सांप्रदायिकता की बदलती स्थिति और संरचनात्मक कारकों के विश्लेषण को स्वीकार करते हुए, जो सांप्रदायिकता को, अधिक या कम, राजनीतिक रूप से प्रमुखता प्रदान करता है और किसी खण्डित समाज के विश्लेषण में अन्यों की तुलना में विश्लेषण का मुख्य कारक माना जाता है। इस तरह के दृष्टिकोण, अरब क्षेत्र में संघर्ष का विश्लेषण करने में तथा इराक व सीरिया जैसे इस्लामिक राज्यों में चरमपंथी आंदोलनों के उभार में स्पष्ट रूप से आवश्यक हैं। ■

रीमा माजेद से पत्र व्यवहार हेतु पता : <rima_majed@hotmail.com>

[1]हसन, मेरे एक साक्षात्कारदाता का उपनाम/छद्य नाम है। उसने 1975–1990 के गृहयुद्ध में सहभागिता की थी और मई 2008 की हिंसक घटना की ओर पुनः हमें ले गया।

# > लेबनान युद्ध क्षेत्र में 'कड़वी फसल' की खेती

**मुनिरा खय्यात,** अमेरिकी विश्वविद्यालय, काहिरा, मिस्र

*ताजे काटे गये तम्बाकू को सूखने हेतु धागे से बांधने का कार्य मुख्यतः महिलाओं, बच्चों और कभी कभी बुजुर्गों पर निर्भर है।*
*चित्र : मुनिरा खय्यात*



अरब जगत में हिंसक तोड़फोड़ की घटनाएं निरन्तर जारी हैं–विशेष रूप से पूर्वी भूमध्यसागर के उस उत्तेजित क्षेत्र में जहां सीरिया और इराक में युद्धों ने निरन्तर उत्पात मचा रखा है, बाहर चारों ओर हिंसा को फैला रखा है–यहां की स्थिति और प्रथाओं की निरन्तरता, जो कि नीरसतापूर्ण ढंग से जारी है, को ज्ञात करना मुश्किल है पर असंभव नहीं। प्रतिदिन के झगड़ों/झड़पों के चलते गतिविधियों के चक्र ने जीवन को असहाय बना दिया है पर असंभव नहीं है। उन उल्लेखनीय महत्वपूर्ण चक्रों में से एक इस वर्ष की तम्बाकू की फसल है जिसने दक्षिणी लेबनान की पहाड़ियों को पहले से ही ढक लिया है और भीषण गर्मी की घोषणा कर दी है। दक्षिण लेबनान के शुष्क पहाड़ी क्षेत्रों में जून, जुलाई व अगस्त का महीना तम्बाकू की खेती का मौसम होता है और सदियों से चलता आया है। तोड़फोड़ की इन निरन्तर होती घटनाओं में तम्बाकू की फसल ने इन कठिन सीमाओं के लचीले निवासियों को कायम रखा है।

राज्य के एकाधिकार (लेबनीज रूल ऑफ टोबेको एंड टोमबैकस) वाली दक्षिण लेबनान की पहाड़ियों के पार घरों से तम्बाकू की खेती की जाती है जिसे 'कड़वी फसल' कहा जाता है, इन सबके बारे में उन्हें ज्यादा अच्छे तरीके से पता है जो शासन का कठोरता से पालन करते हैं। हाँ, तम्बाकू एक निकृष्ट, श्रम प्रधान, कैंसरकारी, शोषण करने वाली बाजार की वस्तु है। दक्षिण लेबनान में पर्यावरणीय अथवा मानवतावादी संगठन इसे समाप्त करना चाहते हैं, मध्यस्थ/दलाल इसके स्थान पर अजवायन की खेती के इच्छुक है या फिर कृषि के 'वैकल्पिक' स्वरूपों के लिए जल संग्रहण हेतु तालाब जैसे परित्यक्त आधारभूत सुविधाओंको शीध्र या प्रतीकात्मक रूप से स्थापित करना चाहते हैं। परंतु लेबनान के दक्षिणी क्षेत्र के निवासी तंबाकू को नहीं छोड़ना चाहते। उनके लिए यह जीवन का पर्याय बन गया है। यह जिस आय को सुनिश्चित करता है उसे अस्तित्व की अधिक असुरक्षा के संदर्भ में इसे त्यागा नहीं जा सकता। यह एक (कड़वी) जीवन रेखा है जिसने वर्षों से संघर्ष, हमलों, व्यवसायों, उपेक्षा और संरचनात्मक हिंसा के माध्यम से कई बार के दूषित सीमा क्षेत्र के निवासियों में देखा गया है।

आज, तम्बाकू बहुत फलफूल रहा है। 2006 में युद्ध के अंतिम चक्र में दक्षिणी लेबनान में (स्थानीय स्तर पर जिसे 'जुलाई का युद्ध' के रूप में जानते हैं) तंबाकू में अभूतपूर्वक वृद्धि देखी गयी–इस तथ्य के बावजूद कि उस क्रूरता के महीने भर लंबे आक्रमण के अंतिम धण्टों में इजरायली वायु सेना ने दक्षिणी लेबनान पर लाखों

> >

बमों के गुच्छे बरसाये। यह जीवन रेखा और जीविका के परिदृश्य के विरूद्ध युद्ध जैसी गतिविधि है। उस वर्ष की फसल झुलस गयी, बर्बाद हो गयी और जड़ से ही सूख गई। परंतु इस तबाही के बावजूद भी, लेबनान के दक्षिण क्षेत्र के निवासी पूरी ताकत के साथ फसल की निरन्तर खेती करने के लिए लौट आये।

आज, तंबाकू के खेत दक्षिण भर में फैल गये, प्राचीन जैतून और नींबू के बगीचों को जड़ से उखाड़ कर बाजार से खरीदी गई वस्तुओं पर बढ़ती निर्भरता से निर्वाह–कृषि को प्रतिस्थापित कर (क्योंकि तंबाकू को खाया नहीं जा सकता) फैल गये हैं । भूमि खाने, बमों के गुच्छे, सेना की आधारभूत सुविधाएं और निषेध क्षेत्रों से आच्छदित परिदृश्य में तंबाकू पशुधन पर भी हावी है जिन्हें बढनें में एकत्रित करने की आवश्यकता है । दक्षिण का झुकाव हमेशा से ही एक ऐसी फसल और वस्तु पर है जो कि तेजी से हाशिए पर जा रही है और निंदा का शिकार हुई है, वैश्विक बाजार में प्रति–बंधित व नियंत्रित हुयी है।

तंबाकू एक मजबूत खरपतवार है जो कि शुष्क पर्वतीय भूमि में पनपती है। अपने संक्षिप्त जीवन काल में (फरवरी–अप्रेल में बोयी जाती है, मई–अगस्त फसल तैयार) सुबह की ओस की बूंद से ही यह खिलती है व इसे सिंचाई की आवश्यकता नहीं होती। यहां तक कि एक गरीब ग्रामीण क्षेत्र में एक फसल के रूप में यह अधिक उपयोगी या बहुमुखी है, क्योंकि इसके लिए अतिरिक्त आधारभूत सुविधाओं या क्षेत्र की आवश्यकता नहीं होती; आर्धनिर्मित (या आर्धनष्ट) घर, आगे और पीछे बगीचे, ढालदार छतें, अनियमित और अक्सर ऊबड़–खाबड़ भूखंडों में भी यह उगायी जा सकती है। इसके लिए आसानी से श्रम शक्ति उपलब्ध है : महिलाऐं, बच्चे और 'सीमावर्ती गाँवों, जहां सक्षम पुरूष विदेशों में या लेबनान के शहरों में काम करते हैं के बुजुर्ग निवासी इन व्यापक निर्जन गांवों की शेष बची हुयी जनसंख्या फसल पर गहन श्रम करते है जो उसे साल दर साल, कम से कम परिवार को पालने योग्य आय का आश्वासन देती है।

केवल लाइसेंसधारी है–जो संख्या में सीमित व बहुत महत्वपूर्ण है–तंबाकू की खेती कर सकते हैं या उसे बेच सकते हैं। तम्बाकू में 1960 व 70 के दशक के आस–पास श्रम सक्रियतावाद से पहले, तंबाकू लाइसेंस सभी शक्तिशाली भूस्वामियों के हाथों तक ही सीमित थे जिनका भूमि के अधिकांश हिस्से पर स्वामित्व था। आज के छोटे किसान एक समय पर भूमि पर काम करने वाले बटाईदार से उत्तराधिकारी बन गये हैं। 1960 व 70 के दशक में लेबनान के दक्षिणी सीमा क्षेत्र में गुरिल्ला युद्ध भड़कने के साथ अनेक भूस्वामी/जमींदार शहर छोड़ कर चले गये, 'उनके' किसानों, जो पीछे रह गये, ने अफ्रीका, लातिन अमरीका, ऑस्ट्रेलिया तथा अन्य स्थानों के प्रवासियों के नेटवर्क द्वारा भेजे गये धन से भूमि के छोटे खण्ड खरीदे, अंत में तंबाकू के लाइसेंस भी प्राप्त किये। कई किसान हमलों, सीमा पट्टी पर 22 वर्षीय इजराइली कब्जों, और उसके बाद के कब्जा युग और 2006 के युद्ध के दौरान टिके रहे। इसके माध्यम से वे सभी तंबाकू की खेती करने लगे और शक्तिशालियों से परे तंबाकू उत्पादन पर समान नियंत्रण प्राप्त करने हेतु लाइसेंस के लिए लड़ाई लड़ी।

लेबनान के दक्षिणी सैन्य प्रदर्शन के साथ तंबाकू की सफलता के लिए क्या महत्वपूर्ण है? क्यों तम्बाकू, कड़वी फसल, भूले–बिसरे निर्धन दलितों का वफादार मित्र है?

एक स्तर पर, यह क्या काम करता है और कौन काम करता है, के बारे में है। जनसांख्यिकी और भूगोल के साथ–साथ दक्षिणी लेबनान की अस्थायी और स्थानिक स्थितियाँ तंबाकू की खेती के पनपने के लिए एक पर्यावरण निर्मित करती है और इसके साथ ही अन्यथा किसी दुर्गम स्थान पर भी जीवन को जारी रखा जा सकता है। एक अन्य स्तर पर, फसल की सफलता संरचित है और लेबनान राज्य द्वारा इसे समर्थन प्राप्त है, जो एक उदार सामाजिक अनुबंध के रूप में संधि समूह के तहत वैश्विक तंबाकू बाजार में भारी लाभ का विनिमय करता है। राज्य, वैश्विक कीमतों में उतार–चढ़ावों की परवाह किये बिना, लाइसेंसधारी किसानों को तंबाकू का एक निश्चित मूल्य (8 से 13 अमरीकी डॉलर प्रति किलो) प्रदान करता है।

इस समझौते के प्रति तंबाकू की खेती करने वाले किसानों में दोनों खुशी और दुख था, क्योंकि एक सुनिश्चित आय शोषक और विनाशकारी परन्तु अत्यधिक लाभकारी उद्योग के साथ जोडती है। लेबनान राज्य अपने जरूरतमंद नागरिकों के पशुचारण की देखभाल के संदर्भ में 'तंबाकू सब्सिडी' को जब्त कर लेता है, परंतु खुशी की बात यह है कि इस वैश्विक व्यापार से व्यापक पैमाने पर प्राप्त लाभ को उनकी जेबों (पॉकेट) में डालता है।

लेबनान में तंबाकू के बारे में दो विवेचन उभर कर आते हैं। एक विवेचन जीवन, श्रम व प्यार के आस–पास घूमता है; अनेक दक्षिणवासी सफल किसान अपनी सफलता के लिए इस तथ्य को उत्तरदायी मानते हैं कि उनके परिवार तंबाकू की खेती करने में सक्षम थे और इससे प्राप्त पैसे से वे अपने बच्चों को स्कूल भेज सकते हैं। जो तंबाकू फसल की खेती करते हैं–जिनमें अधिकांश संख्या महिलाओं की हैं–वे फसल की कटाई, छंटाई, एकत्र करने, सुखाने व उनकी पैकिंग करने के अपने कौशल के बारे में गर्व से बताते हैं। उनकी दृष्टि में उनका तंबाकू विश्व में सबसे अच्छा है।

एक अन्य विवेचन उनसे सम्बन्धित है जो फसल खरीदते हैं, शासन के अधिकारी, जो असमान और यहां तक संदिग्ध गुणवत्ता के बारे में बोलते हैं। वे दक्षिण के घरों से फसल खरीदने पर पश्चाताप व्यक्त करते हैं–एक गलत वस्तु, जिसकी पुनः छँटाई व पुनः/नई पैकिंग कर दी गई और फिर लंबे समय के लिए गोदामों में भर दिया जाता है जबकि एकाधिकार को वैश्विक तंबाकू कंपनियों के साथ बातचीत के द्वारा हल किया जा रहा है, जिन्हें लेबनान के व्यावसायिक तंबाकू बाजार में समान हिस्सा प्राप्त करने के लिए लेबनान की वार्षिक तंबाकू फसल में से एक प्रतिशत खरीदना आवश्यक है। कुछ मानते हैं कि दक्षिणी लेबनान में परिश्रम से की गई तंबाकू की खेती का अधिकांश हिस्सा कचरा है। इन दोनों विवेचनों के बीच कड़ा अन्तर/मतभेद फसल की विवादास्पद प्रकृति को लेकर है। अपने बुनियादी भविष्य और विवादास्पद उपयोगों के बावजूद तथा समान विश्वसनीय विकल्प के अभाव के कारण तंबाकू की खेती आज भी दक्षिणी लेबनान की जीवनरेखा बनी हुयी है। लेबनान के सीमांत प्रांत के 'सीमावर्ती गांवों में 'कड़वी फसल' उगने वाले उत्साही किसानों की बड़ी संख्या निवास करती है। एक बाजार की वस्तु जो एक स्थिर कीमत पर निरन्तर बिकती है, के रूप में अपने श्रम के माध्यम से, दक्षिणी लेबनान के किसान निरंतर तोड़फोड़, विनाश व हिंसा वाले स्थान पर सीमित रूप से, सफल जीवन में सहायक स्थायित्व को स्थापित करते हैं। ■

मुनिरा खय्यात से पत्र व्यवहार हेतु पता :
<mk2275@columbia.edu>

# > आडिट के पेच को मोड़ते हुए : उच्च शिक्षा में गिरावट

**जोन होमवुड,** नॉटिन्घम विश्वविद्यालय, यू.के., तथा आई.एस.ए. की कार्यकारिणी के सदस्य, 2014-2018

कई टिप्पणीकारों ने सुझाव दिया है कि लोक सेवाओं का अंकेक्षण के माध्यम से ''नया सार्वजनिक प्रबन्धन'' शायद अपना समय पूरा कर चुका है और इस दृष्टिकोण को ''सार्वजनिक मुल्य'' (अर्थात जनता को प्रदान की जाने वाली सेवा का अधिकतम लाभ पहुंचाने के प्रति चिन्ता) में रुचि के द्वारा प्रतिस्थापित किया गया है। ब्रिटेन में जहाँ तक विश्वविद्यालयों का सम्बन्ध है यह सब खोखला ही लगता है। हाल ही के सुधारों ने विश्वविद्यालयों के सार्वजनिक मुल्यों को नकार दिया है, तथा एक मात्र नजरिया विश्वविद्यालयों को उनके आर्थिक योगदान और विद्यार्थियो को मात्र ''उपभोक्ता'' मानते हुए, मानव पूँजी में निवेश के नजरिये से प्रस्तुत किया है। इस संदर्भ में ''अंकेक्षण'' का उपयोग विश्वविद्यालयों को आकार प्रदान करने, बाजार प्रक्रियाओं के लिए उन्हे खोलने तथा प्रबन्धन पर नियन्त्रण को मजबूत करने के लिए सर्वोपरी रहता है।

ब्रिटेन में शिक्षाविदों को दिसम्बर मे आने वाले 2014 के अनु–संधान अंकेक्षण ("REF") का इन्तजार है। REF एक छः वर्षों की चक्र पर कार्य करता है और एक विभाग के आय के एक हिस्से (छात्र शुल्क, और बाह्य अनुदानों के लिए आवेदन पत्र अन्य स्त्रोत हैं) को निर्धारित करता है । इस आय का वितरण शैक्षणिक समीक्षा पैनल द्वारा प्रकाशनों को दिय गये अंको पर निर्भर करता है। प्राप्तांक अनाम और एकीकृत होते हैं तथा प्रस्तुतकर्ता इकाई इसके शोध वातावरण एवं अपने शोध योगदानों के किसी बाहरी गैर–अकादमिक प्रभाव के आधार पर आंकी जाती है।

REF विभागों के लिए बहुत समय खपाने वाले होते हैं तथा यह इस प्रक्रिया का प्रबन्धन करने वाले संस्थानो के लिए काफी लागत वाला है। इस प्रक्रिया की ''सुरक्षित'' शोध, जिसकी पेनल द्वारा सकारात्मक रुप से आंकी जाने की संभावना अधिक है, को प्रोत्साहित करने, संस्थाओं द्वारा खेल और विश्वविद्यालयों पर शोध के प्रबन्ध को केन्द्रीयकरण करने के लिए दबाव डाल कर सहकर्मी सम्बधों को कमतर करने के कारणों की आलोचना हुई है।

चूंकि पैनल का आंकलन सरकारी गोपनीयता अधिनियम के अन्तर्गत आता है अतः अब तक विश्वविद्यालयों की शोध रणनीतियों और लक्ष्यों के समग्र–प्रबन्धन, और व्यक्तिगत अकादमिकता के सूक्ष्म प्रबन्धन में कोई सीधा सम्बन्ध नहीं रहा है, अतः ये गुमनाम रहते हैं। हालांकी यह अब बदलने वाला है। REF के लिए जिम्मेदार संस्था, द हायर एज्यूकेशन फंडिंग काउन्सिल फार ईंग्लैण्ड (HEFCE) के ''मापकरण'' के लिए एक परामर्श सत्र का आयोजन करवा रही है।

यह प्रस्ताव पर 2001 की कार्यकारिणी के पहले विचार कर निरस्त किया गया था, परन्तु यह अब वापस लौट आया है – इसलिए नहीं कि गन्थ प्रणाली के आंकडों के प्रयोग में आने वाली पद्धतिशास्त्रीय दिक्कतों को दूर कर लिया गया है (जिसमें उद्धरण व्यवहारों मे विषयगत भिन्नता सम्मिलित है) परन्तु इसलिए कि उपलब्ध आंकडों में विशाल वृद्धि नें इसे कोशिश करने लायक बना दिया है।

REF का ''मापकरण'' एक ''वृहद आंकडों'' वाली परियोजना है, जिसमें प्रत्येक शैक्षणिक इकाई ऑनलाईन खोज पर उपलब्ध प्रकाशनों के उद्धरण एवं प्रकाशन के माध्यम से डाटा अंक का योगदान देती है। इसके अतिरिक्त वर्तमान व्यवस्था इतनी मंहगी है कि थामसन रय्टरस जैसी निजी कम्पनियां मापन आंकडों को कम कीमत पर उपलब्ध कराने की पेशकश कर सकती हैं। सहकर्मियों के पैनल द्वारा पेशेवा आंकलन तब ''अर्ध–बाजार'' पर आधारित शैक्षिक स्वतन्त्रता का नवउदारवादी संस्करण 'crowdsourced' के आंकलन से प्रतिस्थापित हो जायगा । यह सही है कि ब्रितानी शिक्षाविदों की REF में ''सह–उत्पादन'' के रुप में भागीदारी है परन्तु REF का मापकरण इन्हे अनुबन्धित ''वृहद आंकडों वाली'' कम्पनी के साथ प्रबन्धन का एकमात्र उत्पादक बनने की अनुमति देगा।

डेविड ईस्टवुड ( ब्राउन रिव्यू के एक सदस्य जिसने उच्च शिक्षा के लिए सरकारी धन को छात्रों के शुल्क से प्रतिस्थापित करने की अनुशंसा की और उच्च शिक्षा के वैश्विक बाजार में नवउदारवादी प्रोजेक्ट के अग्रणी हिमायती) ने सुझाव दिया कि मापकरण को आगे जाकर अन्तर्राष्ट्रीयकरण के साधन के रुप में प्रयोग में लिया जा सकता है।

जहां सहकर्मी समीक्षा द्वारा त्थ् का अन्तर्राष्ट्रीयकरण बोझिल, महगा, और सम्भवतया यू.के. के बाहर के शिक्षाविदों द्वारा प्रतिकूल प्रक्रिया को उत्पन्न करने वाला हो सकता है, ईस्टवुड सुझाव देते हैं कि ब्रिटेन त्थ् की उच्च ख्याति से लाभ उठा सकता है। इसकी शिक्षाविदों के अपितु विश्वविद्यालय प्रबन्धन और शिक्षा मंत्रीयों द्वारा स्वीकृति की संभावना अधिक है। यू.के. के बाहर की निधि प्रदाता और नीती निर्माताओं को इस प्रोजेक्ट में सहयोग करने के लिए

>>

## "वृहद आंकड़े" अब "विपणन क्षण" प्रस्तुत करते हैं"

कहा जा सकता है, और निःसंदेह, इसके निजी कम्पनियों द्वारा पैरवी करने की संभावना भी है।

यह सब कुछ, लोकतान्त्रिक शिक्षा के भविष्य में रुचि रखते हुए न तो शिक्षाविदों के मध्य और न ही व्यापक जनता के मध्य सार्वजनिक बहस के माध्यम से हुआ है। शैक्षणिक स्वतंत्रता चाहे लोकतान्त्रिक स्वतंत्रता के समान न हो परन्तु लोकतान्त्रिक स्वतंत्रता इससे सेवित होती है।

REF पहले से ही शैक्षणिक अनुसंधान को अधिकतम निधि को प्राप्त करने वाले प्रबन्धन द्वारा नौकरशाही आकार देती है, लेकिन इसका मापकरण इसे सूक्ष्म–प्रबन्धन का एक उपकरण बनने की अनुमति देता है। यह तथ्य कि मापन आधारित REF सार्वजनिक आंकडों पर संचालित होता है का अर्थ है व्यक्तिगत शिक्षाविदों को उन्ही आंकडों में खोजा जा सकता है (यह वर्तमान संस्करण में सम्भव नही है)। विभागों को वरीयता क्रम में लगाने हेतु (राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय) आंकडों के एकत्रीकरण के सेवा प्रदान करने वाली कोई भी कम्पनी इसी पेशकश को भर्ती के निर्णय हेतु, व्यक्तिगत विभागों को भी दे सकती है। वास्तव में, 1970 के दशक के प्रारम्भ में ग्रन्थप्रणली को इसी उद्धेश्य की पूर्ती के लिए विकसित किया गया था और ''वृहद आंकडे'' अब ''विपणन क्षण'' प्रस्तुत करते हैं (''अध्यापन पल'' का नवउदारवादी संस्करण)।

इस सूक्ष्म–प्रबन्धन का एक उदाहरण एक अंग्रेजी विश्वविद्यालय के कार्यों से स्पष्ट है – जिसे हम रसेलटन कह सकते है, रसेल समूह की स्वयंभू ''कुलीन'' विश्वविद्यालयों की सदस्यता को इंगित करने वाला। इसने सर्वप्रथम विभिन्न शैक्षणिक कार्यों पर खर्च किये गये समय तथा जांच के लिए केन्द्रीय प्रबन्ध की उपलब्धता के माडल को प्रस्तुत किया, जिस पर मैने अन्यत्र कहीं लिखा है। अब इसने एक मापन–आधारित शोध रणनीति जिसके तीन पहलू हैं : ''उद्देश्य'' ''लक्ष्य'' तथा ''तन्त्र'' को प्रस्तुत किया है। यहाँ इस भारी दस्तावेज (विशेषरुप से दृष्टि की कमी के कारण वजनदार) से एक उद्धरण है:

- उद्देश्य 2: रसेलटन विश्वविद्यालय के शोधार्थीयों द्वारा उच्च गुणवत्ता वाले प्रकाशनों की संख्या तथा अनुपात में वद्धि करना
- लक्ष्य 2.1: वर्तमान रसेल समूह की औसत 2.71 से उपर REF GPA को प्राप्त करना तथा बनाऐ रखना (REF 2014 के बाद नये मानक तय करने हैं)
- लक्ष्य 2.2: 2020 तक 20 फीसदी (2013 में 1.68) विश्वविद्यालय के शोध पोर्टफोलियो की वृद्धि जैसा कि त्रि–वर्षीय भारित उद्धरण प्रभाव से मापा गया है।
- लक्ष्य 2.3: तीन वर्ष के समय में उच्च 10 फीसदी अधिकतम उद्धरण परिणामों के प्रकाशनों (2013 में 21%) का अनुपात दुगना करना
- लक्ष्य 2.4: अन्तर्राष्ट्रीय सह–लेखकीय प्रकाशनों के अनुपान में तीन वर्षों में 55% की वृद्धि (2013 में 40%)
- लक्ष्य 2.5: संस्थागत उद्धरणों की संख्या में सभी शैक्षणिक संकायों के योगदान से तीन वर्षों में 30 की वृद्धि (2013 में 62,413) [...]
- तन्त्र 2.5: जहाँ सहयोगात्मक तथा सह–लेखक दल के काम के न्यूनतम मानदण्ड हों, वहाँ उत्पादकता एवं शोध दलों की गुण्वत्ता के निर्धारण हेतु उत्कृष्ट व्यक्तियों को बढावा देने के लिए समग्र दृष्टिकोण के साथ खुली पहुंच, उद्धरण एच–सूचकांक तथा ग्रन्थ प्रणाली को जोडा जा सकता है।

इस प्रकार, अंकेक्षण के पेच को मोडने से शैक्षणिक जीवन के तत्व को बाजार आधारित काबिल निर्णयों से शैक्षणिक स्वतन्त्रता को दबा कर ''आंकलनयोग्य पलों'' से कम किया जा रहा है। इस प्रकार HEFCE विश्वविद्यालयों को उनके अंकेक्षण के अन्तर्राष्ट्रीयकरण के द्वारा आपके और अधिक पास लाना चाहती है। ■

जोन होमवुड से पत्र व्यवहार हेतु पता : <jholmwood@ias.edu>

# > मिस्र के अदृश्य जिप्सी

**एलेक्जेंड्रा पार्स,** अमेरिकी विश्वविद्यालय, काहिरा, मिस्र

*इजिप्ट की डोम – प्रस्तुत अदृश्य। चित्र अर्बु द्वारा।*

अनेक मिस्रवासियों के लिए यह आश्चर्य की बात है कि 'जिप्सी' शब्द की उत्पत्ति 'मिस्र' से हुयी है : मिस्र के रहस्यमयी पूर्वी यात्रियों से सम्बद्ध एक मध्ययुगीन भ्रामक धारणा है। यह आज भी मिस्रवासियों को विस्मित करता है कि यह मिस्र के जिप्सी है–या कम से कम–यह ऐसे लोगों का समूह है जिन्हें कभी पूर्वी जिप्सी के रूप में पहचान प्राप्त थी, या डोम के रूप में–जिन्हें अक्सर यूरोपीय रोमा को मानसिक और जादुई शक्तियाँ रखने के लिए जिम्मेदार ठहराया जाता था और जिन्होंने अछूत व पृथक्करण की स्थिति का अनुभव किया था।

पूर्वी जिप्सी को डोम कहा जाता था, इनके विभिन्न उप–समूह सीरिया, तुर्की, इजराइल और मिस्र में देखे गये। हालांकि, नाटकीय रूप से, अधिकांश यूरोप तथा मध्य पूर्व के कुछ देशों में डोम और रोमा को कलंकित किया गया, डोम मिस्र में अधिकारिक तौर पर स्वीकृत नहीं है क्योंकि मिस्र में धर्म को मुख्य/प्रधान स्थान प्राप्त है। मिस्र का राष्ट्रीय पहचान पत्र, जो कि इसके धारकों के धर्म को व्यक्त करता है, तीन धर्मों–ईसाई, इस्लाम और यहूदी–में से एक चुनने का विकल्प प्रस्तुत करता है। अभी हाल ही तक, वे लोग जो अधिकारिक तौर पर स्वीकृत धर्म की तुलना में अन्य किसी भिन्न धर्म से थे उन्हें राष्ट्रीय पहचान पत्र से वंचित रखा गया था। चूंकि धर्म एक अधिकारिक पहचान का आधार माना जाता था, अन्य पहचान–जैसे नृवंशीयता (नस्ल) का प्रयोग नहीं किया जाता था, ऐसे समूह जैसे बेडुडन, नूबियन और डोम–जिनकी पहचान जातीय आधार पर परिभाषित होती थी, सामाजिक रूप से उपेक्षित थे।

या तो पहचान आधारित वर्गीकरण या सांख्यिकीय प्रतिनिधित्व की कमी के कारण मिस्र में डोम जनसंख्या के आकार का अनुमान लगाना लगभग असंभव है। प्रदत्त/आँकड़े उपलब्ध कराने वाले प्रमुख समूह ईसाई धर्म के संगठन हैं, जिनके अनुमान अनुसार इनकी संख्या 1 से 2 लाख के बीच है और इनमें से अधिकांश मुसलमान

>>

हैं। मिस्र में डोम विभिन्न उप–समूहों या जनजातियों में विभाजित हैं, एक ऐसी अवधारणा, जो कि मध्य पूर्वी देशों के संदर्भ में भी बहुत महत्वपूर्ण है। जनजातियों में धागर, नावर, हलेबी जैसे शब्द भी अरबी में अपमानजनक माने जाते हैं। ईसाई धर्म संगठनों का सुझाव है कि 'धागर', जिसका अर्थ होता है 'अवारा/घुमन्तु', मिस्र के डोम का सबसे बड़ा समूह हो सकता है।

चूंकि डोम अधिकारिक तौर पर अस्तित्व में नहीं हैं, इसलिए उन्हें आत्मसात करने या उनका उन्मूलन करने का कोई प्रयास नहीं किया गया। यूरोप में रोमा समूह के दबावमूलक एकीकरण और सीमांतीकरण के केवल दो संभावित परिणाम प्राप्त हो सकते हैं, जिनके खानाबदोशी स्वभाव को, अक्सर, आज्ञा का उल्लंघन माना जाता है या फिर देशभक्ति के प्रतिकूल प्रभाव। इसके विपरीत, मिस्र में, खानाबदोशी मिस्र समाज में ऐतिहासिक रूप से एकीकृत पक्ष रहा है, यहां तक कि सम्पूर्ण 20वीं शताब्दी में खानाबदोश को मिथ्या अवधारणा माना गया। इसके अतिरिक्त, मध्य पूर्व में खानाबदोश को मुख्यतः बेडुइन और खानाबदोश चारवाहों के साथ सम्बद्ध किया जाता है कि न कि जिप्सी के साथ।

अतः, मिस्र के राज्य, जिप्सी के अस्तित्व से बेखबर दिखाई देते हैं, परंतु, फिर भी, क्या वे सामूहिक प्रतिनिधान और कल्पना में उपस्थित हैं? स्वर्गीय नाबिल सोबही हाना ने 50 वर्ष पूर्व नील नदी के डेल्टा क्षेत्र, घिराना में अर्द्ध खानाबदोश घागर समुदायों पर एक नृजातिशास्त्रीय शोध किया था। उन्होंने बताया कि धागर अक्सर गांवों के किनारे पर रहते थे और बहुत विशिष्ट व्यवसाय करते थे, घोड़े और गधे के व्यापारी,लोहे के कारीगर और मनोरंजनकर्मी इत्यादि। हाल ही में, अनेक समूहों ने काहिरा के व्यापारिक क्षेत्र, जो सईदा जैनब या मृतकों का कुख्यात शहर के रूप में प्रचलित है, में स्वयं को स्थापित किया है, जहां वे धातुकर्मी, लुहार, कसेरा (बर्तन बनाने वाला), ऊन के व्यापारी, ऊन कतरने वाले, काठी बनाने वाले, संगीतकर्मी और नृत्यकर्मी या फेरीवाले के रूप में छोटे–छोटे व्यापार में संलग्न है। कभी–कभी उन्हें अनेक गरीब नगरवासियों की भाँति भीख माँगने का कार्य करते भी देखा जा सकता है। मृतकों के शहर में उनके पड़ोसी जेबालीन रहते हैं, जो अक्सर कचरा एकत्र करते हैं। जबकि अधिकांश डोम वास्तव में गतिशील/सक्रिय नहीं हैं, उनकी समकालीन गतिविधियाँ अल्पकालिक स्थानिक गतिशीलता से अभी भी सम्बद्ध है : वे अल्पकालिक कार्य करते हैं, वे किराये के मकानों में रहते हैं, वे पड़ोस के भीतर ही एक स्थान से दूसरे स्थान गमन करते हैं, अभी भी वे मिस्र समाज में हाशिए पर नजर आते हैं।

जबकि अधिकांश मिस्रवासी जिप्सी की उपस्थिति के प्रति व इन पर गंभीरता से विचार करने के प्रति जागरूक नहीं है। अधिकांश यह मानते हैं कि वास्तव में मिस्र में जिप्सी हैं जिनसे हमारा सामना महिलाओं को भविष्य बताने वाले, ग्रामीण क्षेत्रों में यात्रा करने वाले, चोर या धार्मिक उत्सवों में मनोरंजन करने वालों के रूप में हो सकता है। यद्यपि डोम के अस्तित्व को लोग पूर्णतः नहीं स्वीकारते परंतु वे लोगों के अवचेतन के हाशिए पर नजर आते हैं और विशिष्ट संदर्भों में व विशिष्ट खण्डों के द्वारा आसानी से प्रयोग किये जाते हैं।

'जिप्सी' की संख्या अक्सर ग्रामीण इलाकों में ज्यादा मौजूद रहती है, अभी तक वे जटिल ग्रामीण प्रणाली में दूसरी जनजातियों से सम्बद्ध हो सकते हैं। जिप्सी समूह को मिस्र के संगीत में उनके योगदान के लिए, नकारात्मक रूप से, जाना जाता है या नावर जनजाति के बेले नृतकों, जो 'घावाजी' कहलाते हैं, के मनमोहक नृत्य के कारण जाने जाते हैं। घावाजी हरम या अन्तःपुर (जनानखाना) में नृत्य करने वाली नर्तकियां थीं, जिन्हें काहिरा में 19वीं शताब्दी में प्रतिबंधित कर दिया गया था – उसके बाद 1950 के दशक में आयी प्रसिद्ध फिल्म 'तमर हिन्दी' में इन्हें रूमानी तौर पर प्रदर्शित किया गया, जिसमें एक अमीर युवक धावाजी के प्यार में पड़ जाता है और उसे वहां से बाहर निकालकर सम्मानजनक इन्सान बनाने की कोशिश करता है। वह असफल रहता है और धावाजी वहीं रहती है जहां से वह जुड़ी थी। कुछ सीमाओं को संभवतः कभी भी लाँघा नहीं जा सकता।

पवित्र व्यक्तियों के जन्मदिन समारोह माउलिद –जिसमें तीर्थयात्रा, कार्नीवाल और रहस्यमयी इस्लामिक समारोह शामिल होते हैं–के दौरान जिप्सी समूह मनोरंजनकर्मी के रूप में सहभागिता करते हैं। मिस्र में ऐसे समारोह केवल पैगम्बर के जन्मदिन तक ही सीमित नहीं है (Moulids en Nabi), अपितु स्थानीय सूफी–संतो के उत्सवों में भी इनका प्रयोग करके अक्सर मिस्र के अधिकारियों के ध्यान को आकर्षित करते हैं क्योंकि माउलिद शिया और सूफी अधिकारियों द्वारा मान्य है परंतु सुन्नी, जिनका मिस्र में बहुमत है, ने नहीं दी है। अधिकारिक अस्वीकृति के बावजूद जन्मोत्सव व्यापक रूप से प्रचलन में है; ये इसाई कार्नीवाल के समान ही है, अराजकता व लाइसेंस के समय, जहां सामान्यतः नियम तोड़े जा सकते हैं: लैंगिक विभेदीकरण समाप्त कर दिया जाता है, यौनिक निषेध भूला दिये जाते हैं, लोग सामान्य हिस्टीरिया की स्थिति में नाचते हैं। डोम के मनोरंजन एवं अनैतिक कलाओं के साथ सम्बन्ध को देखते हुए यह आश्चर्य की बात नहीं है कि वे जन्मोत्सव का एक अंतरंग हिस्सा हैं। महिलाएं नाचती और पुरूष संगीत बजाते थे। डोम महिलाएं वे करती थी जो सम्मानिक महिलाएं नहीं कर सकती हैं, इस तरह की भूमिकाएं उन्हें सिमेलवादी अपरिचित की श्रेणी में रखती हैं।

अतः, मिस्र के जिप्सी कौन है? अधिकारिक रुप से अभी अमान्य यं ग्रामीण मिश्र में समग्र द्वारा घुमंतु और घोड़े के व्यापारी या फिर नगरीय क्षेत्र में मनोरंजनकर्मी, समारोह नृतक एवं धावाजी, भविष्यवक्ता और भिखारी के रूप में जाने जाते हैं। सभी जगह, अधिकांशत, वे निर्धनतम मिस्र समुदायों, सीमांत समूहों और उपेक्षित समूहों का हिस्सा थे। जैसा कि एडवर्ड सैड ने सुझाव दिया था कि पूर्व को 19वीं शताब्दी में यूरोप के पूरबवासियों ने स्वरूप दिया। जिप्सी 'अन्य' माने जाते थे और यूरोपीय सीमाओं के भीतर विदेशी अन्य के रूप में प्रचलित थे। विडम्बना यह है कि मिस्र में जिप्सी को भी पूर्वी (विदेशी) के रूप में स्वीकारा गया है, उनकी विशेषताएं पूर्वी लोगों से या यूरोप के भीतरी जिप्सियों से मिलती जुलती हैं या यूरोप के भीतर के जिप्सी के समान अरबी पुरूषों (खतरनाक कट्टरपंथी इत्यादि) या महिलाओं (कामुक हरमवासी इत्यादि) से सम्बद्ध खतरे, घृणा और आकर्षण की तीन विशेषताएं जिप्सी समूह से भी सम्बद्ध है। पुरूषों को बेईमान और चोरों के रूप में देखा जाता है, महिलाओं को रहस्यमयी खतरनाक (भविष्यवक्ता व जादूगरनी) व दिलचस्प बेले नृत्यांगना, धावाजी या वेश्या के रूप में देखा जाता है।

मिस्र में डोम का अध्ययन विशेष रूप से दिलचस्प है क्योंकि अनेक अनुभवों से ये प्रश्न उठते हैं–क्या अंतर्राष्ट्रीय जिप्सी प्रथाएं और अस्मिताएं हैं जो सीमाओं और राष्ट्र–राज्यों के परे हो? किस तरह ये प्रथाएं और अस्मिताएं निर्मित हुयी और इनकी क्या भूमिका है? क्या डोम/रोमा शाश्वत रूप से अछूत है? क्या वे राष्ट्रीय अस्मिता के लिए खतरा है? और किस तरह मिस्र जैसा देश इस प्रकार के अल्पसंख्यकों–धार्मिक व गैर–धार्मिक दोनों के साथ व्यवहार करता है? ■

एलेक्जेंड्रा पार्स से पत्र व्यवहार हेतु पता : <aparrs@aucegypt.edu>

# > फ्रांस में द्विराष्ट्रीय प्रेमी संदेह के घेरे में

**मैनुएला सलजेडो,** स्कूल ऑफ एडवांसड सोशल सांइस स्टडीज, पेरिस, फ्रांस एवं **लॉरा ओडासो,** फ्री यूनिवर्सिटी ऑफ ब्रसेल्स, बेल्जियम एवं आई.एस.ए. की 'बायोग्राफी एवं सोसाइटी' शोध समिति के सदस्य (RC 38)

*द्वि–राष्ट्रीय प्रेमियों का राज्य द्वारा उत्पीड़न का बोबिसी, पेरिस में विरोध।*
*चित्र :*

'यह पागलपन था। फ्रांस की सरकार मोरक्को के अधिकारियों और वाणिज्य दूतावास को अपशब्दों/दुर्व्यहार की उपेक्षा करने का आदेश देती है परंतु फ्रांस में हमारे जैसे प्रतिबद्ध युगल/दम्पती भी है जो फ्रांस में बिल्कुल भिन्न नीतियों का मूल्य चुका रहे है [....] फिर आपके पास अपमान है।'[1]

पिछले दशक में, द्विराष्ट्रीय युगल/दम्पतियों के एकजुट होने का अधिकार यूरोपीय संघ तथा तीसरे देश के राष्ट्र के नागरिकों के लिए पूर्णतः समाप्त कर दिया। नागरिक रूप में नहीं अपितु निवासियों के रूप में तीसरे देश के नागरिक को सीमित मात्रा में अधिकार प्राप्त हैं और उनकी स्थिति अत्यधिक अनिश्चित है। उदाहरण के लिए, फ्रांस में सरकार दोनों समलैंगिक व विषम लैंगिक द्विराष्ट्रीय युगलों के अंतरंग जीवन में हस्तक्षेप करने के लिए वैधानिक–प्रशासकीय साधनों और आक्रामक प्रथाओं का उपयोग करती है। इसके अतिरिक्त फ्रांसीसी अधिकारी अन्यों की तुलना में कुछ राष्टीयताओं और परिवार स्वरूपों को अधिक सुरक्षा देते दिखाई देते हैं।

युगलों/दम्पतियों के साथ साक्षात्कार, बहुपक्षीय नृवंशीय प्रविधि और द्विराष्ट्रीय परिवारों व अप्रवासियों के अधिकारों का संरक्षण करने वाले संगठनों –जैसे प्रेमियों पर सार्वजनिक प्रतिबंध और प्रवासियों व निवासियों के लिए समलैंगिक व विषमलैंगिक अधिकारों की पहचान करने वाले संगठनों में सहभागी अवलोकन के माध्यम से, एक बदलते राजनीतिक परिवेश में, हमने कानूनी सुधारों और प्रशासनिक गतिविधियों के प्रभारी अधिकारियों की अभिवृत्तियों, जो आज भी फ्रांस में द्विराष्ट्रीय युगलों को प्रभावित करती हैं, के बारे में पता लगाया।

फ्रांस में आप्रवासी नीतियॉ 'चयनित' प्रवसन/स्थानान्तरण (चयनित अप्रवास अर्थात् उच्च शिक्षित प्रवासी और जरूरतमंद श्रमिक) और 'बाध्यतामूलक' प्रवसन/स्थानान्तरण (अनुभवजनित अप्रवास अर्थात् अप्रवासियों व शरणर्थियों के परिवार) के मध्य अन्तर करता हैं। वे अप्रवासी जो अपने साथियों के साथ रहने या परिवार बनाने के लिए आते हैं उन्हें 'अधिरोपित' माना जाता है–इस तथ्य के बावजूद कि सैद्धांतिक रूप से, परिवार का प्रवसन संविधान और अंतराष्ट्रीय सम्मेलनो के द्वारा संरक्षित है। सार्वजनिक बहस में, परिवार का प्रवसन राष्ट्रीय पैतृकवाद और सीमाओं के निर्माण से सम्बद्ध होता है। वास्तव में, तीसरे–देश के नागरिकों के साथ व्यवहार उनकी मूल देश, धर्म, लिंग और यौगिक अभिमुखन पर निर्भर करता है। कुछ उत्तर–औपनिवेशिक देशों जैसे मोरक्को या अल्जीरिया के अप्रवासी अन्य देशों की तुलना में अधिक प्रतिबंधों का सामना करते हैं क्योंकि फ्रांस में उनकी उपस्थिति पहले से ही महत्वपूर्ण होने, एक कथित 'मुस्लिम आक्रमण' के भय और 'अरब' तथा 'मुस्लिम' के बीच मिश्रण का दंपत्तियों/युगलों के प्रतिदिन के जीवन पर प्रभाव पड़ता था।

यह भी एक विरोधाभास है कि विधायी क्रियान्वयन भी फ्रांसीसी नागरिकों, जो तीसरे देश के राष्ट्रों के नागरिकों से विवाह करते है, या सिविल यूनियन/नागरिक संघ बनाते हैं, को प्रभावित करता है। अतः दोषारोपण तीसरे देश के नागरिकों व उनके यूरोपीय भागीदारों दोनों को प्रभावित करता है, जो अपने ही समाज में 'अजनबी' बन जाते हैं। वे अपने लिए एक विदेशी साथी/जीवन साथी का चुनाव करने के कारण राष्ट्रीय अस्मिता को धमकी देने अथवा चुनौती देने के दोषी बन जाते हैं।

## > प्रतिबंधित/सीमित प्रवसन :

फ्रांस में कानून और उसके क्रियान्वयन के मध्य गहरे अंतर्विरोध है। 2003 से प्रतिबंधित परिवार प्रवसन को एक वैधानिक

> >

प्राथमिकता प्रदान कर दी गई है; तब से दिराष्ट्रीय दंपत्तियों के दैनिक जीवन पर पांच नियमित कानूनों का बोझ है। 2006 में दो कानून 'सरकोजी द्वितीय' तथा 'क्लीमेंट कानून' का लक्ष्य नकली विवाहों की पहचान करना था।

पिछले कुछ वर्षों में 'विवाह' प्रवसन के एक प्रमुख मुद्दे के रूप में उभरा है [....] महापौरों और कूटनीतिक कौसिंल संबधी एंजेट द्वारा नकली/जालसाजी से किये गये विवाहों को तोड़ने की संख्या में वृद्धि नहीं रूकी है (पी. क्लीमेंट, नेशनल असेंबली भाषण, 22.3.2006)।

सिविल रजिस्टर अधिकारी (नागरिक पंजीयन अधिकारी) को भावी पति–पत्नियों को एक साथ, या यदि आवश्यक हो तो अलग–अलग साक्षात्कार करने की आवश्यकता है। एक अधिकारी जिसे जालसाजी का संदेह होता है वह विवाह को अधिकृत मानने से इनकार कर सकता है और आपराधिक जॉच के आदेश दे सकता है। व्यवहारिक रूप से, 2004 के बाद से, किसी भी पति या पत्नी जिसके पास फ्रेंच निवास परमिट नहीं है जानकारी प्रदान करनी होगी। यहॉ तक कि विवाह के बाद भी, दंपत्तियों को अपने संम्बध/रिश्ते की स्थिरता को साबित करना होगा, तीसरे देश के नागरिकों के दंपत्तियों के आवास के परमिट को हर बार नवीनीकरण कराने के लिए, फ्रांसीसी दंपत्तियों को भी प्रांत के साथ जाना होगा, सामान्य पारिवारिक जीवन को प्रमाणित करने वाले बिल या सामान्य दस्तावेज प्रस्तुत करने होंगे।

2009 तक 'अप्रवास के प्रथम स्रोत' के रूप में द्विराष्ट्रीय विवाहों पर राजनीतिक बहस होती थी, जो कभी–कभी विवाह के एक नये स्वरूप के प्रति भय उत्पन्न करती थी, 'अप्रत्यक्ष सुविधा का विवाह' या 'ग्रे विवाह';उंतपंहम हतपेद्ध–जिसमें एक साथी ने एक विदेशी साथी से धोखा जो कि केवल फ्रांस में आवास चाहता था– के विपरित 'सुविधा हेतु विवाह' को सामान्यतः 'सफेद विवाह' (mariage blanc) कहा जाता है अर्थात् एक औपचारिक विवाह जिसमें फ्रेंच साथी अपने साथी के वास्तविक इरादों से पूर्णतः परिचित होता है, अधिकारियों को मूर्ख बनाने में मदद करता है। 2004 में फ्रांस में सम्पन्न 278,600 विवाह में से 5,272 सिविल रजिस्ट्रर अधिकारियों के द्वारा पुलिस को (1.9%) सौंपे गये, इनमें से 737 अवैध माने गये, जिनमें 444 'सुविधा हेतु विवाह', शामिल हैं।[2] अंत में, केवल चार व्यक्ति सुविधा हेतु विवाह के दोषी पाये गये।

नागरिकता प्राप्त करने के लिए, कानून चाहता हैं कि, तृतीय देश के नागरिक 'फ्रांसीसी समुदायों के साथ आत्मसातीकरण' को सिद्ध करे (भाषा परीक्षण, फ्रेंच नागरिक के अधिकार एवं कर्त्तव्य का ज्ञान इत्यादि)। मात्र विवाह करना ही किसी को फ्रांस की नागरिकता प्राप्त करने में मदद नहीं करता, 1984 से नागरिकता प्राप्त करने की योग्यता को अब विवाह के बाद 6 माह से बढ़ाकर 4 वर्ष तक कर दिया गया है।

## > द्विराष्ट्रीय विवाह का प्रबन्धन

प्रशासकों ने प्रवसन को नियंत्रित करने के लिए अधिक से अधिक स्वेच्छापूर्ण शक्ति[3] अर्जित की है। वीज़ा, आवास और वर्क परमिट (काम करने की अनुमति) उपलब्ध कराने वाले अधिकारियों को राष्ट्रीय सुरक्षा की रक्षा करनी चाहिए और वे हमेशा नियमों की व्यापक जानकारी रखने के बजाय प्रवसन के प्रति पक्षपातपूर्ण दृष्टिकोण रखते हैं। ये अधिकारी सस्तरणात्मक प्रशासनिक सीढी में निम्न पद पर होते हैं और वे अपना कार्य व अप्रवास सम्बन्धी पूछताछ कैसे करते हैं, पर उनकी शक्ति का प्रयोग निर्भर होता है।

अधिकारिक तौर देखा जाये तो यह उचित ही है कि प्रिफेक्ट यह तय करता है कि किस विदेशी नागरिक को वैंधानिक रूप से फ्रांस में रहने की अनुमति मिलनी चाहिए। परंतु व्यवहारिक तौर पर, अन्य सभी प्रवासियों की तरह, द्विराष्ट्रीय दंपत्ति इस बात का सामना करते हैं, जिसे एलेक्स स्पायर्स–'विदेशी विरोधी'–कहते हैं, अधिकारी प्रवासियों के साथ प्रतिदिन 'गंदा' व्यवहार करते हैं, उन्हें उच्च पदों से हटा दिया गया जिनका आदेश मानने की इनसे अपेक्षा की जाती है। 'गंदगी'/'नीचता' विदेशियों के साथ संपर्क में आने से आती है और इसे (विदेशी भाषाओं की) 'खुशबू व आवाज' द्वारा पकड़ा जा सकता है जो स्थानीय कार्यालयों के प्रतीक्षा कक्ष को भी प्रभावित करता है– बजाय उच्च अधिकारियों के कार्यालयों को साफ व शांत रखने के/अधिकारियों का व्यक्तिगत दृष्टिकोण और नीतियों के क्रियान्वयन की आवश्यकता दंपत्तियों के साथ उनके व्यवहार को नियंत्रित करता है। दंपत्ती नौकरशाहों के साथ अपनी प्रस्थिति को तय करते हैं जिनके पास निर्णय लेने की वास्तविक शक्ति नहीं होती, बल्कि वे उच्च अधिकारियों की सर्वोच्च सत्ता के अधीन होते हैं तो विदेशियों के साथ संपर्क में लगभग कभी नहीं होते।

## > नस्लवाद का सामना व विदेशी भीति (अज्ञातजन भीति/अपरिचितता का भय)–

द्विराष्ट्रीय परिवारों से सम्बद्ध अप्रवासी नीतियों ने बहुस्तरीय भेदभाव को उत्पन्न किया है जैसे तीसरे देश के नागरिक अनावश्यक अथवा अवांछित है, पुलिस व सरकारी कर्मचारियों के द्वारा तुच्छ समझे जाते हैं, अपने फ्रेंच पति/पत्नी और फ्रेंच अधिकारियों–जो विदेशियों के साथ काम करते हैं, दोनों को ही गाफमैन 'दीक्षित व्यक्ति' की संज्ञा देते हैं, अर्थात् ऐसे व्यक्ति जो दोषी व्यक्ति के साथ काम करते हैं और स्वयं पर भी कलंक/दोष लगने का जोखिम उठाते हैं। आयु, आर्थिक प्रस्थिति और उपस्थिति जैसे लक्षण दंपत्तियों के प्रतिबद्ध प्यार के प्रति संदेह को कम कर सकते हैं परंतु इससे विदेशियों के साथ सम्बद्ध कलंक/दोष और उनके साथ काम करने वालों के साथ जुड़ें कलंक दूर नहीं हो सकते।

द्विराष्ट्रीय दंपत्तियों का निजी जीवन सार्वजनिक बन जाता है जब ये व्यक्ति अपने संबंधों, भावनाओं, प्यार और समस्याओं के बारे में, अपनी स्थितियों के गतिरोध को हल करने और अपने विवाहों के दोषों की निंदा करने के बारे में खुलकर बोलते हैं। दिलचस्प बात यह हैं कि फ्रांस राज्य और द्विराष्ट्रीय दंपत्ती विवाह की जो परिभाषा प्रस्तुत करते हैं वह एक–दूसरे से ज्यादा अलग नहीं हैं। दोनों पक्षों के लिए प्रेम विवाह की अनिवार्य शर्त है। संस्थागत नस्लवाद या सरकारी अपरिचितता का भय, हालांकि, निजी और सार्वजनिक क्षेत्रों के बीच सीमाओं को कमजोर करते हैं और उनके पारिवारिक जीवन को भी प्रभावित करते हैं। ■

लारॉ ओडासो से पत्र व्यवहार हेतु पता :
<la.odasso@gmail.com>
एलेक्जेंड्रा पार्स से पत्र व्यवहार हेतु पता :
<manuesalcedo@gmail.com>

[1] **Notes from Laura Odasso's fieldwork journal, December 10, 2009.**

[2] **Belmokhtar, Z. (2006) "Les annulations de mariage en 2004."** *Infostat justice* **90: 1-4.**

[3] **Spire, A. (2008)** *Accueillir ou reconduire, enquête sur les guichets de l'immigration*. **Paris: Raisons d'agir.**

# > काली छाया से ग्रसित तुर्की

**आएलिन टोपाल,** मध्य पूर्वी तकनीकी विश्वविद्यालय, अंकारा, तुर्की

*गेजी प्रतिरोध अभी भी राष्ट्रपति एरडोगान को सता रहा है।*



पिछले दो सालों में, तुर्की के सामाजिक और राजनैतिक घटनाक्रमों ने देश के राजनैतिक शासन पर नई बहस छेड़ दी है। शासन की प्रकृति क्या है, जून 2013 में हुआ विद्रोह क्यूं क्यूं प्ररित था, और उसका परिणाम क्या हुआ।

तुर्की में नवउदारवाद 1980 के समय में हुआ: 24 जनवरी, 1980 में तुर्की के संरचनात्मक समायोजन कार्यक्रम के उदय और 12 सितम्बर को तुर्की के सैन्य तख्तापलट के समय। सेना दो अधिभावी उद्देश्यों के साथ सत्ता में आयी: प्रथम, राजनैतिक वाम और व्यापार संघों को काबू में करनो; और द्वितीय, तुर्की पूंजीपति वर्ग के साथ साथ पश्चिमी पूंजीपति देशों और ब्रेटन वुड्स संस्थाओं के समर्थन को बनाये रखते हुये आर्थिक पुर्नगठन की प्रक्रिया को जारी रखने के लिए। सैन्य शासन के बाद का युग बहुत कुछ नई दक्षिणपंथी राजनीति के साथ मेल खा रहा था।

बाईस साल बाद, 2002 में, जस्टिस एंड डवलपमेंट पार्टी (जे.डी. पी.) संसद में बहुमत जीत गयी –पंद्रह सालों में पहली बार किसी पार्टी ने अकेले शासन किया। बाजारों ने सामान्य रूप से सकारात्मक प्रतिक्रिया दी जैसा कि मैरिल लिंच के एक विश्लेषण ने इंगित किया, "एकदलीय शासन का आगमन तुर्की के आर्थिक संतुलन को मजबूत करेगा"। पार्टी ने निराश नहीं किया: पद लेने के कुछ महीनों के बाद, सरकार ने घोषित किया कि चल रहे आर्थिक संकट को समाप्त करने के लिये, वे आर्थिक गतिविधियों में राज्य की भागीदारी को कम करेंगें और राज्य के आर्थिक उद्यमों का निजिकरण करेंगें –जो जे.डी.पी.की मुख्य राजकोषीय रणनीति रही।

मई 2013 में, तत्कालीन प्रधानमंत्री तईप एरडोगन ने सरकार की ताकसिम स्कवायर, एक केन्द्रिय इस्तानबुल क्षेत्र जो कि दशकों से राजनैतिक विद्राहों का स्थान रहा है, की पुर्नविकास योजना को जाहिर किया। स्कवायर से संलग्न गेजी पार्क शहर के मध्य में बचे हुये हरित क्षेत्रों में से एक है। पुर्नविकास योजना में तास्किम स्कवायर में एक मस्जिद का और गेजी पार्क मे एक ऐतिहासिक सैन्य बैरक का पुर्ननिर्माण शामिल था – जिसमें अब एक शॉपिंग मॉल को सम्मिलित करने की उम्मीद थी। प्रधानमंत्री ने जनता को एक तीसरे हवाईअड्डे और बोसपोरस पर एक तीसरे पुल समेत सरकार की अन्य बड़ी परियोजनाओं की जानकारी भी दी।

जे.डी.पी.द्वारा पारित हर विधेयक की तरह ही इन सभी योजनाओं पर किसी नागरिक समाज संगठन के साथ और संसद में भी चर्चा नहीं की गयी। तुर्की इंजीनियरों और वास्तुकारों के मंडलों के संघ और शहर योजनाकारों ने तुरंत प्रतिक्रिया दी; पर्यावरण कार्यकर्ताओं के साथ मिलकर, दोनों संघों ने घोषणा की कि वे निर्माण वाहनों को पार्क में अंदर जाने से रोकेगें। 28 मई को, उन्होंने पहला टेंट खड़ा किया।

31 मई की भोर, पुलिस ने गैर–प्रतिरोधी प्रदर्शनकारियों पर हिंसात्मक आक्रमण किया, टेंटों को जला दिया और गैरविरोधी

> >

प्रदर्शनकारियों पर भी अत्यधिक बलप्रयोग करते हुये आंसू गैस और पानी की तोप का प्रयोग किया। पुलिस के बचाव में प्रधानमंत्री ने प्रदर्शनकारियों को "चरम समूह" और प्रंचनसबन (लुटेरे और दंगाई) कहते हुये अपराधी करार दिया।

उस शाम, विपक्षी समूहों ने इस्तानबुल प्रदर्शनकारियों के साथ एकजुटता का आवाहन किया और पुलिस की दमनकारी हिंसक कार्यवाही का विरोध करने के लिये हर तुर्की शहर के पार्कों में लाखों लोग ये बोलते हुये कि "हर जगह ताकसिम, हर जगह विरोध", "तानाशाही बंद करो!", "कूदो! कूदो! जो नहीं कूदे वो तईप हैं!'', एकत्रित हो गये।

यह प्रतिक्रिया आश्चर्यजनक नहीं थी, क्योंकि तनाव और असंतोष बढ़ रहा था। 18 दिसम्बर, 2012 को पुलिस ने शांतिपूर्ण प्रदर्शनकारी विद्यार्थियों पर बर्बरतापूर्वक आक्रमण कर दिया था जब एरडोगन एक सैन्य उपग्रह प्रक्षेपण को देखने मध्य पूर्वी तकनीकी विश्वविद्यालय (मेटू) में दौरे पर गये थे। अत्यधिक सेनाबल पर जांच की शुरूआत करने की बजाय, प्रधानमंत्री ने शिक्षकों पर ही हमला कर दिया, और कहा कि "ऐसे प्रोफेसरों पर शर्म है जिन्होंने ऐसे विद्यार्थियों को पढ़ाया है। अनुदेशकों को अपने विद्यार्थियों को पहले ये पढ़ाना चाहिये कि सम्मानीय कैसे बनते हैं"। बाद में मेटू में हुये विरोध प्रदर्शनों और देशभर के विभिन्न कैंपसों में हुये एकजुटता प्रदर्शनों को अंतर्राष्ट्रीय जांच शुरू करते हुये दबा दिया गया। अप्रेल, 2013 में इमेक थियेटर को मनोरंजन और खरीदारी स्थल बनाने के लिये ध्वस्त कर दिया गया, जिसने व्यापक विरोध को जन्म दिया; और दोबारा, शांतिपूर्ण प्रदर्शनों को पानी तोप और काली मिर्च गैस से तितर–बितर कर दिया गया। देर मई 2013 में शराब की बिक्री को प्रतिबंधित करने वाले एक नये कानून के साथ सरकार की छुपी हुई सत्तावादी और रूढ़िवादी विचारधारा और अधिक प्रखर हो गयी। यह ऐसा कानून था जिसे तईप एरडोगन ने युवाओं की रक्षा और धार्मिक कानूनों को लागू करने के लिये स्पष्ट रूप से उल्लेख किया। उसी समय पर, एक सबवे स्टेशन की घोषणा में एक चुंबन करते हुये युवा जोड़े की निंदा की गयी; उसके विरोध में उसी स्टेशन में चुंबन करने के लिये सैंकडों साथ आ गये।

गेजी पार्क के साथ एकजुटता के लिये बढ़ते प्रदर्शनों के जवाब में एरडोगन ने दावा किया कि उसने "50 प्रतिशत को मुश्किल से रोके हुआ है" जिन्होंने उसको चुना है। उसने कहा "सड़कों पर हजारों प्रदर्शनकारी हो सकते है परंतु मैं लाखों को ला सकता हूं" सड़कों पर। गेजी प्रदर्शनों की विरोधी जनसभाओं तक बसों में उसके समर्थकों को लाया गया; भीड़ बोली, "चलो ताकसिम को कुचलें" "अल्पसंख्यकों, हमारे सब्र की परीक्षा मत लो"।

गेजी प्रतिरोध ने राज्य की वैद्यता में दरार पैदा करते हुये राजनैतिक सत्ता की प्रकृति पर प्रश्नचिन्ह लगाया और जे.डी.पी. सरकार को कमजोर किया। विडंबना यह है कि इस विरोध ने प्रच्छन्न रूढ़िवादी अधिनायकवाद से प्रखर प्रतिक्रियावादी निरंकुशता में सत्ता परिवर्तन की उत्प्रेरणा दी। जुलाई 2013 से, शिकायतों को संबोधित करने की बजाय, जे.डी.पी.ने विरोधियों के प्रयासों को सरकार को कमजोर करने के लिये "नागरिक तख्तापलट के प्रयास" बताकर अपराधी करार दे दिया।

इसके तत्काल बाद प्रधानमंत्री, उनके परिवार और उनके मंत्रीमंडल के सदस्यों के खिलाफ बड़े पैमाने पर भ्रष्टाचार के आरोपों के बाद, एरडोगन ने गुलेन ब्रदरहुड के खिलाफ जंग छेड़ दी ख्जो कि राज्य के अंदर एक "समानांतर संरचना" कही जाती थी,। कथित तौर पर 17 दिसम्बर को बनाई गयी एक ऑडियो रिकार्डिंग (वह दिन जब तीन मंत्रियों के बेटे भ्रष्टाचार और घूंस के आरोपों में गिरफ्तार हुये थे) –इंटरनेट पर पोस्ट हुई, जिसमें एक व्यक्ति कथित रूप से एरडोगन अपने बेटे को बड़ी मात्रा में नकदी निपटाने का आदेश देता है। इसके बाद एरडोगन ने दावा किया कि आगामी चुनावों के पहले सरकार को कमजोर करने के लिये "लॉबीयों" और "अंधेरी शक्तियों" द्वारा मिलकर "तख्तापलट का प्रयास" किया गया है, और रिक्तिपूर्व उपायों की मांग की। उसके तुरंत बाद, जे.डी.पी.के वर्चस्व वाली संसद ने खुफिया सेवाकर्मी प्रतिरक्षा, और प्रेस, अभिव्यक्ति और सूचना की स्वतंत्रता को रोकने के लिये नये कानून पारित कर दिये। फिर भी, 9 अगस्त को एरडोगन 73.4 प्रतिशत कुल उपस्थिति वाले चुनावों में 51.8 प्रतिशत वोटों के साथ राष्ट्रपति चुने गये । प्रचार के दौरान तईप एरडोगन नें बार बार कहा कि उनके अनुष्ठानिक पूर्ववर्तियों के विपरीत वो एक "सक्रिय कार्यकारी राष्ट्रपति" रहेंगें। वे कैबिनेट बैठकों की अध्यक्षता और विश्वविद्यालयों के अधिशिक्षकों और शीर्ष न्यायिक निकायों के कुछ सदस्यों की नियुक्ति कर स्वयं में प्रदत सभी शक्तियों –का पूर्ण उपयोग करने के लिये संकल्पित प्रतीत होता है। विधिवत संसदीय प्रणाली के साथ वास्तविक राष्ट्रपतिवाद का मतलब होगा कि बिना जवाबदेही के शासन करना– प्रत्यक्ष निरंकुशता की एक बहुत बढ़िया रेसिपी।

इस शासन परिवर्तन के सम्मुख, जे.डी.पी.सरकार के नियंत्रण में तुर्की राज्य एक गहरे वैद्यता के संकट से ग्रसित है। एक काली छाया राष्ट्रपति और उनकी सरकार को सता रही है, गेजी प्रतिरोध की काली छाया... ■

आएलिन टोपाल से पत्र व्यवहार हेतु पता : <taylin@metu.edu.tr>

[1] The author will provide sources upon request.

# > कजाकिस्तान में जनमत में जोड़–तोड़

**एल्मास ताइझानोव,** कजाकिस्तान की समाजशास्त्रीयों की संस्था, अंतराष्ट्रीय समाजशास्त्रीय परिषद् के नियमित सामूहिक सदस्य

*सर्गोई मोन्को, कजाकिस्तान के यूक्रेनी निवासी की कजाकिस्तानी पत्नी। वह ´युद्ध को नां´´ की उद्घोषणा कर रही है तथा यूक्रेन के झंडे के रंगों में आँसुओं को भर रही है।*

कजाकिस्तान और यूक्रेन दोनों की सीमा रूस से लगती है और दोनों ही पूर्व सोवियत गणराज्य का दर्जा साझा करते हैं। परंतु दोनों एक और महत्वपूर्ण और दुखदः समानता साझा करते हैंः दोनों को 1932–33 में सोवियत "सामूहीकरण" की वजह सें पड़े अकाल के दौरान पर्याप्त जनसांख्यिकीय नुकसान उठाना पड़ा था। 1934 तक अकाल के दौरान भुखमरी से हुई मौत और उत्प्रवास के कारण 18,40,000 कजाकिस्तानियों तक को खोना पडा था, जो 1930 में कजाकिस्तान की जनसंख्या का लगभग 47.3 प्रतिशत था। लगभग आधी स्थानीय आबादी के नुकसान की "भरपाई" द्वितीय विश्व युद्ध के पहले और बाद में रूसी संघ से उठी कई प्रवासी लहरों से हुआ। कजाकिस्तान के लिये, इसने देश की जनसांख्यिकी को नया आकार दियाः 1959 की सोवियत संघ की जनगणना के अनुसार, कजाकिस्तान सोवियत समाजवादी संघ की जनसंख्या में केवल 30 प्रतिशत ही कजाकिस्तानी थे, जो कि 1926 के 58.6 प्रतिशत से कम थे।

उसी समय यूक्रेन में अकाल ने 30 लाख यूक्रेनीयों की जान ले ली– यह आंकडा आनुपातिक रूप से कजाकिस्तानी नुकसान से कम है, क्योंकि यूक्रेनी जनसंख्या 1926 की सोवियत संघ की जनगणना के समय 2 करोड़ 30 लाख हो गयी थी। इसके आगे, यूक्रेन में, सरकार ने अनाज जब्त कर लिया, जबकि अधिकतर खानाबदोश कजाकिस्तानीयों ने अपने निजी पशुधन गवां दिये, जो कि उनके पोषण का मुख्य स्त्रोत थे। यूक्रेनीयों के पास अकाल में जीवित रहने के अधिक मौके थे।

सोवियत संघ से कजाकिस्तान और यूक्रेन में हुये पलायन के फलस्वरूप, दोनों गणराज्यों की आबादी का एक अहम हिस्सा रूसी लोगों का था। यह रूस की सीमा से लगते हुये कजाकिस्तान के उत्तरी क्षेत्रों और रूस के पास यूक्रेनी क्षेत्र (डोनेट्स्क और लुगांस्क) की प्रमुख विशेषता रही है और है– साफ तौर पर जहां हम आज चल रहे संघर्ष देखते हैं।

कजाकिस्तान के अलगाववादी आंदोलन के जोखिम पर कोई समाजशास्त्रीय अनुसंधान खुले तौर पर उपलब्ध नहीं है, मुख्यतः देश के उत्तरी और पूर्वी क्षेत्रों में, जहां एक बड़ी रूसी जनसंख्या रहती है। फिर भी, कम से कम एक प्रमुख अलगाववादी घटना हुईः नवम्बर 1999 में, उस्ट–कमांगरोस्क शहर (रूस की सीमा से लगते हुये पूर्वी कजाकिस्तान क्षेत्र में) में एक अलगाववादी सशस्त्र विद्रोह हो गया । 22 रूसी लोगों के समूह के द्वारा आयोजित– जिनमें से ग्यारह (नेता सहित) रूसी संघ के नागरिक थे –विद्रोह को कजाकिस्तान राष्ट्रीय सुरक्षा समिति द्वारा रोक दिया गया;

> >

सभी अलगाववादी को छः से आठ साल की कजाकिस्तान में जेल की सजा मिली, और सभी रिहा होने के बाद रूस लौट गये।

इस इतिहास के बावजूद, कजाकिस्तान की जनता अलगाववाद पर अधिक चिंता नहीं दर्शाती है। इसके अलावा, कजाकिस्तान में आधारित सामाजिक और राजनैतिक शोध केन्द्र, रणनीति, के सर्वेक्षण के अनुसार यूक्रेनी संघर्षों के शुरू होने के बाद, कजाकिस्तान की 61 प्रतिशत जनसंख्या ने क्रिमीया के रूसी संघ में विलय का समर्थन किया, 23 प्रतिशत तटस्थ थे या उत्तर नहीं दे पाये, और सिर्फ 6 प्रतिशत विलय को यूक्रेन की क्षेत्रीय अखंडता का एक अवैद्य उल्लंघन मानते थे। सर्वेक्षण मीडिया पर किसका नियंत्रण था (कजाकिस्तान, रूस या पश्चिमी मीडिया) और संघर्षों के लिये प्रतिवेदित अभिवृत्ति के बीच साफ सह–संबंध दिखाता है।

कजाकिस्तान के संचार और सूचना मंत्रालय की 2011–2015 की रणनीतिक विकास योजना के अनुसार, 2740 कजाकिस्तान–आधारित मास मीडिया संगठन (प्रिंट मीडिया, टेलीविजन और प्रसारण कंपनियां, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, आदि) हैं। उनमें से 20 प्रतिशत कजाख भाषा में कार्य करते हैं, और 34 प्रतिशत रूसी में। बाकी कजाकिस्तान के मास मीडिया के लिये माना जाता है कि वो दोनों भाषाओं का इस्तेमाल करता है, परंतु वास्तव में, अधिकतर रूसी भाषा की ओर उन्मुख होते हैं। रूसी भाषा की तुलना में इंटरनेट पर कजाख भाषा की उपस्थिति बहुत कम है, इसलिये हम कह सकते हैं कि इंटरनेट ज्यादातर रूसी है। इसके अलावा, रूसी टीवी–चैनल स्वतंत्र रूप से प्रसारण कर सकते हैं, और रूसी समाचार पत्र और पत्रिकाऐं कजाकिस्तान में व्यापक स्तर पर उपलब्ध हैं।

ऊपर उल्लेखित सर्वेक्षण के अनुसार, उत्तरदाताओं के सूचना के सबसे महत्व पूर्ण स्त्रोत थेः कजाकिस्तान–आधारित मास मीडिया (50 प्रतिशत), और रूस–आधारित मास मीडिया (31 प्रतिशत)। अन्य स्त्रोंतों में इंटरनेट साइट और सामाजिक नेटवर्क जैसे फेसबुक (9 प्रतिशत), और दोस्तों, सहकर्मीयों और रिश्तेदारों से बातचीत (7 प्रतिशत) शामिल हैं। पश्चिमी मास मीडिया इंटरनेट सर्वेक्षण के केवल 1 प्रतिशत उत्तरदाताओं के लिये सूचना का एक स्त्रोत था।

सूचना का स्त्रोत कैसे किसी की राय को प्रभावित करता है? कजाकिस्तान–आधारित मास मीडिया से जानकारी प्राप्त करने वाले उत्तरदाताओं मे से 54 प्रतिशत रूसी संघ के कार्यों से सहमत थे, 20 प्रतिशत सहमत नहीं थे और 31 प्रतिशत अनिश्चित थे। फिर भी, रूस–आधारित मास मीडिया पर विश्वास करने वाले उत्तरदाताओं में रूसी संघ के कार्यों से सहमत होने वाले उत्तरदाता 84 प्रतिशत पर पहुंच गये, केवल 4 प्रतिशत असहमत होने वालों के साथ। पश्चिमी मास मीडिया से सूचना प्राप्त करने वाले उत्तरदाताओं में 31 प्रतिशत ने रूस का समर्थन किया, 31 प्रतिशत ने समर्थन नहीं किया और 31 प्रतिशत अनिश्चित थे। यह उन लोगों के लिये एक आश्चर्यजनक तस्वीर है, जो उम्मीद करते हैं कि पश्चिमी मास मीडिया पढ़ने और देखने वालों की रूसी कार्यों से असहमत होने की संभावना अधिक है। जिनकी सूचना का मुख्य स्त्रोत इंटरनेट है, उनमें से 48 प्रतिशत ने रूस का समर्थन किया, 35 प्रतिशत अनिश्चित थे और 17 प्रतिशत सहमत नहीं थे। जैसा कि ऊपर उल्लेख किया गया है कि कजाकिस्तान के लिये इंटरनेट मुख्यतः "रूसी" था, अतः ये परिणाम आश्चर्यजनक नहीं है।

वर्तमान यूक्रेनी–रूसी संघर्ष के दौरान, प्रचार उस स्तर तक पहुंच गया है जो कि सोवियत युग से अब तक नहीं देखा गया है। टेलीविजन और प्रिंट मीडिया पर पूर्ण नियंत्रण ने प्रचार की मात्रा बढ़ाना आसान कर दिया है। रूस और यूक्रेन से प्रचार का चरम स्तर कजाकिस्तान की जनसंख्या और सरकार को प्रभावित कर रहें हैं। इसी समय, आज कजाकिस्तान मास मीडिया (यानि सरकार) में प्रचार के कोई संकेत नहीं दिखाई दे रहे है। परिणाम यह है कि कजाकिस्तानी जनमत में रूसी मास मीडिया और सरकार के दृष्टिकोण का वर्चस्व है। इसके अलावा, इसने एक ओर तथाकथित "राष्ट्रीय–देशभक्त", "उदारवादी" और "पाश्चात्य" और दूसरी ओर "रूसी–समर्थकों" के साथ कजाकिस्तानी जनसंख्या में तीव्र सैद्धांतिक विभाजन पैदा कर दिया है। स्वतंत्र समाजशास्त्रीय अनुसंधान के अभाव में गहन विश्लेषण रुक गया है। जनमत में स्वार्थी हेरफेर का मुकाबला करने के लिये गंभीर शोध का अभाव कजाकिस्तान के भविष्य में स्थिरता के लिये एक खतरा हो सकता है। ■

एल्मास ताइझानोव से पत्र व्यवहार हेतु पता :
<almas.diamond@gmail.com>

# > पृथ्वी ग्रह का भविष्य

**एम्मा पोरियो,** एटेनियो दे मनीला विश्वविद्यालय, फिलीपिंस, आई.एस.ए. कार्यकारी समिति के पूर्व सदस्य, 2006-2014, और अंतर्राष्ट्रीय विज्ञान परिषद (आई.सी.एस.यू.) में आई.एस.ए. के वर्तमान प्रतिनिधि

अंतर्राष्ट्रीय विज्ञान परिषद (आई. सी. एस. यू.) के सदस्य ऑकलैंड कन्वेंशन सेंटर में त्रि–वर्षीय आम सभा के लिये मिले और इसमें उन्होने आने वाले वर्षों में अंतर्राष्ट्रीय विज्ञान के प्रमुख दिशाओं पर निर्णय लिये। 31वीं आम सभा का विषय "ग्लोबल चेंज रिसर्च के 30 साल का उत्सव" था। इसने वैज्ञानिक अभिलेख के खुले उपयोग पर एक महत्वपूर्ण व्यक्तव्य को अपनाया और अनुसंधान के मूल्यांकन के मेट्रिक्स के दुरूपयोग के खिलाफ चेताया।

1931 में स्थापित, आई.सी.एस.यू. राष्ट्रीय वैज्ञानिक निकायों (140 देशों की प्रतिनिधित्व करते हुये 120 सदस्य) और अंतर्राष्ट्रीय विज्ञान यूनियन (31 सदस्य) की वैश्विक सदस्यता के साथ एक गैर–सरकारी संगठन है। परिषद् की गतिविधियां तीन क्षेत्रों में केन्द्रित हैं: अंतर्राष्ट्रीय अनुसंधान की योजना और समन्वय करना; नीति के लिये विज्ञान; और विज्ञान की सार्वभौमिकता को मजबूत करना। आई.सी.एस.यू. को अक्सर वैश्विक वैज्ञानिक समुदाय की ओर से बोलने के लिये कहा जाता है। यह सरकारों और संयुक्त राष्ट्र एजेंसियों के पर्यावरण से लेकर विज्ञान के आचरण तक के मामलों में एक सलाहकार के रूप में कार्य करता है।

न्यूजीलैंड के प्रधानमंत्री, जॉन की ने देश की विशिष्ट पर्यावरण की चुनौतियों और इसके अंतर्राष्ट्रीय अनुसंधान में दिये योगदान पर जोर देते हुये बैठक की शुरूआत की। पीटर ग्लकमैन, सरकार के मुख्य विज्ञान सलाहकार और न्यूजीलैंड की रॉयल सोसायटी के पूर्व अध्यक्ष, ने मुख्य भाषण दिया: "विज्ञान का बदलती प्रकृति; क्या वैज्ञानिक चुनौतियों का सामना कर सकते हैं?" उन्होंने श्रोतागणों को चेताया कि विज्ञान व्यवस्थाऐं तेजी से बदल रहीं हैं और अगर हम इन बदलावों का सही से प्रबंधन नहीं करेंगें, तो ये जनता के विश्वास को खोने में योगदान कर सकते हैं!

पांच दिनों के लिये– 31 अगस्त से 4 सितम्बर, 2014 तक– आई. सी. एस. यू. ने पिछले तीन दशकों के दौरान उसके मुख्य कार्यक्रमों की समीक्षा की, जैसे:

- जलवायु परिवर्तन पर अंतर–शासकीय पैनल
- अंतर्राष्ट्रीय भूमंडल–जैवमंडल कार्यक्रम
- विश्व जलवायु अनुसंधान कार्यक्रम
- विविधताऐं (जैव–विविधता विज्ञान)
- अंतर्राष्ट्रीय मानव आयाम कार्यक्रम
- पृथ्वी विज्ञान कार्यक्रम

इन्होंने आई.सी.एस.यू. के अगले दशक के निश्चित कार्यक्रम "भविष्य की पृथ्वी: वैश्विक संवहनीयता के लिये अनुसंधान" के लिये बुनियादी कार्यक्रमों का कार्य किया।

आई. सी. एस. यू. वैज्ञानिकों की नई पीढ़ी के निर्माण के अपने प्रयासों में दो अकादमियों के साथ साझेदारी कर रही है [जैसे, वैश्विक युवा अकादमी (जी.वाई.ए.) और वैज्ञानिकों की विश्व अकादमी (टी.डबल्यू.ए.एस.)]। 1990 में शुरू किये और जर्मन विज्ञान अकादमी की सहायता से बर्लिन में स्थापित, जी. वाई. ए. के पास विश्वभर के 90 युवा वैज्ञानिकों की सदस्यता है और ये अपने अनुसंधानों के निष्कर्षों को साझा करने के लिये नियमित रूप से कार्यशालाओं और सम्मेलनों का आयोजन करती है। टी. डबल्यू. ए. एस. एक वैश्विक विज्ञान अकादमी है और 50 विकासशील अर्थव्यवस्थाओं के वैज्ञानिकों का एक नेटवर्क जोडती है। ट्राइस्टे, इटली मे स्थापित, टी. डबल्यू. ए. एस. का उद्देश्य है "अनुसंधान, शिक्षा, नीति और कूटनीति के माध्यम से विकासशील दुनिया में नवाचार और संवहनीय समृद्धि" का विकास करना।

2010 में, आई. सी. एस. यू. ने अपने वैज्ञानिक प्रयास में समाज विज्ञानों को जोड़ने के लिये आई. एस. ए. को योगदान देने के लिये आमंत्रित किया। लेकिन इस क्षेत्र में बहुत कुछ किया जाना शेष है। वर्तमान में, आई. एस. ए. पुनः सोच रही है कि एक ऐसे संस्थान में भागीदारी रखना सार्थक है या नहीं जो दिल से सिर्फ शुद्ध "कट्टर" विज्ञानों से जुडी है। 2010–2014 से, एलिस एब्रु, आई. एस.ए. कार्यकारी समिति की पूर्व सदस्य (2006–2010) और लैटिन अमेरिका के आई. सी. एस. यू. क्षेत्रीय निदेशक, आई. सी. एस. यू. में आई. एस. ए. के प्रतिनिधि थे। इस बीच, स्टुवर्ट लोकी (आई. एस. ए. की पर्यावरण पर आर. सी. 23 के पूर्व अध्यक्ष) आई. सी. एस. यू. की नीतिगत योजना और अनुसंधान पर समिति (2013–2014) के सदस्य बन गये। ■

एम्मा पोरियो से पत्र व्यवहार हेतु पता :
<eporio@ateneo.edu>

# > वैश्विक संवाद का रोमानियन दल

**मुनीर सैयदानी,** अल मनार विश्वविद्यालय, ट्यूनीशिया

हम वैश्विक संवाद से नवम्बर 2012 में ळव 3ण्1 अंक से जुडे हुऐ है। तब से हमारा दल प्रत्येक अंक के साथ बदलता रहा है, लेकिन यह एक सकारात्मक विशेषता है, क्यों कि हम सभी ने एक दूसरे से वैश्विक संवाद के रोमानियन संस्करण के अनुवाद तथा सम्पादन की प्रक्रिया के दौरान सीखा है। हम सभी समाजशास्त्री हैं, बहुमत अभी भी पीएच.डी. विद्यार्थियों का ही है, हम उत्साही है तथा साथ ही समाजशास्त्र में अपने भविष्य के प्रति भावुक भी। वैश्विक संवाद के विविध विषयों ने हमें, ळव के रोमानियन दल को – साथ ही हमाने प्रोफेसरों एवं साथीयों को – वैश्विक समाज की खोज के अवसर प्रदान किये हैं।

हमारे दल में छः स्थाई सदस्य हैं जिनका परिचय उन सदस्यों के साथ जिन्होंने कम से कम विगत पाँच अंको में काम किया है नीचे दिया गया है । इन स्थाई सदस्यों के अलावा ग्यारह अन्य साथी ने भी कम से कम एक अंक में हमाने दल के साथ जुडे है : रोमाना कान्टाराग्यू, क्रिस्टीन कोन्स्टेनटिन वेरे, एन्जीलिसा हेलेना मैरिन्सक्यू, मोनिका नाड्रेग, इयोना कार्टास्क्यू, मेडेलिन रापन, एन्ड्रीया ऐक्सेन्ड्रे, डेनियाला गाबा, ऐलेक्जेन्ड्रू डू, गैबरीला इयान, लेवेन्टे स्जेकेडी। ■

**डॉ. कोसिमा रुग्हिनी,** प्रोफेसर समाजशास्त्र विभाग, बुखारेस्ट विश्वविद्यालय, तथा कोम्पासो – समाजशास्त्र तथा मानवशास्त्र की एक तुलनात्मक शोध पत्रिका की प्रधान सम्पादक हैं। वे शोध पद्धितिशास्त्र के विषय को पढाती हैं। उनकी हाल ही में हुई शोध प्रमात्रीकरण, मानव विज्ञान में वाक्पटुता की जांच पडताल, तथा वैज्ञानिक संचार मे गंभीर खेलों और डिजिटल मीडिया की भूमिका पर हैं।

संपर्क विवरण :
cosima.rughinis@sas.unibuc.ro

**ईलेना सिन्जिआना सुर्दु,** बुखारेस्ट विश्वविद्यालय के समाजशास्त्र विभाग में पीएच. डी की विद्यार्थी हैं। उन्हें अध्यापन सहायक के तौर पर शोध पद्धतिशास्त्र और विपणन में अध्यापन का अनुभव है तथा वे सामाजिक एकीकरण एवं समाजिक विकास पर परियोजनाओं में कार्य करती हैं। समय का समाजशास्त्र, कार्य–जीवन संतुलन, परिवार एवं परंपराऐं, शब्दहीन संचार जैसे विषय उनकी शोध अभिरुचियों में शामिल हैं।

संपर्क विवरण :
ileana.cinziana.surdu@gmail.com

**एड्रियाना बोन्डर** बुखारेस्ट विश्वविद्यालय के समाजशास्त्र विभाग में पीएच. डी की विद्यार्थी हैं। वह इतिहास तथा समाजशास्त्र में रुचि रखती है, तथा उनका शोध रोमानियन समाजशास्त्र के इतिहास पर है। व्यवसायिक गतिविधियों में उन्होने विभिन्न क्षेत्रों में अध्ययन किया है : सामाजिक इतिहास, रोमानियन समाजशास्त्र के इतिहास, सांस्कृतिक एवं स्मृति अध्ययन तथा साथ ही रोमानिया एवं यूरोप में साम्यवाद। भविष्य में वह संस्कृति के समाजशास्त्र पर काम करना चाहती हैं।

संपर्क विवरण :
adrianabondor@yahoo.com

**एलीना कोस्टीआना स्टान** अपनी पीएच. डी. संयुक्त रुप से बुखारेस्ट विश्वविद्यालय एवं लिलि 2 विश्वविद्यालय फ्राँस से कर रही है। उनका शोध कार्य कार्यस्थल पर हिंसा के मामलों तथा कार्य की गुणवत्ता के सम्बन्धों पर अन्वेषण करता है। निम्न विषयों में वह विशेष रुप से रुचि रखती है : सामाजिक प्रक्रियाओं पर वैधानिस संस्थाओं का प्रभाव, कार्यस्थल पर पक्षपात, जैण्डर तथा लोक प्रशासन का समाजशास्त्र।

संपर्क विवरण :
costiana_stan@yahoo.com

**एलीना टूडोर** बुखारेस्ट विश्वविद्यालय के समाजशास्त्र विभाग में पीएच. डी की विद्यार्थी हैं एवं बुखारेस्ट विश्वविद्यालय एवं रिसर्च इन्सटीट्यूट फार क्वालिटी आफ लाइफ (रोमानियन अकादमी) में शोध सहायक है तथा उनकी रुचि अन्तर्राष्ट्रीय प्रवासन तथा नीतियों में है। उन्होने यूरोपियन कमीशन तथा स्थानीय एनजीओ के लिए महत्व पूर्ण समूह की प्रवासन तथा नीतियों से सम्बन्धित परियोजना पर कार्य में भाग लिया था।

संपर्क विवरण :
elenatudor7@yahoo.com

**मरियम सिहोडारयू** बुखारेस्ट विश्वविद्यालय के समाजशास्त्र विभाग में पीएच. डी की विद्यार्थी हैं वह मेन्ज स्थित जोहान्स गोथेन्बर्ग विश्वविद्यालय से मानवशास्त्र में पीएच. डी की पूर्व उम्मीदवार थी। उन्हे अध्ययापन सहायक एवं विभिन्न समूहों के साथ शोधार्थी का अनुभव है। मानसिक नक्शे के वृतांत उनके पसंदीदा शोध उपकरण हैं तथा वह इसकी प्रणेता कहलाना पसंद करती है। उनका शोध प्रबन्ध उत्सवों तथा पुर्नःअधिनियमित समुदायों के तीन सालों के वृतांत शोध पर आधारित है। उसकी शैक्षणिक पृष्टभूमी के बारे में अधिक जानकारी के लिए देखें:
http://miriamcihodariu.com/index.html

संपर्क विवरण :
miriam.cihodariu@gmail.com

> >

**मिहाई–भोगदान मरियन** बुखारेस्ट विश्वविद्यालय (न्ठ) से कानून की उपाधि ले चुका है, राष्ट्रीय सुरक्षा एवं अन्तर्राष्ट्रय पर्यावरण सुरक्षा पर दो मास्टर्स उपाधियां ले चुका है तथा वर्तमान में न्ठ के डॉक्टरल स्कूल से पीएच. डी का उम्मीदवार है। वह आधुनिक समाजों में होनें वाले सामाजिक–राजनैतिक परिवर्तनों में रुचि रखता है तथा इसी विषय पर वह अपना शैक्षिक कार्य जारी रखना चाहता है।

संपर्क विवरण :
mihaimarb@yahoo.com

**लुसियन रोटेरियन** बुखारेस्ट विश्वविद्यालय के समाजशास्त्र एवं समाज कार्य विभाग में पीएच. डी का विद्यार्थी हैं। पिछले तीन वर्षों में उसने विचलन के समाजशास्त्र एवं कानून के समाजशास्त्र पर सेमीनारे आयोजित की हैं।

संपर्क विवरण :
stefan.rotariu@sas.unibuc.ro

**मोनिका ऐलेक्जेन्डू** एक समाजशास्त्री हैं जो कि वर्तमान में यथार्थ शोध तथा परामर्श पर बुखारेस्ट में कार्यरत है। उसने अपनी पीएच.डी. अन्तर्राष्ट्रीय प्रवसन, सामाजिक गतिशीलता एवं स्थिती विसंगति पर 2012 में की है। हाल के वर्षों में मोनिका ने अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों से प्रवासन अन्वेषण तथा मानव तस्करी पर शोध के लिए व्यापक सहयोग किया है।

संपर्क विवरण :
alexandru_monica@yahoo.com

ब्लाज टेलीग्डी वर्तमान में स्अेपेनिया हंगेरियन विश्वविद्यालय में एक सहायक प्रोफेसर के रुप में कार्य कर रहे हैं। उन्होनें अपनी बाबेस–बोलियाई विश्वविद्याालय से समाजशास्त्र में एम.ए. किया जहां उन्होंने रोमानिया में सामाजिक समस्याओं की क्षेत्रीय असमानता का अध्ययन किया। वह अभी बुखारेस्ट विश्वविद्यालय में रोमानियन समाजशास्त्र के इतिहास पर अपनी पीएच. डी. लिख रहे हैं। उनकी अन्य अभिरुचियों मे संक्रमण का समाजशास्त्र, संस्थागत विश्वास एवं सामाजिक तन्त्रजाल का विश्लेषण शमिल है।

संपर्क विवरण :
telegdyb@yahoo.com

**केटेलीना पेट्रे** समाजशास्त्र डॉक्टरल स्कूल से एक आवेशपूर्ण पीएच. डी विद्यार्थी हैं तथा साथ ही बुखारेस्ट विश्वविद्यालय की एकोल डॉक्टरेल एन साइन्स सोसाईले से भी। उन्हे युर्निवरसाईट लिब्रे ड ब्रुक्सैल्स, बैल्जियम से 4 माह के लिए शोध वजीफा मिला है जहां वो प्रतिदिन के समाजशास्त्र के अध्ययन के लिए जा रही है। उनकी रुचियां ऐसे विषयों में है जैसे कि: शरीर का समाजशास्त्र, शब्दहीन संचार, संगठनात्मक समाजशास्त्र तथा मानव संसाधन प्रबन्धन भी। उनकी पीएच.डी. का शीर्षक है ''रोमानियन समाज द्वारा प्रोन्नत सौन्दर्य प्रतिमानों के प्रति युवा महिलाओं का अभिमत''।

संपर्क विवरण :
guliecatalina@yahoo.com

**ओना मार स्यन** (जन्म 1984) बुखारेस्ट विश्वविद्यालय से स्नातक हैं, मनोविज्ञान एवं समाजशास्त्र में बी.ए., मानव संसाधन प्रबन्धन में एम.ए. तथा समाजशास्त्र में पीएच. डी हैं। पिछले 8 वर्षों से वह मीडिया के बहुराष्ट्रीय उद्यमों के लिए मानव संसाधन विशेषज्ञ हैं। उसकी रुचि तथा विशेषज्ञता के क्षेत्र हैं: तुलनात्मक सामाजिक शोध की प्रयोगशाला, कार्य–जीवन संतुलन, उपनगरीय विकास, जीविका मार्गदर्शन। वर्तमान में वह एक अन्तर्राष्ट्रीय शोध दल क्रेनेट के साथ मानव संसाधन के मानदण्डो तथा श्रम सम्बन्धों पर सहायता कर रही है।

संपर्क विवरण :
oanamara2000@yahoo.ca